खंड 2
ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

प्रस्तावना

इस खंड में चार इकाइयाँ हैं (इकाइयाँ 3 से 6) जो अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण प्रदान करती हैं। प्रथम विश्व युद्ध (1914-18), 1917 की बोल्शेविक क्रांति, 1930 के दशक में फासीवाद और नाज़ीवाद का उदय और द्वितीय विश्वयुद्ध (1939-45) निर्विवाद रूप से 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध की चार निर्णायक घटनाएँ थीं, इन घटनाओं ने विश्व व्यवस्था को बहुत प्रभावित किया। प्रथम विश्व युद्ध पर इकाई 3 के माध्यम से आप पाएँगे कि संघर्ष 19वीं शताब्दी के बाद से अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के काम करने के तरीके में निहित था। आक्रामकता, सैन्य, गठनबंधन, शक्ति संतुलन, गुप्त संधि, क्षेत्रीय महत्त्वकांक्षाएँ और आर्थिक कौर भू-राजनीतिक प्रभाव वाले क्षेत्रों का निर्माण अंतर्राष्ट्रीय संबंध में प्रमुख मानदण्ड थे। परिणाम अक्सर युद्ध था, शांति केवल दो युद्दों के बीच का संक्षिप्त अंतराल था। यूरोपीय शक्तियों की साम्राज्यवादी महत्त्वकांक्षाओं का टकराव हुआ क्योंकि उपनिवेशिक ताकतों ने अपने संघर्षो में उपनिवेश के लोगों को भी घसीटा।

उदारवादी अंतर्राष्ट्रीयवाद की शुरुआत 1919 में अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन के 14 अंकों के साथ हुई। एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन, राष्ट्र संघ की स्थापना हुई, सामूहिक सुरक्षा के सिद्धांत को शामिल किया गया था; और आत्मनिर्णय के अधिकार को मान्यता दी गई थी। 1919-1945 की अंतर अवधि में अंतर्राष्ट्रीय कानून के संहिताकरण और अंतर्राष्ट्रीय संगठन की किस्मों के निर्माण पर बहुत ध्यान दिया गया। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की भावना यह थीं कि कुछ क्रम राज्यों के व्यवहार में लाने की जरूरत थी। यह विल्सन आदर्शवाद का काल था, वैधानिक संस्थावाद पर ध्यान स्पष्ट किया और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के कई मानदण्डों को मजबूती प्रदान की। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन पर प्रथम विश्व युद्ध का प्रभाव बहुत मजबूत था। युद्ध के बाद, यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका में विभिन्न विश्वविद्यालयों में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के विषय का शिक्षण शुरू हुआ।

रूस में समाजवादी क्रांति मानव जाति के इतिहास में एक ऐतिहासिक घटना थी। पहली समाजवादी क्रांति ने कई चीजों को बदल दिया। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अनुशासन के स्तर पर, सोवियत समाजवादी क्रांति ने नाटकीय रूप से अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की वैकल्पिक प्रणाली की संभावना को बढ़ाया; नीचे से 'अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को देखें', और ऊपर से नहीं जो कि विश्व की उपनिवेशिक और पूंजीवादी शक्तियों का परिप्रेक्ष्य था। सोवियत रूस ने सभी गुप्त संधि को अस्वीकार कर दिया, उपनिवेशों में लोगों के आत्मनिर्णय के अधिकार और यूरोपीय देशों में रहने वाले अल्पसंख्यकों का समर्थन किया, श्रमिकों, किसानों और दुनिया के सभी शोषित लोगों की एकजुटता का आह्वान किया। दो घटनाक्रम उल्लेखनीय हैंः सोवियत क्रांति ने समाजवादी क्रांतियों की संभावनाओं को बहुत मजबूती से उठाया और एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में उपनिवेशिक विरोधी आंदोलनों को बहुत बढ़ा दिया। दूसरे, इसने अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को सामाजिक न्याय और इक्विटी के महत्त्व से प्रभावित किया – अंतर्राष्ट्रीय श्रम मानकों और श्रम अधिकारों जैसे कि हड़ताल करने का अधिकार; भूमि पुनर्वितरण और लिंग समानता। युद्ध और शांति के अलावा, विकास अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की चिंता बन गया।

यूरोप में फासीवाद और नाजीवाद बहुत कम समय तक था, लेकिन पूरी दुनिया पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा। एक सैन्य राष्ट्रवाद, युद्ध और आक्रामकता, नस्लवाद और

नस्लीय श्रेष्ठता में विश्वास और यह विचार कि राष्ट्र एक जीवित इकाई है जिसका अस्तित्व सबसे उपर है, इन विचारधाराओं के प्रमुख लक्षण थे। दो विश्व युद्धों के बीच क्रमशः इटली और जर्मनी में ये विचारधाराएँ रही, लेकिन अन्य जगहों पर भी पुनरूत्थान करने की इनमें क्षमता है। अपने दिन के दौरान, उन्होंने एक मजबूत छाप छोड़ी और दुनिया के अन्य हिस्सों में कई राजनीतिक आंदोलनों को प्रेरित किया – लैटिन अमेरिका और एशिया।

द्वितीय विश्व युद्ध पहले वाले की तुलना में अधिक विनाशकारी था। मनुष्य और सामग्री के संदर्भ में युद्ध की भारी लागत के अलावा, संघर्ष ने पहली बार परमाणु हथियारों का प्रयोग देखा। पारस्परिक विनाश का आश्वासन दिया था; परमाणु युद्ध में विजय और पराजय नहीं होती। जब दूसरा विश्वयुद्ध समाप्त हुआ, अंतर्राष्ट्रीय, राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य बदल गया था। इसके अलावा, एक अनुशासन के रूप में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को कई तात्कालिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाक्रम थे; साम्राज्य मर गए; अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका में नए देश पैदा हुए। उपनिवेशवाद, नस्लवाद और अविकसितता की विरासतें अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अनुशासन में निपटाए जाने वाले नए मुद्दों के रूप में सामने आईं। इसके अलावा, दुनिया ने खुद को दो खंडों में विभाजित किया – एक पूंजीवादी खंड जो अमेरिका की अध्यक्षता में और एक समाजवादी खंड सोवियत संघ के नेतृत्व में। वैचारिक प्रतियोगिता, प्रभाव क्षेत्र, हथियारों की दौड़, परमाणु हथियारों का विकास और उनकी वितरण प्रणाली ने अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को चिह्नित किया। यह शीत युद्ध के संदर्भ गुट-निरपेक्ष आंदोलन शांतिपूर्ण बातचीत और खंड रणनीति की अस्वीकृति के रूप में उठा। संयुक्त राष्ट्र का गठन किया गया था जिसने जो सुरक्षा परिषद् की स्थापना की। इसका मतलब था कि पहली बार किसी अंतर्राष्ट्रीय संगठन के फैसले को लागू किया जा सकता है, अगर जरूरत है तो सैन्य बल का उपयोग करके। पाँच महाशक्तियों ने स्वयं को वीटो शक्ति के लिए नामित किया, वे वैश्विक पुलिसकर्मी बन गए। ब्रेटन वुड्स संस्थानों का उदय हुआ ताकि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए नियम हों। एक नया और शक्तिशाली अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक अभिकर्त्ता एम.एन.सी. के रूप में उभरा और फैल गया।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 3 प्रथम विश्व युद्ध : कारण और परिणाम*

संरचना

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 युद्ध के कारण

- 3.2.1 आर्थिक प्रतिद्वंद्विता
- 3.2.2 उपनिवेशिक विवाद
- 3.2.3 विरोधी गठबंधन प्रणाली
- 3.2.4 बढ़ती राष्ट्रवादी आकांक्षाएँ
- 3.2.5 युद्ध की शुरुआत

3.3 युद्ध की घटनाओं के क्रम

- 3.3.1 युद्ध का यूरोपीय चरण
- 3.3.2 युद्ध का वैश्विक चरण
- 3.3.3 युद्ध का अंत
- 3.3.4 ब्रिटिश युद्ध प्रयासों में भारत का योगदान

3.4 युद्ध के परिणाम

- 3.4.1 पेरिस शांति सम्मेलन
- 3.4.2 वर्साय की संधि
- 3.4.3 छोटी संधियाँ
- 3.4.4 ओटोमन साम्राज्य का विघटन

3.5 युद्ध का प्रभाव

- 3.5.1 यूरोप पर प्रभाव
- 3.5.2 विश्व पर प्रभाव

3.6 सारांश

3.7 संदर्भ

3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

इस इकाई में, आप प्रथम विश्व युद्ध के बारे में पढ़ेंगे। इसे पढ़कर आप निम्नलिखित समझने में सक्षम होंगे :

- जिन परिस्थितियों के कारण प्रथम विश्व युद्ध हुआ;
- प्रथम विश्व युद्ध के कारण;
- युद्ध की घटनाओं के क्रम;

* प्रो. एस. आर. चक्रवर्ती, एस. आई. एस., जे.एन.यू., नई दिल्ली

- युद्ध के परिणाम;
- युद्ध का प्रभाव;
- यूरोपीय शक्तियों की अंतर-युद्ध समय की गतिशीलता को समझना; तथा
- विश्व राजनीति में नई शुरुआत।

3.1 प्रस्तावना

प्रथम विश्व युद्ध, 1914 की तीसरी तिमाही में शुरू हुआ। बाद में यह युद्ध पूरी दुनिया में फैल गया। युद्ध यूरोप में शुरू हुआ था, लेकिन जल्द ही लगभग पूरी दुनिया में छा गया। इस युद्ध में हुई क्षति जैसा इतिहास में कोई उदाहरण नहीं था। पहले के युद्ध में, आम तौर पर नागरिक आबादी शामिल नहीं थी और हताहतों की संख्या आमतौर पर युद्धरत सेनाओं तक ही सीमित थी। 1914 में शुरू हुआ युद्ध पूर्ण युद्ध था क्योंकि असैनिक क्षेत्रों में बमबारी से नागरिक आबादी को होने वाली हताहतों की संख्या बड़ी थी। दुनिया ने एक अभूतपूर्व प्रलय का अनुभव किया। फिर से, पूर्ण युद्ध जिसमें युद्धरत राज्यों के सभी संसाधन जुटाए गए थे। यह चार साल से अधिक समय तक जारी रहा। इसने पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया क्योंकि नागरिक क्षेत्रों में बमबारी से नागरिक आबादी को नुकसान हुआ। इसने विश्व इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ दिया। यूरोप, एशिया, अफ्रीका और प्रशांत महासागर में युद्ध की लड़ाइयाँ लड़ी गईं। इसके प्रसार और इसकी पूर्ण प्रकृति की अभूतपूर्व सीमा के कारण इसे प्रथम विश्व युद्ध के रूप में जाना जाता है। स्थापित राजवंशों का पतन हुआ, यूरोप का पतन होने लगा और अमेरिका हावी होने लगा। युद्ध ने नई विचारधाराओं को उत्पन्न किया जैसे कि समाजवाद, नए संस्थानों की स्थापना जैसे राष्ट्र संघ, तथा दुनिया में सहयोग बनाने की माँग करने वाले नए नेतृत्व को जन्म दिया। दुनिया वास्तव में युद्ध की समाप्ति पर बदल गई।

3.2 युद्ध के कारण

हाप्सबर्ग सिंहासन के उत्तराधिकारी, आर्चड्यूक फ्रांसिस फर्डिनेंड की हत्या के बाद युद्ध छिड़ गया। 28 जून, 1914 को बोसनियाई कट्टरपंथी राष्ट्रवादियों के एक समूह द्वारा उनकी हत्या कर दी गई थी। हालांकि यह हत्या युद्ध का असली कारण नहीं थी। बस एक बहाना भर था। युद्ध के कारणों को उन राजनीतिक-आर्थिक घटनाओं में पाया जा सकता है, जो फ्रांस-जर्मन युद्ध (1870 के बाद से) अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में हो रहा था। आर्थिक प्रतिद्वंद्विता पैदा हुई, उपनिवेश पर विवाद और यूरोप में परस्पर विरोधी गठबंधन प्रणाली शुरू हुई। यूरोप में बढ़ती राष्ट्रवादी आकांक्षाओं ने आग में ईंधन डाला।

3.2.1 आर्थिक प्रतिद्वंद्विता

19वीं शताब्दी की अंतिम तिमाही और 20वीं शताब्दी के शुरुआती दशकों में अधिकांश यूरोपीय शक्तियाँ टैरिफ युद्धों में व्यस्त थीं और विदेशी बाजारों के लिए प्रतिस्पर्धा में लगी हुई थीं। इटली और फ्रांस, रूस और जर्मनी, ऑस्ट्रिया और सर्बिया तथा और कईयों के बीच टैरिफ युद्ध हुए थे। इन टैरिफ युद्धों के अलावा, सामान्य रूप से शक्तियों के बीच और विशेष रूप से विदेशी बाजारों के लिए जर्मनी और ग्रेट ब्रिटेन के बीच कड़ी प्रतिस्पर्धा पैदा हुई। 19वीं शताब्दी के दौरान, ब्रिटेन सर्वोच्च आर्थिक

शक्ति था, जो एक शक्तिशाली नौसेना और सेना द्वारा समर्थित था। अपनी रियासतों को एक राष्ट्र राज्य के रूप में एकीकृत करने के बाद जर्मनी अचानक यूरोप में एक प्रतिस्पर्धी महाशक्ति बनकर उभरा। जर्मनी की आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभरने से इसे विदेशी बाजारों के लिए भी एक कड़ी प्रतियोगी बना दिया, जहाँ ब्रिटेन सहित अन्य यूरोपीय शक्तियों के लिए बहुत बड़ा दाँव था। इस प्रतियोगिता से दूरगामी राजनीतिक नतीजे निकले। इसने इन राज्यों के संबंधों में एक तनाव पैदा कर दिया। ये संबंध तब और मजबूत हो गए जब प्रतिस्पर्धी देशों ने व्यापार मार्गों और मर्चेंट शिपिंग की सुरक्षा के लिए मजबूत नौसेनाओं का निर्माण शुरू कर दिया। जर्मनी, जिसके पास पहले से ही एक बड़ी सेना थी, ने एक बड़ी नौसेना के निर्माण के लिए अपनी पूरी ऊर्जा समर्पित कर दी और थोड़े ही समय में लक्ष्य हासिल कर लिया। जर्मनी की आर्थिक शक्ति एक मजबूत नौसेना द्वारा समर्थित के रूप में उभरने से इसके शत्रुओं और ब्रिटेन को समस्या हुई। इसलिए प्रतिद्वंद्विता तेज हो गई और इसका भड़कना अपरिहार्य हो गया।

3.2.2 उपनिवेशिक विवाद

अपनी अधिशेष पूंजी और औद्योगिक उत्पादों के लिए संरक्षित बाजारों को सुनिश्चित करने के लिए यूरोपीय शक्तियाँ विदेशी उपनिवेशों के लिए संघर्ष में शामिल हो गई। उपनिवेशों की दौड़ में जर्मनी सबसे युवा था। एक सुपर आर्थिक शक्ति के रूप में उभरने के साथ यह विदेशी उपनिवेशों की माँग में बहुत आक्रामक हो गया, जो इसकी बढ़ती अर्थव्यवस्था के लिए बाजार प्रदान कर सकता था। जर्मनी में यह सामान्य रोना था कि देश को उपनिवेशों का समानाधिकार था। उपनिवेश प्राप्त करने के अपने संघर्ष में, जर्मनी ने ब्रिटेन को बाधा के रूप में पाया। ब्रिटेन की एक स्वार्थी के रूप में निंदा की गई थी, जिसे 'नॉद का कुत्ता' कहा गया। 'उपनिवेशों' के लिए विवाद केवल जर्मनी और ब्रिटेन तक ही सीमित नहीं था। प्रथम विश्व युद्ध से पहले के वर्षों में उपनिवेशों के लिए सभी प्रमुख शक्तियाों में होड़ थी। उपनिवेशों के लिए यूरोपीय शक्तियों के बीच अफ्रीका और एशिया में टकराव थे। ये विरोधाभास तेज हुए और यूरोपीय राज्यों के बीच एक दूसरे के प्रति शत्रुतापूर्ण संबंध बन गए।

3.2.3 विरोधी गठबंधन प्रणाली

विरोधी शक्तियों के बीच दुनिया के विभिन्न भागों में उपनिवेशों के लिए संघर्ष परस्पर विरोधी गठबंधन के गठन का कारण बना। जर्मनी ने रास्ता दिखाया इसने ऑस्ट्रिया-हंगरी (1879) के साथ दोहरे गठबंधन पर हस्ताक्षर किए। इस गठबंधन ने जर्मनी को अलसैस-लोरेन को पुनः प्राप्त करने के लिए एक संभावित फ्रांसीसी हमले के खिलाफ मजबूत करने का लक्ष्य रखा। गठबंधन को रूस के खिलाफ ऑस्ट्रिया-हंगरी की रक्षा के लिए भी डिजाइन किया गया था, जिसके साथ पूर्व में बाल्कन क्षेत्र में झड़पें हुई थीं। गठबंधन 1882 में ट्रिपल एलायंस बन गया। इटली, ऑस्ट्रिया-हंगरी तथा जर्मनी के साथ शामिल हो गया जो फ्रांस के खिलाफ उपनिवेशों के लिए संघर्ष में उनका समर्थन चाहता था।

ट्रिपल एलायंस के भागीदारों ने महाद्वीप में यथास्थिति बनाए रखने का प्रयास किया। हालांकि, अन्य लोगों ने इसे यूरोप पर हावी होने और अन्य राज्यों को एक-दूसरे से अलग करने के प्रयास के रूप में देखा। इसलिए, उन्होंने गठबंधन बनाने के लिए कदम उठाए। फ्रांस और रूस ने अंततः 1893 में संधि की। इसका उद्देश्य त्रिशंकु

गठबंधन का मुकाबला करना था और ब्रिटेन को रोकना, जिसके खिलाफ फ्रांस और रूस दोनों का उपनिवेशों पर विवाद था। हालांकि समय के साथ, फ्रांस, रूस और ब्रिटेन के बीच विवादों को शांति से हल किया गया था। उन्होंने अब गठबंधन में प्रवेश किया। सबसे पहले, एँग्लो-फ्रेंच एँटेंट (1904) हुआ, और फिर एँग्लो-रूसी संधि (1907) को औपचारिक रूप दिया गया। ये दो संधियां ट्रिपल एँटेंटे में तब्दील हो गए थे। इस प्रकार यूरोप को दो परस्पर विरोधी गठबंधनों में बाँटा गया। ट्रिपल एलायंस और ट्रिपल एँटेंटे, जो आर्थिक और औपनिवेशिक प्रतिद्वंद्विता द्वारा बढ़े हुए थे।

3.2.4 बढ़ती राष्ट्रवादी आकांक्षाएँ

यूरोप के विभिन्न क्षेत्रों में अल्पसंख्यक थे। ये अल्पसंख्यक अपने संबंधित शाही शासकों के प्रति शत्रुतापूर्ण बने रहे। इन लोगों के बढ़ते राष्ट्रवाद ने उन्हें विदेशी शासन के खिलाफ बेचैन कर दिया। वे आत्मनिर्णय के अधिकार की माँग कर रहे थे। अल्सास-लोरेन में फ्रांसीसी लोग अपने क्षेत्र पर जर्मन शासन के विरोधी थे। ऑस्ट्रियाई और हंगरी द्वारा शासित हाप्सबर्ग साम्राज्य, अल्पसंख्यको के बढ़ते असंतोष का सामना कर रहा था। इतालवी, रोमानियाई और स्लाव जो ऑस्ट्रो हंगरी साम्राज्य के भीतर रहते थे, जागृत हुए और पड़ोसी राज्यों में अपने भाईयों के साथ आत्मनिर्णय या एकीकरण की माँग की। शासकों ने हालांकि राष्ट्रवादी जागृति को दबाने की कोशिश की। साम्राज्यों के भीतर राष्ट्रवादी आंदोलन सैन्य क्रांतिकारी आंदोलनों में बदल गए। गुप्त कट्टरपंथी और आतंकवादी संगठन बाल्कन क्षेत्र में अलग-अलग जगहों पर घूम रहे थे। 1911 में सर्बिया की राजधानी बेलग्रेड में, आर्कड्यूक फ्रांसिस कर्डिनेंड को मारने की साजिश रची, जब वह सेराजेवो में एक आधिकारिक दौरे पर था। उसे मारने का काम गैवरिलो प्रिंसिप और उनके साथियों को सौंपा गया और प्रिंसिप ने हत्या को अंजाम दिया।

3.2.5 युद्ध की शुरुआत

आर्चड्यूक की हत्या के समय, ऑस्ट्रिया ने 23 जुलाई 1914 को सर्बिया को कठोर अंतिम चेतावनी जारी की। सर्बिया को ड्यूक को मारने की साजिश के बारे में कम जानकारी थी। हालांकि, सर्बिया ने विनम्रतापूर्वक सभी माँगों का पालन करने के लिए सहमत होने वाले अंतिम चेतावनी का जवाब दिया। अंतिम चेतावनी में हत्या के लिए जिम्मेदारी तय करने के लिए पूछताछ में ऑस्ट्रियाई अधिकारियों की भागीदारी, आंदोलन को दबाने और माफी माँगने की आवश्यकता शामिल थे। सर्बिया ने पूछताछ के संचालन के लिए आस्ट्रियाई अधिकारियों को शामिल करने से इंकार कर दिया। ऑस्ट्रिया ने सर्बिया के जवाब को स्वीकार करने से इंकार कर दिया और 28 जुलाई, 1914 को सर्बिया के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। रूस 30 जुलाई को सर्बिया के पक्ष में मैदान में शामिल हुआ, रूस की भागीदारी ने जर्मनी को युद्ध में उतारा। जर्मनी ने क्रमशः 1 और 3 अगस्त को रूस और फ्रांस के खिलाफ युद्ध की घोषणा की। बेल्जियम पर हमला करके फ्रांस पर हमला करने की जर्मन रणनीति ने ब्रिटेन को नाराज कर दिया। ब्रिटेन ने 4 अगस्त को युद्ध की घोषणा की। इस प्रकार दोनों ब्लॉकों के बीच पूर्ण पैमाने पर युद्ध छिड़ गया, जिसमें एक तरफ ऑस्ट्रिया-हंगरी और जर्मनी तथा दूसरी ओर फ्रांस, ब्रिटेन एवं रूस थे। पहले ब्लॉक को सेंट्रल पॉवर्स के रूप में जाना जाता था (केंद्रीय शक्ति) और बाद वाले को मित्र राष्ट्रों के रूप में जाना गया।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थानों का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर के सुझावों के लिए इकाई का अंतिम भाग देखें।

1) प्रथम विश्व युद्ध के लिए कौन से कारण थे?

.....

.....

.....

.....

.....

3.3 युद्ध की घटनाओं के क्रम

युद्ध के फैसले पर यह अनुमान लगाया गया था कि युद्ध एक संक्षिप्त मुठभेड़ होगा और एक विजयी पक्ष होगा। ये अनुमान गलत साबित हुए। युद्ध चार साल से अधिक समय तक चला और इसने पुरुषों और संसाधनों का अभूतपूर्व बलिदान लिया। दोनों विजेता और हारे हुए लोग युद्ध से लगभग समान रूप से पीड़ित थे। हालांकि मित्र राष्ट्रों ने जीत हासिल की, लेकिन यह उन्हें बहुत महंगा पड़ा।

3.3.1 युद्ध का यूरोपीय चरण

युद्ध 1917 की शुरुआत तक जारी रहा और यह अनिवार्य रूप से एक यूरोपीय मामला था। कुछ यूरोपीय मुद्दों और उपनिवेशों पर उनके नियंत्रण पर लड़ा जा रहा था। यूरोप युद्ध का मुख्य रंगमंच था। जर्मन रणनीति एक महीने में युद्ध को समाप्त करने की थी। तद्नुसार, जर्मन सेनाओं ने बेल्जियम पर हावी होकर फ्रांस पर हमला किया। जर्मन सैनिक कुछ ही दिनों में पेरिस के आसपास के इलाकों में पहुँच गए। हालांकि, जर्मन इस जीत को बनाए रखने में विफल रहा। फ्रांसीसी सेना ने उन्हें आइने नदी तट तक पीछे हटने के लिए मजबूर किया, जिसे प्राकृतिक रक्षा रेखा माना जाता था। युद्धरत पक्ष अगले तीन वर्षों के दौरान किसी भी दिशा में ज्यादा बढ़त बनाने में विफल रहे। एक गतिरोध उत्पन्न हुआ। युद्ध ने इस मोर्चे पर भारी हताहत किया। पहले चार महीनों के दौरान हताहत हुए लोग 700,000 जर्मन, 850,000 फ्रांसीसी और 90,000 ब्रिटिश थे।

रूसी और बाल्कन मोर्चों पर, हालांकि निर्णायक युद्ध हुए थे। रूसी मोर्चे पर रूसी सैनिक पूर्वी प्रशिया पर आक्रमण नहीं कर सकते थे और बाल्कन मोर्चे पर, ऑस्ट्रिया को अपमानजनक हार का सामना करना पड़ा। सर्बियाई लोगों ने ऑस्ट्रियाई लोगों को भगा दिया। नवंबर 1914 में तुर्की केंद्रीय शक्तियों में शामिल हो गया। तुर्की ने आपूर्ति लाइन को बंद कर दिया और मित्र राष्ट्रों को समुद्री मार्गों से रूस को आपूर्ति भेजने से रोकने का प्रयास किया।

नतीजतन, संयुक्त ऑस्ट्रो-जर्मन सेनाओं ने 1915 के मध्य में रूसी सेनाओं को अपमानजनक तरीके से पराजित किया। इन पराजयों के साथ, ज़ार साम्राज्य का पतन शुरू हुआ। इस बीच, बुल्गारिया सेंट्रल पॉवर्स में शामिल हो गया और उनकी ताकत और मारक क्षमताओं को बढ़ाया। अब, सर्बिया केंद्रीय शक्तियों के अधीन हो गया। इस

समय इटली को मित्र राष्ट्रों के पक्ष में हस्तक्षेप करने के लिए राजी किया गया था। इटली का हस्तक्षेप हालांकि युद्ध को प्रभावित करने में विफल रहा। केंद्रीय शक्तियों ने महत्त्वपूर्ण जीत हासिल की और हैम्बर्ग से लेकर फारस की खाड़ी तक का पूरा क्षेत्र उनके नियंत्रण में आ गया।

फरवरी 1916 में सेंट्रल पॉवर्स ने मित्र राष्ट्रों के खिलाफ जोरदार हमला किया। उनकी रणनीति मित्र राष्ट्रों पर एक निर्णायक हार थोपने और युद्ध को समाप्त करने के लिए शांति शर्तों को निर्धारित करने के लिए थी। यह रणनीति विफल रही। जर्मनी को पुरुषों और सामग्री दोनों में भारी नुकसान उठाना पड़ा। रूस ने ऑस्ट्रिया को हराया। अब रोमानिया मित्र राष्ट्रों में शामिल हो गया तथा जल्द ही ग्रीस ने अपनी तटस्थता को तोड़ दिया और मित्र राष्ट्रों के पक्ष में हस्तक्षेप किया। अब सेंट्रल पॉवर्स के खिलाफ बाल्कन मोर्चे में संयुक्त आक्रमण ने बुल्गारिया को युद्ध से बाहर कर दिया। जर्मनों को कई मोर्चों पर हराया गया था। उन्होंने ब्रिटेन में आपूर्ति करने वाले जहाजों को अवरुद्ध करने के लिए समुद्र में अप्रतिबंधित पनडुब्बी वारफेयर खोला। यद्यपि, इस रणनीति ने हाथोंहाथ भुगतान किया, लेकिन इसने अमेरिका को मित्र राष्ट्रों के पक्ष में युद्ध में हस्तक्षेप करने के लिए मजबूर किया। इस प्रकार युद्ध ने एक वैश्विक चरण में प्रवेश किया। युद्ध अब चौथे वर्ष में प्रवेश कर गया। यूरोप ने मानव जीवन और धन के संदर्भ दोनों में भारी नुकसान उठाया। यूरोप पतन की कगार पर था। अब शांति एक सामान्य माँग बन गई। जुलाई 1917 में जर्मन संसद ने एक शांति प्रस्ताव किया। कई महत्त्वपूर्ण हस्तियों ने यूरोपीय सभ्यता को बचाने के लिए शांति की अपील की लेकिन बुरा अभी भी होना बाकी था।

3.3.2 युद्ध का वैश्विक चरण

युद्ध में संयुक्त राज्य अमेरिका के हस्तक्षेप और 1917 में रूसी क्रांति के सफल समापन ने इसकी जटिलता को पूरी तरह से बदल दिया, जो अब एक यूरोपीयन से एक विश्व प्रसंग में बदल गया था। अमेरिका के हस्तक्षेप और रूसी क्रांति ने विरोधाभासी विचारधाराओं को आमने-सामने किया। संयुक्त राज्य अमेरिका ने लोकतंत्र और शांति के लिए दुनिया को सुरक्षित बनाने की माँग की। यू एस ए के राष्ट्रपति वुडरो विल्सन अपने प्रसिद्ध चौदह सूत्रीय कार्यक्रम को लाए।

युद्ध ने रूस में जारिस्ट शासन के पतन में बड़े पैमाने पर योगदान दिया। ज़ार के पतन के बाद सत्ता में स्थापित बोल्शेविक सरकार ने मार्च 1918 में जर्मनी के साथ ब्रेस्ट-लिटोस्क संधि पर हस्ताक्षर किए और युद्ध से बाहर निकल गई। इस प्रकार जर्मनी और रूस के बीच युद्ध समाप्त हो गया। युद्ध की शुरुआत से ही यूएसए ने सख्त निष्पक्षता बनाए रखी थी। उसने कई कारणों से इस तटस्थता को तोड़ दिया, जिसमें जर्मनी द्वारा व्यापारी जहाजों पर अप्रतिबंधित पनडुब्बी हमले, युद्ध में अमेरिका की विशाल आर्थिक भागीदारी और संयुक्त राज्य अमेरिका के भीतर सैन्य तैयारी शामिल थे।

अप्रैल, 1917 में यूएसए ने मित्र राष्ट्रों के समर्थन में युद्ध में हस्तक्षेप किया। युद्ध में शामिल होने के बाद राष्ट्रपति विल्सन ने अपने प्रसिद्ध चौदह सूत्रीय कार्यक्रम की घोषणा की जिसे अमेरिका के युद्ध लक्ष्य के रूप में घोषित किया गया था। इसके 14 बिंदुओं में शामिल हैं, गुप्त संधि के बजाय शांति की वार्ताएँ, समुद्र की स्वतंत्रता, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए बाधाओं को दूर करना, व्यवस्थाओं में कमी, औपनिवेशिक

लोगों को न्याय, यूरोप के विभिन्न अल्पसंख्यकों को आत्मनिर्णय के अधिकार और विश्व में शांति बनाए रखने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय निकाय की स्थापना।

3.3.3 युद्ध का अंत

अमेरिका की भागीदारी ने मित्र राष्ट्रों की मारक शक्ति को बढ़ाया। संयुक्त राज्य अमेरिका ने पुरुषों और सामग्रियों दोनों को भेजा। जुलाई 1918 तक विभिन्न मोर्चों में अमेरिकी सैनिकों की संख्या बढ़कर 300,000 से अधिक हो गई। केंद्रीय शक्तियों को नई आपूर्ति मिलने की कोई उम्मीद नहीं थी। इसलिए वे मित्र राष्ट्रों के आक्रमण को सहन करने में विफल रहे।

नतीजतन, उन्होंने 1918 के उत्तरार्द्ध के दौरान एक-एक करके आत्मसमर्पण किया। बुल्गारिया ने सितंबर में और तुर्की ने अक्टूबर में आत्मसमर्पण किया। हाप्सबर्ग साम्राज्य का विघटन हुआ और सम्राट चार्ल्स ने नवंबर में पद छोड़ दिया। जर्मनों के पास अब कोई रास्ता नहीं था। सम्राट कैसर विलियम द्वितीय ने सिहांसन का त्याग कर दिया और जर्मनी ने नवंबर की शुरुआत में आत्मसमर्पण कर दिया। इस तरह युद्ध मित्र राष्ट्रों की जीत के साथ समाप्त हुआ।

युद्ध चार साल और तीन महीने तक जारी रहा था। यूरोप, अमेरिका, एशिया और अफ्रीका के तीस राज्य इस युद्ध में उलझ गए थे जिसने चार राजवंशों को उखाड़ फेंका और सात नए राज्यों को अस्तित्व में लाया। युद्ध में 18 मिलियन से अधिक लोग मारे गए और कुल लागत लगभग 333 बिलियन डॉलर थी।

3.3.4 ब्रिटिश युद्ध के प्रयासों में भारत का योगदान

प्रथम विश्व युद्ध का एक अक्सर अप्रकाशित सत्य ब्रिटेन के युद्ध प्रयासों में भारत का योगदान है। युद्ध शुरू होने के बाद, ब्रिटेन ने अपनी शाही सैनिकों से मदद माँगी। सितंबर 1914 में भारतीय सेना के दल पहुँचे, ब्रिटेन के जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा के एक महीने के भीतर। 26 सितंबर 1914 को पहली भारतीय टुकड़ी मार्सिले पहुँची, ये लाहौर और मेरठ मंडल और सिकंदराबाद कैलेवरी के सैनिक थे। अक्टूबर 1914 में, भारतीय सैनिकों की इप्रा में भयंकर लड़ाई में भागीदारी हुई। और मार्च 1915 में, भारतीय सैनिकों ने नेवे चैपले की लड़ाई में हमलावर सेना का आधा हिस्सा प्रदान किया, जो मानव जीवन के संदर्भ में सबसे महंगा था।

भारत के योगदान और उसके सैनिकों का बलिदान किसी भी बड़ी यूरोपीय शक्ति के बराबर था। जब युद्ध समाप्त हुआ, तो पंजाब, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और बिहार जैसे क्षेत्रों में लगभग 1.5 मिलियन भारतीय सैनिकों ने पश्चिमी मोर्चे, पूर्वी अफ्रीका, मेसोपोटामिया, मिस्र और गौलीपोली में कार्रवाई की थी। अनुमान भिन्न है, 50,000 से 62,000 लोग मारे गए, 65,000 से 67,000 घायल हुए और 10,000 लापता होने की सूचना दी गई, जबकि 98 भारतीय सेना की नर्सों की मौत हो गई। देश ने 170,000 पशुओं, 3.7 मिलियन टन की आपूर्ति, सैंडबैग के लिए जूट और ब्रिटिश सरकार को बड़ा ऋण दिया। अमिया कुमार बागची ने उल्लेख किया कि ब्रिटिश सरकार ने नकद, और ऋण के रूप में भारतीय अर्थव्यवस्था पर करीब 367 मिलियन पाउंड का खर्चा आया। जबकि कई डिवीजनों को विदेशों में भेजा गया था, अन्य को भारत में रहना पड़ा था, जो उत्तर-पश्चिम फ्रंटियर की रक्षा कर रहे थे और आंतरिक सुरक्षा और प्रशिक्षण कर्त्तव्यों पर। 1942 से भारतीय सेना के कमांडर-इन-चीफ-फील्ड-

मार्शल सर क्लाउड औचितलेक ने दावा किया कि ब्रिटिश दोनों विश्व युद्धों से नहीं निकल पाते यदि उनके पास भारतीय आर्मी नहीं होती।

महात्मा गाँधी और कस्तूरबा गाँधी युद्ध के समय ब्रिटेन में थे। दोनों ने सहायक अस्पताल कर्मियों के रूप में काम किया। 1914-15 में, कस्तूरबा गाँधी ने भारतीय सेना के अस्पतालों में काम किया – इंग्लैंड के दक्षिणी तट पर – कुछ 16,000 भारतीय सैनिकों के लिए स्थापित अस्पताल, इन सैनिकों के लिए जो फ्रांस और बेल्जियम में घायल हो गए थे।

प्रथम विश्व युद्ध की घटनाओं से भारतीय स्वतंत्रता की उत्पत्ति का पता लगाया जा सकता है। युद्ध ने उन बलों को गति दी जो भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में विकसित हुआ। विशाल बलिदान करने के बाद भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के नेताओं ने स्व-सरकार की उम्मीद की। इन उम्मीदों को राष्ट्रवादी नेताओं जैसे महात्मा गाँधी और अन्य सभी ने साझा किया, लेकिन युद्ध के अंत में मार्शल लॉ के विस्तार से धराशायी हो गए। 1917 में, महात्मा गाँधी ने पहले सत्याग्रह की शुरुआत की। इंडिगो किसानों पर लगाई गई कठोर नीतियों के खिलाफ चंपारण सत्याग्रह किया। चंपारण, गाँधीवादी राजनीतिक रणनीति का हिस्सा था जो मौजूदा राजनीतिक संरचना के भीतर उपलब्ध संवैधानिक अधिकार का प्रयोग करती हैं, नैतिक ऊपरी हाथ को बनाए रखते हुए। इसके बाद, गाँधी ने फरवरी 1919 में ब्रिटिश अधिकार के खिलाफ सविनय अवज्ञा का अपना पहला भारत-व्यापी अभियान शुरू किया। स्वतंत्रता संग्राम में तीव्रता और लोकप्रिय भागीदारी ब्रिटिश विरोधी भावना से प्रेरित नहीं थी, बल्कि इसके पीछे आत्मनिर्णय की भावना थी।

बोध प्रश्न 2

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थानों का प्रयोग करें।
ii) अपने उत्तर के सुझावों के लिए इकाई का अंतिम भाग देखें।

1) ब्रिटिश युद्ध के प्रयासों में भारत के योगदान का सारांश बनाएँ।

.....

.....

.....

.....

.....

3.4 युद्ध के परिणाम

युद्ध में पुरुषों और सामग्रियों की अभूतपूर्व खपत हुई। दुनिया में यूरोप का वर्चस्व कम होने लगा और अमेरिका एक महाशक्ति के रूप में उभरने लगा। जापान ने पूर्व में अपना वर्चस्व स्थापित किया। मित्र राष्ट्रों और केंद्रीय शक्तियों के व्यक्तिगत राज्यों के बीच पाँच अलग-अलग संधियों की एक श्रृंखला के माध्यम से युद्ध को समाप्त कर दिया गया था। ये संधियाँ थीं जर्मनी के साथ वर्साय संधि, ऑस्ट्रिया के साथ सेंट जर्मेन ट्रीटी, बुल्गारिया के साथ न्यूली संधि, हंगरी के साथ ट्राईनोन संधि और तुर्की के साथ सेवर्स संधि। जबकि पहले चार संधियों पर 1919 में हस्ताक्षर किए गए, आखिरी संधि पर 1920 में हस्ताक्षर किए गए थे। इन संधियों की मुख्य विशेषताओं में अन्य के

साथ राष्ट्र संघ की नींव, केवल यूरोप में आत्मनिर्णय का अधिकार और एशिया और अफ्रीका में यूरोपीय शक्तियों के उपनिवेशों में इस सिद्धान्त का इस्तेमाल न करना शामिल हैं।

3.4.1 पेरिस शांति सम्मेलन

युद्धरत राज्यों के बीच शांति संधियों पर हस्ताक्षर के बाद युद्ध को सामान्य रूप से समाप्त कर दिया जाता है और शांति बहाल कर दी जाती है। प्रथम विश्व युद्ध को भी शांति संधियों के माध्यम से समाप्त किया गया था, जिसका उल्लेख पहले किया गया है। जब युद्ध निर्णायक चरण में प्रवेश कर गया, तो मित्र देशों की शक्तियों ने दुनिया में स्थायी शांति के लिए विभिन्न प्रस्तावित योजनाओं और प्रस्तावों पर विचार करना शुरू कर दिया। जर्मनी के आत्मसमर्पण और युद्धविराम दस्तावेज पर हस्ताक्षर पर, मित्र राष्ट्रों ने शांति सम्मेलन आयोजित करने के लिए प्रभावी कदम उठाए। जनवरी 1919 में सम्मेलन को अंततः पेरिस में बुलाया गया। यह लगभग छह महीने तक जारी रहा। इस सम्मेलन में मुख्य रूप से मित्र देशों से जुड़े बत्तीस देशों ने भाग लिया। सभा प्रभावशाली थी, क्योंकि दुनिया के अधिकांश नेता मौजूद थे। यह पहली बार था, इस तरह के एक सम्मेलन में गैर-यूरोपीय शक्तियों – संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, आदि ने भाग लिया। रूस इसमें शामिल नहीं हुआ क्योंकि यह पहले युद्ध से हट गया था। केंद्रीय शक्तियों में से किसी को भी विचार-विमर्श में भाग लेने के लिए आमंत्रित नहीं किया गया था। सम्मेलन मुख्य रूप से तीन बड़े देशों, यूएसए, ब्रिटेन और फ्रांस द्वारा आयोजित किया गया था। लेकिन वे दूसरों को पूरी तरह से नजरअंदाज नहीं कर सकते थे। यद्यपि, परस्पर विरोधी और संकीर्ण हितों, क्षुद्र और अन्यायपूर्ण दावों और झगड़ालू प्रवृत्ति सम्मेलन की कार्यवाही पर हावी हो गई जिसने राष्ट्रपति विल्सन के आदर्शवाद जो उनके चौदह अंकों में निहित था, उसको पूरी तरह फीका कर दिया।

सम्मेलन में कई जटिल मुद्दों से निपटने का आह्वान किया गया था, जिसमें यूरोप में तत्कालीन बढ़ती हुई राष्ट्रीय आकांक्षाएँ, युद्ध के दौरान हस्तांतरित गुप्त संधि, यूरोपीय संबद्ध शक्तियों को हुए नुकसान के मुआवजे की माँग और निवारण आदि शामिल थे। जो युद्ध के दौरान जर्मनी द्वारा किए गए गलतियों के कारण हुआ। जर्मनी को युद्ध की घोषणा और जीवन एवं संपत्ति के भारी विनाश के लिए जिम्मेदार ठहराया गया था।

विभिन्न समस्याओं और मुद्दों का अध्ययन करने और उनसे निपटने के लिए उपयुक्त सिफारिशें करने के लिए विशेषज्ञों और राजनयिकों की नियुक्ति समितियों के औपचारिक उद्घाटन के बाद पेरिस में शांति सम्मेलन में भाग लेने वाले देशों की परस्पर विरोधी माँगों, और उद्देश्यों के संदर्भ में, सम्मेलन के लिए एक उद्देश्य और तर्कसंगत निष्कर्ष पर पहुँचना आसान नहीं था। राष्ट्रपति विल्सन को उन यूरोपीय शक्तियों के दबाव के आगे झुकना पड़ा जो जर्मनी से बदला लेने पर आमदा थे। काफी लंबे विचार-विमर्श के बाद, सम्मेलन ने घोषणा की कि शांति संधि बहुत कठोर नियमों और शर्तों के साथ हुई है। इसके तहत जर्मनी को अपमानजनक संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया गया था। आगे की संधि ने भविष्य के संघर्ष के लिए एक मंच तैयार किया जिसके कारण द्वितीय विश्व युद्ध हुआ।

3.4.2 वर्साय की संधि

मित्र राष्ट्रों और जर्मनी के बीच वर्साय की कठोर संधि पर हस्ताक्षर किए थे। यह पाँच संधि की शृंखला में सबसे महत्त्वपूर्ण थी। संधि में 440 अनुच्छेद शामिल थे। यह केंद्रीय शक्तियों के क्षेत्रीय, सैन्य और युद्ध अपराधों और शांति समझौते के आर्थिक, राजनीतिक और अन्य संबंधित पहलुओं की व्यापक व्याख्या करती है। जर्मनी जिस पर युद्ध शुरू करने का आरोप लगाया गया था, गंभीर रूप से निपटा गया था। सम्राट कैसर विलियम द्वितीय पर मानवता के खिलाफ अपराध करने का आरोप लगाया गया था और इसे युद्ध के कारण होने वाले प्रलय के लिए दोषी ठहराया गया था। जर्मनी को तीन क्षेत्रों के नुकसान के साथ 7 मिलियन से अधिक लोगों के साथ लगभग 40,000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया था। जर्मनी प्राकृतिक संसाधनों से वंचित हुआ जो इसके आर्थिक विकास के लिए आवश्यक थे। इसके अलावा जर्मनी को युद्ध की क्षतिपूर्ति का भुगतान करने के लिए कहा गया था, जो लंबे समय तक बातचीत के बाद 33,000 मिलियन डॉलर पर तय किया गया था। जर्मन उपनिवेशों को वापस ले लिया गया और उन्हें 'लीग के अनिवार्य क्षेत्र' के रूप में वर्णित किया गया, जिसे फ्रांस, ब्रिटेन और जापान ने आपस में वितरित किया। जर्मनी अपनी सेना और नौसेना के आकार में कटौती करके सैन्य रूप से कमजोर हुआ। इसे वायु सेना या आधुनिक मर्चेंट नेवी रखने की अनुमति नहीं थी। नदी के पूर्व में 50 किलोमीटर तक राइन नदी का सीमांकन किया गया था और इस प्रक्रिया के निष्पादन की निगरानी के लिए एलाइड कमीशन को नियुक्त किया गया था। संक्षेप में, संधि जर्मनी को अपंग करने और मित्र देशों की शक्तियों के अधीनस्थता को बनाए रखने के लिए डिजाइन की गई थी। बेल्जियम, पोलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी आदि को स्वतंत्र राज्यों के रूप में मान्यता दी गई थी।

जर्मनी और रूस के बीच हस्ताक्षरित ब्रेस्ट-लिटवॉस्क की संधि को अप्रासंगिक घोषित किया गया। विश्व में पहली बार बनी वर्साय की संधि ने अंतर्राष्ट्रीय संगठन जो विश्व में शांति बनाए रखने के उद्देश्य से बना, लीग ऑफ नेशंस की स्थापना की। इस संधि ने दुनिया में पहली बार मजदूरों के लिए अंतर्राष्ट्रीय मजदूर संगठन की भी स्थापना की, जो मजदूरों के कल्याण की देखभाल करती है। संधि ने शासित प्रदेशों के लिए सरकार की एक प्रणाली भी विकसित की।

3.4.3 छोटी संधियाँ

वर्साय संधि के बाद चार छोटी संधियाँ हुईं। मित्र राष्ट्रों और ऑस्ट्रिया के बीच सेंट जर्मन संधि पर हस्ताक्षर किए गए थे। इसने हंगरी, चेकोस्लोवाकिया, पोलैंड और यूगोस्लाविया की स्वतंत्रता को मान्यता दी। ऑस्ट्रिया ने अपने क्षेत्रों के एक बड़े हिस्से का त्याग किया था। मित्र राष्ट्रों और बुल्गारिया के बीच न्यूली संधि पर हस्ताक्षर किए गए थे। बुल्गारिया को अपने तट का हिस्सा ग्रीस को सौंपना पड़ा। मित्र राष्ट्रों और हंगरी के बीच ट्राईनोव संधि पर हस्ताक्षर किए गए थे। संधि की शर्तों के अनुसार, हंगरी आकार और जनसंख्या में कम हो गया था। अगस्त 1920 में मित्र राष्ट्रों और तुर्की के बीच सेवर्स संधि पर हस्ताक्षर किए गए। इस संधि ने तुर्की से उसका ओटोमन साम्राज्य छीन लिया।

3.4.4 ओटोमन साम्राज्य का विघटन

प्रथम विश्व युद्ध के बीच विघटन होने तक ओटोमन साम्राज्य, लगभग 600 वर्षों तक चला। 16वीं शताब्दी में इसकी ऊँचाई पर, यह अब तक के सबसे बड़े साम्राज्यों में से एक था। वर्तमान में हंगरी, बाल्कन क्षेत्र, ग्रीस और यूक्रेन के कुछ हिस्सों सहित वियना के फाटकों तक अधिकांश दक्षिण-पूर्वी यूरोप शामिल हैं, मध्य-पूर्व के हिस्से, इराक, सीरिया, इजरायल और मिस्र, उत्तरी अफ्रीका अल्जीरिया के रूप में पश्चिम में तथा अरब प्रायद्वीप के बड़े हिस्से इसमें शामिल थे। 17वीं शताब्दी के अंत तक, आंतरिक और बाहरी परिस्थितियाँ हताश हो गई थीं।

19वीं शताब्दी में साम्राज्य के भीतर खलीफा का अधिकार न्यूनतम था। उत्तरी अफ्रीका का नियंत्रण लंबे समय से फीका था, मिस्र और सीरिया के प्रांतों ने साम्राज्य को ललकारा और वहाबी, अरब पर हावी थे। इसी तरह, यूरोपीय प्रान्तों और क्षेत्रों अल्बानिया, बुल्गारिया और सर्बिया ने अपनी स्वायत्तता घोषित कर दी थी। बाहरी मोर्चे पर, रूस और ऑस्ट्रिया हंगरी युद्ध का स्थायी स्रोत थे। 20वीं शताब्दी की शुरुआत तक, बड़ी संख्या में संधियों और विधानों के माध्यम से ओटोमन साम्राज्य को अधीन कर लिया गया था, जो यूरोपीय शक्तियों के साथ की गई थी। यह ओटोमन साम्राज्य की 'शांतिपूर्ण प्रवेश' की साम्राज्यवादी प्रक्रियाएँ थीं।

प्रथम विश्व युद्ध के फैलने से पहले ही साम्राज्य को विभाजित करने के लिए यूरोपीय शक्तियों के बीच गुप्त समझौते और पारस्परिक रूप से सहमत योजनाएँ थीं। ओटोमन क्षेत्रों को घटाने की प्रक्रिया लगभग एक सदी से चल रही थी। अल्जीरिया और ट्यूनीशिया अपने रास्ते चले गए थे और ब्रिटेन ने 1882 में मिस्र को अपना संरक्षित राज्य बनाया था। ओटोमन ने रूस और ऑस्ट्रिया हंगरी के साथ विभिन्न मुद्दों और शांति संधियों के तहत पूर्वी और दक्षिणी यूरोप में बड़े क्षेत्रों को खो दिया था। 1878 में बर्लिन की कांग्रेस में, यूरोपीय शक्तियों ने बुल्गारिया, सर्बिया, मोंटेनेग्रो और रोमानिया के ओटोमन प्रांतों को स्वतंत्र राज्य घोषित किया। ऑस्ट्रिया-हंगरी को बोस्निया और हर्जेगोविना का नियंत्रण दिया गया था। नए वित्तीय नियंत्रण स्थापित किए गए थे, ताकि ओटोमन साम्राज्य से यूरोप का ऋण वसूला जाए। 20वीं शताब्दी के मोड़ पर 'यूरोप का बीमार आदमी' अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कमजोर और अलग-थलग पड़ गया था। इसके अतिरिक्त साम्राज्य में 1908 में क्रान्ति हुई, जिसने 'युवा तुर्कों' को सत्ता में लाया। घरेलू अस्थिरता का लाभ उठाते हुए, इटली ने त्रिपोलिजिया (लीबिया) को जब्त कर लिया और 1911 में एगियन सागर में द्वीपों के एक समूह डोडकनी पर कब्जा कर लिया। दो बाल्कन युद्धों (1912-13) ने यूरोप में ओटोमन साम्राज्य को नष्ट कर दिया। पहले बाल्कन युद्ध (अक्टूबर 1912-मई 1913) में ओटोमन्स ने क्रेते सहित अपने सभी बहूमूल्य क्षेत्र बुल्गारिया, सर्बिया, ग्रीस, माटे नेग्रो और अल्बानिया के हाथ गंवा दिए। पहला विश्व युद्ध शुरू होने से पहले, उन्होंने 80 प्रतिशत क्षेत्र और अपने यूरोपीय प्रांतों की दो तिहाई से अधिक आबादी खो दी थी।

इसके विघटन के हालात युद्ध के फैलने से पहले ही बड़े हो गए। वह गुप्त समझौते थे, जिसमें ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी और रूस से पारस्परिक रूप से सहमत योजनाएँ थीं ताकि साम्राज्य को उनके आर्थिक और भू-राजनीतिक हितों के क्षेत्रों में विभाजित किया जा सके। यूरोपीय डिजाइनों को विफल करने के लिए एक रक्षात्मक कदम में, ओटोमन साम्राज्य जर्मनी की ओर से प्रथम विश्व युद्ध में शामिल हो गया। 29 अक्टूबर

1914 को, ओटोमन नौसेना ने ओडेसा के रूसी ब्लैक सी पोर्ट पर बमबारी की, ओटोमन साम्राज्य के खिलाफ एँटेंट द्वारा युद्ध की घोषणा की गई।

1915 में, तुर्की ने गैलीपोली की लड़ाई में ब्रिटिश और मिस्र राष्ट्रों के हमले का विरोध किया और इसे उलट दिया। ओटोमन्स ने केंद्रीय शक्तियों के युद्ध के प्रयास में एक महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी सेनाएँ पूर्वी एशिया माइनर (अनातोलिया), अजरबैजान, मेसोपोटामिया, सीरिया और फिलिस्तीन और डारडानेल्स तथा साथ ही यूरोपीय मोर्चों पर लड़ीं। हालांकि 1916 के बाद, ओटोमन साम्राज्य ने युद्ध में बने रहना मुश्किल पाया। इस्लामिक एकजुटता के नाम पर एक अपील मध्य-पूर्व के अरब प्रांतों में लोकप्रिय समर्थन जुटाने में विफल रही। इसके बजाय ब्रिटेन ने चतुराई से ओटोमन्स के खिलाफ अरब के गुस्से का इस्तेमाल किया, इसका परिणाम 1916 में पवित्र शहर मक्का पर नियंत्रण खोना था। ओटोमन क्षेत्रों के विभाजन के लिए एँटेंटे प्रस्तावों को कई युद्ध समझौतों में तैयार किया गया था। इस्तांबुल समझौते (मार्च-अप्रैल 1915) द्वारा रूस को इस्तांबुल और डार्डमेन्स के जलडमरू मध्य क्षेत्र का वादा किया गया था, फ्रांस को सीरिया और सिलिसिया में एक प्रभाव क्षेत्र प्राप्त होना था। एँग्लो-फ्रेंच साइक्स-पिकॉट समझौते (3 जनवरी, 1916) द्वारा फ्रांसीसी क्षेत्र की पुष्टि की गई और इराक में मोसुल के पूर्व की ओर बढ़ा दी गई। लंदन समझौते (26 अप्रैल, 1915) द्वारा इटली को डोडेकनी और एशिया माइनर का संभावित हिस्से का वादा किया गया था। सेंट-जीन-डी-मोर्येन (अप्रैल 1917) के समझौते से, इटली को दक्षिण-पश्चिमी अनातोलिया के एक बड़े क्षेत्र का वादा किया गया था, जिसमें ज़ीमीर और उत्तर में एक अतिरिक्त क्षेत्र शामिल है। 1917 की रूसी क्रांति और तुर्की राष्ट्रवादी प्रतिरोध ने संघर्ष खत्म होने के बाद इन समझौतों को संशोधित किया।

1917 में, ब्रिटेन ने मेसोपोटामिया और फिलिस्तीन के प्रांतों पर विजय प्राप्त की और घोषणा की कि फिलिस्तीन को एक अंतर्राष्ट्रीय शासन के तहत रखा जाएगा। मेसोपोटामिया में एक ब्रिटिश क्षेत्र का प्रभाव बगदाद के रूप में उत्तर की ओर बढ़ा और ब्रिटेन को हाइफा और एक्को का निमंत्रण दिया गया और मेसोपोटामिया और हाइफा ऐक्को क्षेत्रों को जोड़ने वाले क्षेत्र को नियंत्रित किया गया। ब्रिटेन ने अरब नेताओं को स्वतंत्रता के विभिन्न वायदे किए। नवंबर 1917 में, ब्रिटेन बालफोर घोषणा के साथ आया जिसने फिलिस्तीन में यहूदी लोगों के लिए एक राष्ट्रीय मातृभूमि की स्थापना का वायदा किया। 14 मई 1948 को, लीग ऑफ नेशंस प्रणाली के तहत, ब्रिटिश 'मैंडेट' से एक दिन पहले, इजरायल राज्य की स्थापना की गई थी।

1918 में ओटोमन सरकार ने मित्र राष्ट्रों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया और ब्रिटेन ने कांस्टेंटिनोपल पर कब्जा कर लिया। वर्साय की शांति द्वारा ओटोमन साम्राज्य ने अपने अधिकांश क्षेत्र खो दिये, साथ ही एशिया माइनर के कुछ हिस्से ग्रीस को सौंप दिए गए। ओटोमन वित्त संसाधनों का सख्त यूरोपीय निमंत्रण स्थापित किया गया था। ब्रिटेन, फ्रांस और इटली के बीच एक त्रिपक्षीय समझौते ने फ्रांस और ईटली के लिए व्यापक प्रभाव को परिभाषित किया। आंतरिक राजनीतिक उथल-पुथल थी और तुर्की राष्ट्रवाद के बल ने अधिक विभाजन को रोका। केमल अतातुर्क के नेतृत्व में तुर्की राष्ट्रवादियों ने तुकी के हृदयस्थल के विभाजन का सफलतापूर्वक विरोध किया और ओटोमन साम्राज्य के खंडहरों पर एक धर्मनिरपेक्ष गणराज्य की स्थापना की। अतातुर्क ने 1924 में खलीफा के कार्यालय को समाप्त कर दिया।

मध्य-पूर्व और दक्षिण पूर्व यूरोप तथा बालकन क्षेत्र में राजनीतिक अस्थिरता और संघर्ष पैदा करने वाली समस्याओं में से कई, इसकी प्रतिध्वनि थी जो प्रथम विश्व युद्ध के दौरान और बाद में ओटोमन साम्राज्य के साथ जो हुआ था।

बोध प्रश्न 3

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थानों का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर के सुझावों के लिए इकाई का अंतिम भाग देखें।

1) वर्साय संधि की संक्षिप्त व्याख्या करें।

.....

.....

.....

.....

.....

3.5 युद्ध का प्रभाव

युद्ध के प्रभाव को यूरोप और विश्व के विभिन्न भागों में वर्गीकृत किया गया है। चूँकि इसकी शुरुआत यूरोप से हुई थी। इसलिए इसने लगभग सभी यूरोपीय देशों को धीरे-धीरे प्रेरित किया और उसके बाद दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में पहुँचा, जिसका निम्नलिखित दो खंड घटनाओं के अनुक्रम और उसके बाद के प्रभाव का विश्लेषण करेंगे।

3.5.1 यूरोप पर प्रभाव

युद्ध ने यूरोप को इतना कमजोर कर दिया था कि वह आर्थिक और राजनीतिक ताकत के रूप में पुनः योगदान नहीं कर सका। यूरोप ने संयुक्त राज्य अमेरिका के हाथों मैदान खो दिया। यूरोप को आर्थिक गिरावट का सामना करना पड़ा, एक के बाद एक राजनीतिक संकटों का सामना करना पड़ा और औपनिवेशिक लोगों की आँखों में अपनी प्रतिष्ठा खो दी। यूरोप दुनिया की अग्रणी आर्थिक शक्ति था। यूरोप की आर्थिक समृद्धि का स्रोत उसकी विशाल उपनिवेश थे। वह काफी हद तक उस विशाल आय पर निर्भर था जो उसके बड़े पैमाने पर विदेशी निवेश से अर्जित की जा रही थी। युद्ध ने इस स्रोत को काफी हद तक काट दिया था। ब्रिटेन ने अपने युद्ध - पूर्व विदेशी निवेश का 25 प्रतिशत से अधिक खो दिया, फ्रांस ने लगभग 34 प्रतिशत और जर्मनी ने लगभग पूरा यूरोप खो दिया, जिससे उसका अधिकांश हिस्सा संयुक्त राज्य अमेरिका को मिल गया, जिसके साथ उसका आर्थिक संबंध एक लेनदार से कर्जदार में बदल गया। यूरोप अब बैंकर और दुनिया की कार्यशाला नहीं रह गया, जिसका उसने युद्ध की शुरुआत तक आनंद लिया था।

यूरोप पर युद्ध का राजनीतिक प्रभाव भी दूरगामी था। राष्ट्रपति विल्सन के 14 अंक और रूस में बोल्शेविक क्रांति के सफल समापन ने नए क्रांतिकारी विचारों को जन्म दिया। रूस और आसपास के राज्य मार्क्सवादी-लेनिनवादी दर्शन द्वारा निर्देशित समाजवादी मॉडल के तहत सोवियत सोशलिस्ट रिपब्लिक (यूएसएसआर या आमतौर पर सोवियत संघ) के संघ के रूप में उभरे। पूरे महाद्वीप में विश्व व्यवस्था पर गंभीर

हमले हुए। यूरोप में जाने-माने लोकतांत्रिक राज्य प्रतिबंधित मताधिकार का इस्तेमाल कर रहे थे। युद्ध ने परिदृश्य बदल दिया। जिन महिलाओं को अब तक कई देशों में मतदान का अधिकार नहीं था, उन्हें मतदान का अधिकार मिला। युद्ध ने महिलाओं की मुक्ति के लिए प्रक्रिया शुरू की। यूरोप के नक्शे से कई राज्यों को मिटा दिया गया था। मेहनतकश लोगों के मूल अधिकार विभिन्न देशों की कानून पुस्तकों में शामिल किए जाने लगे। उपनिवेशों में यूरोप की प्रतिष्ठा का नुकसान हुआ। यूरोपीय के अंदर विरोधाभास और दरारें उजागर हुईं। ब्लॉक ने एक को दूसरे के खिलाफ खड़ा किया और उनकी प्रतिष्ठा को अपूरणीय क्षति हुई।

3.5.2 विश्व पर प्रभाव

दुनिया पर युद्ध का प्रभाव सभी के बीच व्याप्त था। युद्ध के सबसे महत्त्वपूर्ण प्रभावों में से एक संयुक्त राज्य अमेरिका का महाशक्ति के रूप में उभरना था। युद्ध ने यूरोप को दहला दिया था तथा अमेरिका वैश्विक पूंजीवाद बाजार केंद्र के रूप में उभरा। युद्ध के बाद की अवधि ने युद्ध को दुनिया में यूरोपीय वर्चस्व के अंत की शुरुआत के रूप में देखा। आर्थिक और सैन्य रूप से यूरोप को संयुक्त राज्य अमेरिका ने पीछे छोड़ दिया। सोवियत संघ भी जल्दी ही एक दूसरी बड़ी विश्व शक्ति के रूप में सामने आया। युद्ध के बाद की अवधि ने एशिया और अफ्रीका में स्वतंत्रता आंदोलनों को मजबूत किया। यूरोप के कमजोर पड़ते और सोवियत संघ के उदय ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता के संघर्ष को अपना समर्थन देने की घोषणा की और इन संघर्षों के बढ़ने में योगदान दिया। लोकतंत्र की रक्षा के लिए युद्ध के दौरान संबद्ध प्रचार, यूरोप में लड़ाई में एशियाई और अफ्रीकी सैनिकों की भागीदारी ने एशिया और अफ्रीका के लोगों को जगाने में मदद की। यूरोपीय देशों ने युद्ध में अपने उपनिवेशों के संसाधनों का उपयोग किया था। युद्ध के लिए सैनिकों और मजदूरों की जबरन भर्ती और साम्राज्यवादी देशों द्वारा युद्ध के लिए उपनिवेशों के संसाधनों के शोषण ने उपनिवेशों के लोगों में आक्रोश पैदा कर दिया था। औपनिवेशिक देशों की आबादी इस मिथक पर पोषित हुई थी कि एशिया और अफ्रीका के लोग यूरोपीय लोगों से कमतर थे। यूरोप के देशों के एक समूह के खिलाफ युद्ध जीतने में एशिया और अफ्रीका के सैनिकों द्वारा निभाई गई भूमिका ने इस मिथक को तोड़ दिया। कई एशियाई नेताओं ने इस प्रयास में युद्ध के प्रयासों का समर्थन किया था, कि युद्ध समाप्त होने के बाद उनके देशों को स्वतंत्रता दी जाएगी। हालांकि, ये उम्मीदें पूरी नहीं हुई। जबकि यूरोपीय राष्ट्रों ने आत्मनिर्णय के अधिकार को जीत लिया, एशिया और अफ्रीका के देशों में औपनिवेशिक शासन और शोषण जारी रहा।

प्रथम विश्व युद्ध के महत्त्वपूर्ण तथ्य

- मुठ्ठी भर पत्रकारों ने युद्ध की वास्तविकताओं पर रिपोर्ट करने के लिए अपनी जान जोखिम में डाल दी। जैसा कि सरकार ने युद्ध की शुरुआत से सूचना के प्रवाह को नियंत्रित करने की माँग की थी, पत्रकारों पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। युद्ध कार्यालय की राय में, संघर्ष पर रिपोर्टिंग दुश्मन के लिए मददगार था। पकड़े जाने पर, उन्हें मृत्युदण्ड का सामना करना पड़ता।
- प्लास्टिक सर्जरी के अविष्कार को बढ़ावा दिया। युद्ध में चेहरे की कई चोटों का कारण बम के छर्रे थे। गोलियों द्वारा दी गई सीधी-रेखा घावों के विपरीत, एक छर्रे के विस्फोट से उत्पन्न धातु की धारें आसानी से चेहरे को चीर सकती थीं। उन्होंने जो चोटें देखीं, उनसे भयभीत होकर, सर्जन हेरोल्ड गिलीज़ ने पीड़ितों

की मदद करने का काम किया और इस प्रक्रिया में चेहरे के पुनर्निर्माण की शुरुआती तकनीकों का बीड़ा उठाया।

- सबसे छोटा ब्रिटिश सैनिक 12 साल का था। सिडनी लुईस सिर्फ 12 साल का था जब उसने अपनी उम्र के बारे में झूठ बोला था और विश्व युद्ध के दौरान सेना में शामिल हुआ था। वह हजारों अल्याम लड़कों में से एक थे, जिन्होंने मोर्चे पर अपने वयस्क समकक्षों के साथ लड़ाई लड़ी। कुछ देशभक्ति से प्रेरित थे, लेकिन दूसरों के लिए यह उनके नीरस जीवन से पलायन था।
- युद्ध के दौरान ब्लड बैंक विकसित किए गए थे। ब्रिटिश सेना ने घायल सैनिकों के इलाज में रक्त संचार का नियमित उपयोग शुरू किया। रक्त एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में सीधे स्थानांतरित किया जाता था। एक अमेरिकी सेना के डॉक्टर, कैप्टन ओसवाल्ड रॉबर्टसन ने 1917 में पश्चिमी मोर्चे पर पहले रक्त बैंक की स्थापना की जिससे सोडियम साइट्रेट का उपयोग किया गया ताकि रक्त को जमाव और अनुपयोगी होने से बचाया जा सके।

3.6 सारांश

प्रथम विश्व युद्ध 1914 में शुरू हुआ और 1918 की अंतिम तिमाही तक जारी रहा। प्रथम विश्व युद्ध को 'सभी युद्ध को समाप्त करने वाला युद्ध' माना गया था। हालांकि, शांति संधि इसे सुनिश्चित करने में विफल रही थी। इसके विपरीत संधियों में कुछ प्रावधान शामिल थे जो पराजित देशों पर बेहद कठोर थे और इस प्रकार उन्होंने आगे के संघर्षों के बीज बोए। इसी तरह, कुछ विजयी देशों ने भी ठगा हुआ महसूस किया क्योंकि उनकी सभी उम्मीदें पूरी नहीं हुई थीं। युद्ध के परिणामस्वरूप साम्राज्यवाद नष्ट नहीं हुआ था। विजयी शक्तियों ने वास्तव में अपनी संपत्ति बढ़ाई थी। यूरोप विचलित हो गया और एक महान शक्ति के रूप में गिरावट आई। ओटोमन साम्राज्य को भंग कर दिया गया था, तुर्की का आधुनिकीकरण किया गया था और ओटोमन साम्राज्य के अन्य हिस्सों को राष्ट्रों के संघ के 'जनादेश' प्रणाली के तहत मित्र राष्ट्रों को सौंप दिया गया था। साम्राज्यवादी देशों के बीच युद्ध के कारण प्रतिद्वंद्विता और संघर्ष के जो कारक थे, वे अभी भी मौजूद थे। इसलिए, यह खतरा मंडराता रहा कि दुनिया के एक और विभाजन के लिए और अधिक युद्ध लड़े जाते रहेंगे। सोवियत संघ के उद्‌भव को कई देशों में मौजूदा सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था के लिए खतरा माना गया था। इसे नष्ट करने की इच्छा ने उन देशों की नीतियों को प्रभावित किया। अगले बीस वर्षों में होने वाले कुछ घटनाओं के साथ इन कारकों ने एक और विश्व युद्ध की स्थिति पैदा कर दी।

3.7 संदर्भ

बाल्डविन, एच. डब्ल्यू. (1962). *वर्ल्ड वार I. एन आइटलाईन हिस्ट्री.* ऑक्सफोर्ड : ओयूपी.

गिल्बर्ट, मार्टिन. (1994). *फर्स्ट वर्ल्ड वार : कम्पलीट हिस्ट्री.* ऑक्सफोर्ड : ओयूपी.

गिलबर्ट, मार्टिन. (2008). *रूटलेज एटलस ऑफ फर्स्ट वर्ल्ड वार.* लंदन : रूटलेज.

हॉर्न, जॉन (सं.) (2010). *ए कंपैनियन टू वर्ल्ड वॉर.* ऑक्सफोर्ड : विली-ब्लैकवेल.

हावर्ड, माइकल. (2007). *द फर्स्ट वार – ए वेरी शार्ट इंटरोडक्शन.* लंदन : रूटलेज.

स्टैवरियठोस, एल. एस. (1983). *ए ग्लोबल हिस्ट्री : दि ह्यूमन हेरिटेज.* नयी जर्सी.

थॉमसन, डेविड. (1974). *यूरोप सिन्स नेपोलियन.* मिडलसेक्स : मंसाटिल.

विंटर, जे. एम. (सं.) (2014). *द कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ फर्स्ट वर्ल्ड वार,* वॉल्यूम-3, कैम्ब्रिज – न्यूयॉर्क : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) आर्थिक प्रतिद्वंद्विता, उपनिवेशिक विवाद, विरोधी गठबंधन प्रणाली तथा यूरोप में बढ़ता राष्ट्रवाद।

बोध प्रश्न 2

1) भारतीय आर्मी कठिन मोर्चों पर लड़ी। पशुओं और संसाधनों की आपूर्ति भारत ने भारी मात्रा में की। भारतीय अर्थव्यवस्था पर लगभग 367 मिलियन पाउंड का खर्च आया।

बोध प्रश्न 3

1) जर्मनी को प्रथम विश्व युद्ध का जिम्मेदार ठहराया, इसके कई क्षेत्र ले लिए गए और क्षतिपूर्ति के लिए पैसा लिया गया। लीग आफ नेशंस की स्थापना की।

इकाई 4 बोल्शेविक क्रांति का महत्व*

संरचना

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 बोल्शेविक और अंतर्राष्ट्रीय संबंध की एक नई प्रणाली

4.2.1 बोल्शेविक सरकार की शांति पहल

4.2.2 बोल्शेविकों द्वारा पड़ोसी देशों में विशेष विशेषाधिकार का त्याग

4.3 बोल्शेविक और उपनिवेश-विरोधी संघर्ष

4.3.1 पूर्व में समाजवादी विचारों का प्रसार

4.3.2 पूर्व में राष्ट्रवादी और समाजवादी ताकतों की एकता

4.3.3 राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों का तीव्र होना

4.3.4 कम्युनिस्ट इंटरनेशनल

4.4 साम्यवादी और श्रमिक आंदोलनों का उदय और विकास

4.5 सारांश

4.6 संदर्भ

4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

यह इकाई बोल्शेविक क्रांति से संबंधित है, जो मार्क्सवाद की विचारधारा से प्रेरित विश्व की पहली समाजवादी क्रांति थी। इस इकाई के माध्यम से आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे :

- बोल्शेविक क्रांति की प्रकृति और अंतर्राष्ट्रीय संबंध पर इसका प्रभाव;
- नए सोवियत राज्य द्वारा शांति और गैर-आक्रमण, शोषण और उपनिवेशवाद से मुक्त अंतर्राष्ट्रीय संबंध की एक नई प्रणाली बनाने के लिए किए गए उपाय;
- औपनिवेशिक विरोधी संघर्षों पर बोल्शेविक क्रांति का प्रभाव; तथा
- अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट और श्रमिक आंदोलनों के लिए बोल्शेविक क्रांति का योगदान।

4.1 प्रस्तावना

1861 में कृषिदासों की मुक्ति और क्रीमिया युद्ध (1856-59) में हार के बाद रूस में पूंजीवाद और औद्योगीकरण तेजी से आगे बढ़ा। खुद को एक मजबूत महाद्विपीय शक्ति के रूप में बनाए रखने की जरूरतों ने रूस को बड़े पैमाने पर औद्योगिकीकरण करने के लिए प्रेरित किया। यह राज्य द्वारा पूरा किया गया था जो आर्थिक गतिविधियों में एक प्रमुख भूमिका निभा रहा था, और पूंजीवाद की प्रगति के साथ

* प्रो. अजय पटनायक, एस. आई. एस., जे.एन.यू., नई दिल्ली

कच्चे माल और बाजारों की आवश्यकता पैदा हुई। 19वीं शताब्दी की तीसरी तिमाही में, रूसी साम्राज्यवाद ने पहले ही मध्य एशिया का उपनिवेश कर लिया था और बाल्कन और सुदूर पूर्व में रियायतों के लिए अन्य साम्राज्यवादी शक्तियों के साथ मुकाबला कर रहा था। रूस, सदी के अंत तक कृषि की अर्ध-सामंती व्यवस्था और एक सत्तावादी राज्य प्रणाली के साथ एक साम्राज्यवादी शक्ति थी, कोई लोकप्रिय सरकार नहीं थी, कानून बनाने के लिए वास्तविक शक्तियों वाला कोई निर्वाचित अंग नहीं था, और नागरिक अधिकारों और राजनीतिक स्वतंत्रता की कुल कमी थी। उदारवादी समूह कमजोर थे और सत्तारूढ़ ज़ारवादी निरंकुशों के साथ अक्सर समझौता किया जाता था। मार्क्सवाद लोकप्रिय हो रहा था और उसे सामंतवाद-विरोधी और पूंजीवादी-विरोधी-संघर्षों के संयोजन का ऐतिहासिक कार्य सौंपा गया था।

मार्क्सवादी या सोशल डेमोक्रट, जैसा कि वे तब जाने जाते थे, विभिन्न समूहों में विभाजित थे और उनकी वैचारिक विषमता इतनी मजबूत थी कि काबू पाना मुश्किल था। 1898 में स्थापित रूसी सोशल डेमोक्रेटिक लेबर पार्टी (आरएसडीएलपी) दो प्रमुख समूहों में विभाजित हो गई थी, जो चाहती थी कि रूस में एक समाजवादी क्रांति, एक लोकतांत्रिक विरोधी सामंतवादी क्रांति से पहले हो। पूर्व (बोल्शेविक) चाहते थे कि मजदूर वर्ग इस क्रांति के लोकतांत्रिक चरण का नेतृत्व करें। जबकि मेन्शेविकों ने इसके बजाय पूंजीपतियों द्वारा इसका नेतृत्व कराना चाहा। लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविक अंततः अक्टूबर 1917 में क्रांति के नेताओं के रूप में उभर कर आए, क्रांति के बाद श्रमिकों-किसानों के गठजोड़ की सफल रणनीति के साथ सफल रणनीति बनाई। मेन्शेविक, जिन्होंने बुर्जुआ सरकार का समर्थन किया था और फरवरी 1917 में ज़ार को उखाड़ फेंकने के लिए इसमें भाग लिया था, अक्टूबर तक मजदूरों और किसानों का समर्थन खो चुके थे। 7 नवंबर (25 अक्टूबर को पुराने रूसी कैलेंडर के अनुसार) बोल्शेविक तीन दिन के सशस्त्र विद्रोह के बाद विजयी हुए, जिसके कारण फरवरी 1917 में अंतरिम सरकार का आत्मसमर्पण हुआ। यह प्रथम विश्व युद्ध था जिसने अंततः ज़ारवादी निरंकुशता के भाग्य को सील कर दिया। युद्ध ने उस संकट को बढ़ा दिया जिसने रूसी राज्य को जकड़ लिया था। रूसी समाज विरोधाभासों का एक समूह था, जब युद्ध हुआ था – सामंतों और किसानों के बीच संघर्ष, किसानों और पूंजीवादी किसानों (कुलाक के रूप में भी जाना जाता है) के बीच, कुलाक और भूमिहीन श्रम के बीच, कारखानों के मालिकों और श्रमिकों के बीच, बड़े पूंजीपति और क्षुद्र-पूंजीपति वर्ग इत्यादि। एक बार युद्ध आया, इन सभी विरोधाभासों को तेज किया गया। युद्ध की भारी लागत रूस के लिए बहुत भारी थी, जो अभी भी अन्य साम्राज्यवादी शक्तियों की तुलना में अपेक्षाकृत पिछड़ी हुई थी। राज्य इस तरह के एक मंहगे युद्ध को बनाए नहीं रख सकता था और इसका बोझ कामकाजी लोगों और किसानों द्वारा वहन किया जाता था। श्रमिक और यहाँ तक कि सैनिक राज्य के खिलाफ हथियार उठा रहे थे। इतिहास में पहली बार समाजवादी क्रांति का सूत्रपात हुआ और क्रांति में सफल होने के लिए रूस से बेहतर देश नहीं था, जो साम्राज्यवादी शृंखला की सबसे कमजोर कड़ी थी।

अक्टूबर क्रांति ने श्रमिकों और गरीब किसानों का एक राज्य बनाकर एक नए युग की शुरुआत की, जिनकी रुचि आर्थिक शोषण, युद्धों, आक्रमणों, उपनिवेशवाद और नस्लीय भेदभाव के खिलाफ थी। क्रांति एक समाजवादी राज्य अस्तित्व में लाई जो युद्ध और साम्राज्यवाद के खिलाफ एक बांध का काम करती। इसने समानता के आधार पर वैकल्पिक विश्व समाजवादी व्यवस्था के निर्माण की प्रक्रिया भी शुरू की, और शोषण

से मुक्ति, तथा जिसने आक्रामकता, उपनिवेशवाद और नस्लीय पूर्वाग्रह के सभी रूपों को त्याग दिया। यह विश्व पूंजीवादी व्यवस्था का विरोधी है जो उपनिवेश, आर्थिक, शोषण, नस्लीयता आदि पर आधारित है।

4.2 बोल्शेविक और अंतर्राष्ट्रीय संबंध की एक नई प्रणाली

अक्टूबर की क्रांति ने दुनिया भर के उपनिवेशों और मेहनतकश लोगों के लिए आशा और मुक्ति का एक नया संदेश फैलाया। यह शोषण के सभी रूपों से मुक्ति का संदेश था – राष्ट्रीय, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक। यह नई बोल्शेविक सरकार की घोषणाओं, कानूनी घोषणा और राजनयिक पहल की एक श्रृंखला में परिलक्षित हुआ। तीसरे ऑल रूसी कांग्रेस ऑफ सोविएट्स (सर्वोच्च शासी निकाय) में जनवरी 1918 में डेक्लेरेशन ऑफ राईटस ऑफ द वर्किंग एंड एक्सपलोइटेड पीपल की घोषणा द्वारा मानव जाति को युद्धों से मुक्ति दिलाने और राष्ट्रों के बीच एक लोकतांत्रिक शांति हासिल बिना कब्जे या क्षतिपूर्ति करने के लिए एक संकल्प की पुष्टि की, जो राष्ट्रों के आत्मनिर्णय के सिद्धांत पर आधारित थी।

इस घोषणा ने सोवियत राज्य की '...बुर्जुआ सभ्यता की बर्बर नीति के साथ पूर्ण विराम की घोषणा की, जिसने एशिया के सैकड़ों-लाखों कामकाजी लोगों की दासता पर कुछ चुने हुए राष्ट्रों से संबंधित शोषकों की समृद्धि का निर्माण किया है। सामान्य और छोटे देशों में उपनिवेशों के रूप में। नए सोवियत राज्य ने अंतर्राष्ट्रीय संबंध की प्रचलित प्रणाली के खिलाफ एक दृढ़ संकल्प अपनाया जिसमें युद्ध और उपनिवेश जैविक घटक थे। इसके बजाय, एक न्यायसंगत और लोकतांत्रिक शांति के विचार और सामान्य लोकतांत्रिक सिद्धांतों पर आधारित अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति का एक आवश्यक आधार की जरूरत पर ध्यान दिया।

4.2.1 बोल्शेविक सरकार की शांति पहल

द डिक्री ऑन पीस ने नए सोवियत राज्य के पहले प्रमुख कृत्यों में से एक, गुप्त कूटनीति के उन्मूलन की घोषणा की और अपने कानून के अनुसार, सोवियत विदेश मंत्रालय ने ज़ारिस्ट राज्य द्वारा हस्ताक्षरित पिछले गुप्त संधियों को प्रकाशित किया (रूसी सम्राटों को ज़ार कहा जाता था), महत्त्वपूर्ण रूप से ओटोमन साम्राज्य के प्रांतों में इंग्लैण्ड और रूस के हितों के 'सीमांकन' पर गुप्त संधि और सम्मेलन। तथा 1916 में इंग्लैण्ड, फ्रांस और रूस के बीच तुर्की पर त्रिपक्षीय गुप्त समझौता।

एँटेंट पॉवर्स (प्रथम विश्व युद्ध में विजयी शक्तियाँ) के इंकार ने एक सामान्य शांति समझौते पर बातचीत करने के लिए, सोवियत रूस को केंद्रीय शक्तियों के साथ शांति वार्ता में प्रवेश करने के लिए मजबूर किया जिसमें जर्मनी, ऑस्ट्रिया, हंगरी, ओटोमन, साम्राज्य और बुल्गारिया (युद्ध में दूसरा शिविर) शामिल थे। सोवियत प्रस्ताव में छह बिंदु शामिल थे : युद्ध के दौरान मिले क्षेत्रों का कोई जबरन कब्जा नहीं, राष्ट्रीय अल्पसंख्यकों को यह चुनने की स्वतंत्रता हो कि एक राज्य के भीतर बने रहें या जनमत संग्रह के माध्यम से स्वतंत्र हों, किसी राज्य में राष्ट्रीय अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा विशेष कानून द्वारा उनकी राष्ट्रीय संस्कृति की रक्षा करना और जब भी संभव हो, प्रशासनिक स्वायत्तता, युद्ध की क्षतिपूर्ति का त्याग और पहले चार सिद्धांतों के अनुसार औपनिवेशिक समस्याओं का समाधान। साम्राज्यवादी जर्मनी ने सोवियत प्रस्तावों को खारिज कर दिया और रूस पर अपमानजनक शांति थोप दी।

लेनिन बोल्शेविक पार्टी और सरकार के मजबूत विरोध के बावजूद जर्मनी की शर्तों पर ब्रेस्ट लिटोवस्क की शांति संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए सहमत हुए। लेनिन का दृढ़ विश्वास था कि युद्ध मेहनतकश लोगों के हितों के लिए हानिकारक है।

4.2.2 बोल्शेविकों द्वारा पड़ोसी देशों में विशेषाधिकार का त्याग

राष्ट्रीय संप्रभुता और समानता का विचार सोवियत विदेश नीति के सिद्धांत और व्यवहार के माध्यम से चला, जिसका उद्देश्य समाजवादी लोकतांत्रिक सिद्धांतों पर अंतर्राष्ट्रीय संबंध को फिर से स्थापित करना था। पहले समाजवादी राज्य के उद्भव ने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने और साम्राज्यवादी शक्तियों द्वारा उत्पीड़न और अतिक्रमण के खिलाफ अपनी संप्रभुता की रक्षा करने के लिए औपचारिक रूप से स्वतंत्र छोटे राज्यों, उपनिवेशों और अर्ध-उपनिवेशों के बीच मजबूत प्रेरणा और आदर्शवाद का उत्पादन किया। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की एक नई प्रणाली विकसित करने की प्रक्रिया में, सोवियत ने पूर्वी देशों के साथ समानता, पारस्परिक सम्मान और मित्रता के सिद्धांतों के आधार पर संबंध के लिए विशेष महत्त्व दिया। सोवियत राज्य साम्राज्यवाद और औपनिवेशिक वर्चस्व के खिलाफ उनके संघर्ष में उन्हें अनुकूल सहायता देने के लिए तैयार था। कठिन आर्थिक स्थिति के बावजूद, नए समाजवादी राज्य ने न केवल राजनीतिक और नैतिक बल्कि तुर्की, अफगानिस्तान, ईरान और अन्य जैसे देशों को संसाधन और सामग्री का समर्थन किया। जून 1919 में, सोवियत सरकार ने ईरान में रूसी नागरिकों के लिए सभी विशेष विशेषाधिकार समाप्त कर दिए, ईरान के राजस्व पर सभी रियायतों और नियंत्रण को त्याग दिया और ईरान को बिना किसी मुआवजे, बैंकों, रेलवे, राजमार्गों और बंदरगाह सुविधाओं की माँग के बिना ईरान को सौंप दिया। साथ ही, कैस्पियन तट पर और अन्य संपत्ति जो ज़ारिस्ट रूस के थे वह भी ईरान को सौंप दिए। फरवरी 1921 में ईरान के साथ मित्रता की संधि पर हस्ताक्षर किए गए थे (ईरान और एक यूरोपीय शक्ति के बीच पहली समान संधि), ईरान की स्वतंत्रता और सोवियत राज्य के साथ उसकी सीमाओं की सुरक्षा की गारंटी। इसी तरह, तुर्की के साथ दोस्ती और गठबंधन की एक संधि पर हस्ताक्षर किए गए, जिसे सोवियत राज्य से उदार आर्थिक, वित्तीय और सैन्य सहायता प्राप्त हुई। 1921 के बसंत में एक सोवियत-अफगान संधि पर हस्ताक्षर किए गए थे जिसके द्वारा अफगानिस्तान को ब्याज मुक्त ऋण दिए गए थे और सोवियत विशेषज्ञों को वहाँ काम करने के लिए भेजा गया था।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग करें।

ii) अपने उत्तर के सुझावों के लिए इकाई के अंतिम भाग को देखें।

1) नए अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के लिए सोवियत रूसी सरकार के सिद्धांतों और पहलों का उल्लेख करें।

.....

.....

.....

.....

.....

4.3 बोल्शेविक और उपनिवेश-विरोधी संघर्ष

पहले समाजवादी राज्य की स्थापना द्वारा प्रदान की गई प्रेरणा अधिक स्थायी थी जो जब तक कई लोगों द्वारा सिर्फ एक सपने जैसा था। क्रांतिकारी विचारों ने उपनिवेश देशों में स्वतंत्रता सेनानियों की पीढ़ियों के विचारों और कार्यों को प्रभावित किया। इसने अविकसित दुनिया में मेहनतकश लोगों के कट्टरपंथी आंदोलनों के विकास के लिए भी बहुत प्रोत्साहन दिया। सामंती और पूंजीवादी ताकतों पर रूसी श्रमिकों की जीत ने उपनिवेशों में कई लोगों को आश्वस्त किया कि यूरोपीय साम्राज्यवादी और उनके स्थानीय प्रतिनिधि उत्पीड़ितों की संयुक्त ताकत के खिलाफ अजेय नहीं हैं। नए समाजवादी राज्य द्वारा रूस और पूर्व के मेहनतकाशों से अपील की गई जिसमें 'फारसियों, तुर्कों, अरबों और हिंदुओं' को सीधे कहा गया कि वे अपने उत्पीड़कों को उखाड़ फेंके और अपनी भूमि के स्वयं मालिक बने। इस अपील ने भारत में राष्ट्रवाद के बढ़ते ज्वार का एक संदर्भ दिया। नए क्रांतिकारी राज्य द्वारा इस तरह की घोषणाओं ने उपनिवेशी लोगों को आश्वस्त किया कि अब उनके पास रूस की क्रांतिकारी सरकार जैसा एक शक्तिशाली सहयोगी था, जिसके समर्थन में वे साम्राज्यवादियों के खिलाफ अपने संघर्ष में भरोसा कर सकते थे।

4.3.1 पूर्व में समाजवादी विचारों का प्रसार

अक्टूबर क्रांति के प्रभाव के तहत, समाजवादी विचार व्यापक रूप से फैल हुए। इन विचारों ने राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष के कई नेताओं के दृष्टिकोण को प्रभावित किया। भारत में, पंडित जवाहरलाल नेहरू वैज्ञानिक समाजवाद के बोल्शेविक विचार से विशेष रूप से प्रभावित थे और उन्होंने अपनी डिस्कवरी ऑफ़ इंडिया में लिखा है कि, मार्क्स का सामाजिक विकास सामान्य विश्लेषण में उल्लेखनीय रूप से सही लगता है। लेनिन ने इनमें से कुछ घटनाक्रमों के बाद मार्क्सवादी थीसिस को सफलतापूर्वक अपनाया। वैज्ञानिक समाजवाद के साथ परिचित होने से राष्ट्रीय बुद्धिजीवियों को अपने देशों और बाहर की राजनीतिक और सामाजिक ताकतों के बारे में एक बेहतर समझ प्रदान हुई, जिसका इस्तेमाल राजनीतिक स्वतंत्रता और सामाजिक विकास में किया जा सकता था। इसने उन्हें राष्ट्रीय पुनरूद्धार की समस्या को हल करने के लिए सबसे उपयुक्त विचारधारा को निर्धारित करने में मदद की।

4.3.2 पूर्व में राष्ट्रवादी और समाजवादी ताकतों की एकता

अक्टूबर की क्रांति के प्रभाव के तहत, समाजवादी विचार फैल गए जिनसे क्रांतिकारी समूहों और कम्युनिस्ट पार्टियों का निर्माण हुआ, जिनकी गतिविधियों ने कामकाजी लोगों की चेतना को उभारा और उन्हें उत्पीड़न के खिलाफ संगठित किया, साम्राज्यवादियों या स्थानीय उत्पीड़कों के खिलाफ। ये क्रांतिकारी समाजवादी और कम्युनिस्ट समूह भी जनता को राजनीतिक गतिविधि के लिए उत्तेजित करने और उन परिस्थितियों की तैयारी में सक्रिय थे जो श्रमिकों और किसानों के संघर्ष को राष्ट्रीय मुक्ति और साम्राज्यवाद-विरोधी के साथ संयोजन के लिए तैयार करेंगे। अक्टूबर की क्रांति ने मजदूरों के आंदोलन और उपनिवेशवाद विरोधी स्वतंत्रता आंदोलनों के बीच गठबंधन की आवश्यकता को दिखाया। पीपुल्स नेशनल लिबरेशन ने साम्राज्यवाद को हराने के लिए संघर्ष किया। रूस में समाजवाद की सफलता और पश्चिमी उपनिवेशवाद की साम्राज्यवाद के लिए एक वापसी के साथ एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों ने अधिक देशों, अधिक से अधिक लोगों

को गले लगाते हुए और अधिक गुंजाइश तथा तीव्रता ग्रहण की। राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन अपनी विषय-वस्तु और लक्ष्यों में अधिक गहरे और कट्टरपंथी बन गए और अधिक महत्त्वपूर्ण रूप से अधिक से अधिक सफल हो गए। राष्ट्रीय और सामाजिक प्रश्न के सफल संचालन के नए सोवियत राज्य के क्रांतिकारी प्रभाव के कारण यह एक बड़ा उपाय था। संक्षेप में अक्टूबर क्रांति ने पूरी दुनिया में समाजवादी राष्ट्रीय मुक्ति के संदेश को पहुंचाया। यह उपनिवेशों में लोगों की चेतना को प्रेरित करता है। राष्ट्रीय आंदोलनों के आधार को चौड़ा किया और अंत में, उपनिवेशों और अर्ध-उपनिवेशों में वाम आंदोलनों के विकास की प्रक्रिया को तेज कर दिया।

रूस में क्रांतिकारियों की सफलता से प्रेरित होकर, भारतीय क्रांतिकारी राष्ट्रवादी, जो विदेशों में काम कर रहे थे, ने लेनिन और बोल्शेविक नेताओं के साथ अनुबंध किया। महेंद्र प्रताप, बरकतुल्लाह, ओबेदुल्ला सिंधी, वीरेंद्रनाथ चट्टोपाध्याय, भूपेंद्रनाथ दत्ता, हरदयाल और एम.एन. रॉय प्रमुख नाम थे जो भारत की मुक्ति के लिए सहयोग और मार्गदर्शन लेने के लिए मास्को गए थे। भारत के दो महान पुत्र पंडित नेहरू और रवीन्द्रनाथ टैगोर रूस की घटनाओं से बहुत प्रभावित थे और अपने जीवन के अंत तक सोवियत संघ के सबसे प्रतिबद्ध मित्रों के रूप में बने रहे। विदेशों में काम करने वाले कई भारतीय क्रांतिकारियों ने अक्टूबर क्रांति से प्रेरणा ली और समाजवाद को अपने कार्यक्रम लक्ष्य के रूप में अपनाया। भारत में नवजात मजदूर वर्ग के आंदोलन के कारण कम्युनिस्ट पार्टी की औपचारिक शुरुआत हुई। शहीद भगत सिंह जेल में उनके कार्यकाल के दौरान समाजवाद की ओर आकर्षित हुए तथा जेल में उनकी अंतिम राजनीतिक गतिविधियों में से एक था, लेनिन दिवस मनाना।

4.3.3 राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों का तीव्र होना

अक्टूबर क्रांति ने उपनिवेशों में आबादी के व्यापक वर्गों को प्रेरित करके राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों की गति को तेज करने में योगदान दिया। 1981 के समापन महीने और 1919 की शुरुआत में, भारत में पहले कभी नहीं हुए पैमाने पर काम कर रहे लोगों द्वारा आंदोलन की एक श्रृंखला देखी गई। बॉम्बे कपड़ा श्रमिकों की हड़ताल में 125,000 कर्मचारी शामिल थे। 1920 के पहले छह महीनों में लगभग 200 स्ट्राइक के साथ हड़ताल आंदोलन अपने चरम पर पहुँच गया जिसमें डेढ़ मिलियन कर्मचारी शामिल थे। यह इस स्थिति में था कि गाँधी और कांग्रेस ने 'अहिंसक असहयोग' आंदोलन शुरू करने का फैसला किया, जिसने बड़े पैमाने पर जनसमूह को आगे बढ़ाया।

कुछ अन्य देशों ने भी साम्राज्यवाद के खिलाफ तीव्र संघर्ष देखा। माइकल कोलिन्स के नेतृत्व में आयरिश आतंकवादियों ने अंग्रेजों से लड़ना जारी रखा, जबकि सिन फेइन पार्टी ने आयरिश गणराज्य के निर्माण की घोषणा की। मिस्र में, जघलुल पाशा की राष्ट्रवादी पार्टी ब्रिटिश शासन को गंभीरता से चुनौती दे रही थी। मिस्र का विद्रोह ब्रिटिश शासकों द्वारा बुरी तरह से दबाया गया था। 1920 में मिस्र की स्वतंत्रता की घोषणा की गई थी। तुर्की में मुस्तफा केमल पाशा ने मित्र देशों के कब्जे के खिलाफ युद्ध घोषणा की। उन्होंने तुर्की की मुख्य भूमि के विभाजन का विरोध किया और एक अंतरिम सरकार की स्थापना की। चीन ने न केवल वर्साय की संधि पर हस्ताक्षर करने से इंकार कर दिया, बल्कि साम्राज्यवाद के खिलाफ अपने संघर्ष में एक नया चरण भी देखा। मई 1919 का चौथा आंदोलन, जिसने इस परिवर्तन का संकेत

दिया। इसके परिणामस्वरूप बुद्धिजीवियों और छात्रों की व्यापक भागीदारी हुई, कन्फ्यूशीवाद पर हमला और जापानी वस्तुओं का बहिष्कार हुआ।

पूर्व के राष्ट्रवादी नेताओं ने अक्तूबर क्रांति के संदेश का सकारात्मक जवाब दिया। बाल गंगाधर तिलक ने अपने समाचार पत्र केसरी में बोल्शेविकों की जीत की सराहना की, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के एक अन्य प्रमुख नेता बिपिन चंद्र पाल, अक्टूबर क्रांति और शोषण के सभी रूपों के खिलाफ इसके आह्वान से प्रेरित थे। लाला लाजपत राय ने रूस में क्रांति की सफलता और पूर्वी दिशा में नीति के लिए इसकी प्रशंसा की। रूसी क्रांति और इसकी समाजवादी उपलब्धियों का जवाहरलाल नेहरू की राजनीतिक सोच पर एक स्थायी प्रभाव पड़ा और इससे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सोच में एक क्रांतिकारी बदलाव आया।

सून यात सेन एशियाई राज्यों द्वारा सोवियत रूस की मान्यता के लिए आह्वान करने वाले चीन के सार्वजनिक नेताओं में से पहले थे। यह सोवियत गणराज्य के प्रति तत्कालीन चीनी सरकार की शत्रुता के बावजूद चीन के प्रति एक नए क्रांतिकारी राज्य की नीतियों की प्रक्रिया थी। 1918 में, सोवियत रूस ने सार्वजनिक रूप से उन तमाम संधियों, समझौतों और ऋणों का त्याग कर दिया जो ज़ारवादी सरकार द्वारा चीन पर लगाए गए थे। चीन के बुद्धिजीवियों ने चीन के भविष्य के लिए अक्टूबर क्रांति की ऐतिहासिक प्रासंगिकता को देखा। मई के चौथे आंदोलन के पीछे प्रमुख भावों में, ली झाओ और लू शिन, जो जल्द ही चीन के कम्युनिस्ट आंदोलन का केंद्र बन गए, ने अक्टूबर क्रांति को एक नए युग की शुरुआत के रूप में माना।

4.3.4 कम्युनिस्ट इंटरनेशनल

कम्युनिस्ट इंटरनेशनल, भ्रातृवादी कम्युनिस्ट पार्टियों का एक संगठन था जो दुनिया भर में समाजवादी क्रांति के लिए समर्पित था। कॉमिन्टर्न ने कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ सोवियत यूनियन के समग्र वैचारिक और राजनीतिक मार्गदर्शन के तहत काम किया। सीपीएसयू के नेताओं ने कॉमिन्टर्न के कई बड़े फैसले तैयार किए और अक्सर कॉमिन्टर्न द्वारा तय की जाने वाली रणनीतियों का फैसला किया। 1919 में कॉमिन्टर्न की स्थापना कांग्रेस द्वारा लेनिन के समाजवाद के लिए विश्व के श्रमिकों को एकजुट करने के सपने को साकार करने की दिशा में पहला कदम था। कांग्रेस ने कॉमिन्टर्न को ''एक एकीकृत विश्व कम्युनिस्ट पार्टी घोषित किया, जिसके विशिष्ट वर्ग प्रत्येक देश में सक्रिय दल थे।'' 1920 में कॉमिन्टर्न की दूसरी कांग्रेस का आयोजन हुआ, इसने 21-प्वाइंट्स को अपनाया जिसने सभी संबद्ध पक्षों को लोकतांत्रिक केंद्रीयवाद के सिद्धांत पर खुद को व्यवस्थित करने के लिए बुलाया – सीपीएसयूव के समान।

कॉमिन्टर्न दो दुनिया में मौजूद थे – यूएसएसआर में समाजवादी दुनिया और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में, पूंजीवादी दुनिया। यूएसएसआर के भीतर, इसकी भूमिका अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन को मजबूत करने और सोवियत नीतियों का बचाव करने के लिए थीं। बाहर, पूंजीवादी दुनिया में, कॉमिन्टर्न ने कम्युनिस्ट पार्टियों को निर्देशित और मार्गदर्शन दिया, इनमें अपनी राजनीतिक कार्रवाई की एक रेखा खींच रखी थी और माँग थी कि संबद्ध कम्युनिस्ट पार्टियाँ सोवियत नेताओं और उनके कार्यों का बचाव करें।

कॉमिन्टर्न के वैचारिक प्रक्षेपण में घुमाव और मोड़ थे। 1921 तक, यह एक कठिन विचारधारा का पालन करता था, कम्युनिस्ट पार्टियों को सामाजिक लोकतंत्र और अन्य लोगों के साथ सहयोगी नहीं होना चाहिए, उन्हें सामाजिक लोकतंत्र और अन्य

कट्टरपंथी दलों के कार्यकर्त्ताओं को दूर करना चाहिए और सशस्त्र क्रांति के माध्यम से अपने-अपने देशों में सत्ता पर कब्जा करना चाहिए। ऐतिहासिक रूप से, समाजवाद की जीत अपरिहार्य है। 1921 के बाद, समाजवादी क्रांति की संभावनाओं के रूप में, कॉमिन्टर्न लचीले हो गए, इसने अब क्रांति लाने के लिए कम्युनिस्टों, सामाजिक लोकतंत्रों और अन्य लोकप्रिय ताकतों के व्यापक मोर्चों के गठन की वकालत की। 1930 के दशक में जब जर्मनी और इटली में नाजीवाद और फासीवाद का उदय हुआ, तो कॉमिन्टर्न ने फासीवाद-विरोधी लोकप्रिय मोर्चों के गठन का आह्वान किया। पॉपुलर फ्रंट के विचार ने कम्युनिस्टों, समाजवादियों और विभिन्न राजनीतिक पड़ावों के उदारवादियों को एक साथ ला दिया। स्पेन में महत्त्वपूर्ण रूप में कई कम्युनिस्ट पार्टियों ने लोकप्रिय मोर्चों को बनाया, लोकप्रिय मोर्चे के विचार को भारत जैसे देशों में भी प्रतिध्वनि मिली, जो औपनिवेशिक शासन से अपनी राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे थे। 1943 में, जोसफ स्टालिन ने कॉमिन्टर्न के विघटन का आदेश दिया।

बोध प्रश्न 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर के लिए सुझावों के लिए इकाई का अंतिम भाग देखें।

1) कम्युनिस्ट इंटरनेशनल (कॉमिन्टर्न) क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

4.4 साम्यवादी और श्रमिक आंदोलनों का उदय और विकास

अक्टूबर क्रांति ने न केवल उपनिवेशों में मुक्ति आंदोलनों पर बहुत प्रभाव डाला, इसने पूर्व में कम्युनिस्ट और श्रमिकों के आंदोलन के उदय और वृद्धि का मार्ग भी प्रशस्त किया। मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धांत को लोकप्रिय बनाने के लिए विभिन्न कम्युनिस्ट समूहों, पार्टियों और आंदोलनों को एकजुट करने और चर्चा करने और साम्राज्यवाद के खिलाफ अन्य राष्ट्रवादी और साम्राज्यवादी ताकतों के साथ एकजुट होने की रणनीतियों और कार्यनीतियों पर बहस करने के लिए, 1919 में मॉस्को में एक कम्युनिस्ट इंटरनेशनल (तीसरा कामिन्टर्न) का गठन किया गया था। कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के गठन में जिस आदर्श को मूर्त रूप दिया गया था, वह विकसित पश्चिम में मजदूर वर्ग और साम्राज्यवाद के खिलाफ उनके आम संघर्ष में उपनिवेशों के उत्पीड़ित लोगों की एकता थी। कम्युनिस्ट इंटरनेशनल दुनिया भर में क्रांतिकारियों का समन्वय केंद्र बन गया। राष्ट्रीय और औपनिवेशिक प्रश्न पर कॉमिन्टर्न की सैद्धांतिक और व्यावहारिक गतिविधियों में केंद्रीय स्थान था। एकजुट साम्राज्यवाद-विरोधी मोर्चे की समस्या। साम्राज्यवाद-विरोधी सभी ताकतों, राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों और मज़दूरों तथा किसानों के समाजवादी आंदोलनों को एक जुट करने के विचार ने 1920 में द्वितीय कामिन्टर्न के दौरान ध्यान आकर्षित किया।

औपनिवेशिक शासन की दमनकारी प्रकृति को देखते हुए, सोवियत देशों में कॉमिन्टर्न के तत्वावधान में पूर्वी देशों के कई कम्युनिस्ट दलों का गठन किया गया था। तुर्की कम्युनिस्ट पहले सोवियत रूस में कम्युनिस्ट पार्टी का आयोजन करने वाले थे, उसके बाद ईरानी, चीनी और कोरियाई। भारतीय कम्युनिस्टों का पहला समूह अक्टूबर 1920 में भारतीयों के ताशकंत में आने के बाद बनाया गया था, जो कॉमिन्टर्न के दूसरे कांग्रेस में शामिल हुए थे। एम.एन. रॉय और एच. मुखर्जी की पहल पर सात लोगों के इस समूह ने खुद को भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी घोषित किया।

नवंबर 1917 में अधिकांश उद्योग और बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। इसका मतलब था कि सरकार ने स्वामित्व और प्रबंधन को संभाल लिया था। भूमि को सामाजिक संपत्ति घोषित कर दिया गया। और किसानों की (कुलीन किसानों की) भूमि को जब्त करने की अनुमति दी गई। शहरों में, बोल्शेविको ने पारिवारिक आवश्यकताओं के अनुसार बड़े घरों के विभाजन को लागू किया। उन्होंने अभिजातवर्ग के पुराने शीर्षकों के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया। परिवर्तन का दावा करने के लिए, सेना और अधिकारियों के लिए नई वर्दी डिजाइन की गई। बोल्शेविक पार्टी का नाम बदलकर रूसी कम्युनिस्ट पार्टी कर दिया गया। गैर-बोल्शेविक समाजवादियों, उदारवादियों और निरंकुशता के समर्थकों ने बोल्शेविक के विद्रोह की निंदा की। उनके नेता दक्षिण रूस चले गए और बोल्शेविक (लाल) से लड़ने के लिए सैनिकों को संगठित किया। 1918 और 1919 के दौरान, 'ग्रीन्स' (सोशलिस्ट क्रांतिकारी) और व्हाइट्स (ज़ार समर्थक) अमेरिकी, ब्रिटिश और जापानी सैनिकों द्वारा समर्पित थे और वे सभी रूस में समाजवाद के विकास पर चिंतित थे।

4.5 सारांश

बोल्शेविक की जीत और मुक्ति आंदोलनों के समर्थन ने उपनिवेशों में साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्षों के तीव्र होने के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण किया। इसने न केवल राष्ट्रवादियों और कम्यूनिस्टों को दुनिया भर में प्रेरित किया, बल्कि उन्हें उपनिवेशवाद-विरोधी मंच पर एक साथ लाने में मदद की। शांति की बोल्शेविक नीति और विशेषाधिकार और गुप्त कूटनीति के त्याग ने अंतर्राष्ट्रीय संबंध की वैकल्पिक व्यवस्था बनाई। अंतर्राष्ट्रीय संबंध की संरचना में भारी बदलाव आया। यूरोप में मौजूदा समाजवादी दलों ने बोल्शेविकों के सत्ता संभालने और उसे बनाए रखने के तरीके को पूरी तरह से स्वीकार नहीं किया। कई देशों में, कम्युनिस्ट पार्टियों का गठन किया गया था – ब्रिटेन की कम्युनिस्ट पार्टी की तरह। बोल्शेविक ने अपने प्रयोग का अनुसरण करने के लिए औपनिवेशिक लोगों को प्रोत्साहित किया। दूसरे विश्वयुद्ध के समय तक यूएसएसआर ने समाजवाद को एक वैश्विक चेहरा और विश्व का कद दिया था।

4.6 संदर्भ

अर्जुन देव और इंदिरा अर्जुन देव. (2009). *हिस्ट्री ऑफ दि वर्ल्ड.* हैदराबाद : ओरिएँट ब्लैकस्वान.

अली, अन्ब्रफ जी.ए. सोमिन. (सं.). (1977). *ओक्टोबर रेवलूशन एंड डंडियाज़ इंडिपेंडेस,* दिल्ली : स्टर्लिंग पब्लिशर्स.

चेम्बरलेन, लेस्ली. (2017). *आर्क ऑफ यूरोपिया : द ब्यूटीफुल स्टोरी ऑफ द एशियन रिवॉल्यूशन*, लंदन : रिटेकेशन बुक्स.

कार, ई. एच. (1985). *द बोल्शेविक रेवलूशन : 1917–1921*. न्यूयार्क : डब्ल्यू डब्ल्यू नॉर्टन एण्ड कंपनी.

लोव, नॉर्मन. (1997) *मास्टरिंग मॉर्डन वर्ल्ड हिस्ट्री*. गुड़गाँव : मैकमिलन पब्लिशर्स.

मैकमीकिन, सीन. (2017). *रसिया रेवलूशन–ए नयू हिस्ट्री*. न्यूयार्क : बेसिक बुक्स.

मिलरोखिन, एल. बी. (1981). *लेनिन इन इंडिया*. दिल्ली : अलाइड पब्लिशर्स.

4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) गुप्त गठबंधनों को नकारा और गुप्त संधियों जो ज़ार ने की थी, उन्हें उजागर किया। राष्ट्रीय अल्संख्यकों के आत्मनिर्णय के अधिकार का समर्थन किया। विशेषाधिकारों का त्याग किया।

बोध प्रश्न 2

1) भ्रातृवादी कम्युनिस्ट पार्टियों का एक संगठन था जो दुनिया भर में समाजवादी क्रांति के लिए समर्पित था।

इकाई 5 फासीवाद और नाजीवाद का उदय*

संरचना

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 इटली : भूमध्यसागरीय कैदी

5.2.1 मुसोलिनी और फासीवाद पार्टी का उदय

5.2.2 इटली में फासीवाद के उदय के कारण

5.2.3 इटली में फासीवाद का प्रभाव

5.2.4 फासीवाद विचारधारा

5.3 हिटलर और नाजी पार्टी का उदय

5.3.1 जर्मनी के नाजीवाद के उदय के कारण

5.3.2 नाजीवाद का प्रभाव

5.3.3 नाज़ी सिद्धांत

5.4 सारांश

5.5 संदर्भ

5.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

इस इकाई में, आप यूरोप में फासीवाद और नाजीवाद के उदय और अंतर्राष्ट्रीय संबंध पर उनके प्रभाव के बारे में अध्ययन करेंगे। इस इकाई के माध्यम से आप निम्नलिखित समझ पाएंगे :–

- फासीवाद और नाजीवाद के उदय का कारण;
- फासीवाद और नाजीवाद की विदेश नीति और अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण;
- द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत; तथा
- फासीवाद और नाजीवाद का सिद्धांत।

5.1 प्रस्तावना

फासीवाद और नाजीवाद यद्यपि वैचारिक रूप से इटली और जर्मनी में क्रमशः अंतर-युद्ध काल के दौरान उभरे और द्वितीय विश्व युद्ध के अग्रदूत बने। 1922 में इटली में एक फासीवाद राज्य की स्थापना की गई। 1933 में नाजी जर्मनी में सत्ता में आए। फासिस्ट शब्द की उत्पत्ति इतावली शब्द फैसियो से हुई थी, जिसका शाब्दिक अर्थ था 'बंडल' और लाक्षणिक रूप से छड़ और कुल्हाड़ी का एक बंडल जो पार्टी के झण्डे के लिए एक प्रतीक बना। इटालियंस को इसने राष्ट्रीय एकता और ताकत का सुझाव दिया। बेनिटो मुसोलिनी ने 1919 में अपनी फासिस्ट पार्टी बनाई थी। नाजी नेशनल

* डॉ. आलोक कुमार गुप्ता, राजनीति अध्ययन केंद्र, दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय, गया

सोशलिस्ट जर्मन वर्कर्स पार्टी ऑफ एडाल्फ हिटलर के सदस्यों से जुड़ा एक शब्द था। (नाज़ी कहलाना उस समय अपमानजनक शब्द नहीं था, बल्कि इसका इस्तेमाल ऐसे व्यक्ति के लिए किया जाता था, जो कट्टरता के लिए समर्पित था, या किसी गतिविधि पर नियंत्रण पाने की कोशिश करता था)।

1919 में इटली राजनीतिक रूप से असंतुष्ट और आर्थिक रूप से बिखर गया था। वह युद्ध उपरांत कमजोरी से पीड़ित हो गई और एक आक्रामक और महत्त्वाकांक्षी राजनीतिक कार्यक्रम का आसान शिकार हो सकती थी। इटली अपने गरीब किसानों और श्रमिकों के लिए युद्ध के बाद बहुत कुछ पाने की आशा और महात्वाकांक्षाओं के साथ प्रथम विश्व युद्ध (1914-18) में शामिल हुआ था। हालांकि, युद्ध ने इटली को बहुत भ्रम, निराशा और बेरोजगारी प्रदान की। 1919 का शांति समझौता जिसे वर्साय की संधि के नाम से जाना जाता है, इटली के लिए भी असंतोषजनक था। दूसरी ओर प्रथम विश्वयुद्ध में जर्मनी की हार के बाद कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं को देखा था जैसे वर्साय की संधि, फ्रांस और जर्मनी के बीच सदियों पुरानी प्रतिद्वंद्विता की निरंतरता, रूस में पहले समाजवादी राज्य का उद्भव और 1930 के दशक में आर्थिक मंदी।

ये घटनाक्रम इटली में फासीवाद और जर्मनी में नाजीवाद के उदय के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार थे। 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत के लिए फासीवाद और नाजीवाद मुख्य रूप से जिम्मेदार थे।

5.2 इटली : भूमध्यसागरीय कैदी

यूरोप के दक्षिणी भाग में स्थित, इटली की भौगोलिक स्थिति इसकी बाहरी नीतियों के सबसे मजबूत निर्धारकों में से एक है। इटली के मुख्य भूमि एक संकीर्ण प्रायद्वीप है और समुद्री तट की दूरी 75 मील से अधिक नहीं है। यह इस तरह से स्थित है कि इसे समुद्र से आसानी से अवरुद्ध किया जा सकता है। इसीलिए इसे 'भूमध्यसगरीय कैदी' के रूप में वर्णित किया गया है। इसका मतलब है कि यदि भूमध्यसागरीय एक दुश्मन द्वारा नियंत्रित किया गया था, तो इटली के पास युद्ध पर जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। तद्नुसार, इटली ने हमेशा एक भूमध्यसागरीय शक्ति बनने की महत्त्वाकांक्षा कायम की है और अपने वाणिज्यिक और समुद्री हितों की रक्षा के लिए अपना वर्चस्व स्थापित किया है। यह गौरव और आकांक्षाएँ थीं जो इटालियंस के बीच मजबूत राष्ट्रवादी उत्साह के लिए एक मजबूत प्रेरक कारक रही हैं। बेनिये मुसोलिनी एक राष्ट्रवादी भावना को समझने के लिए पर्याप्त बुद्धिमान था और सत्ता पर कब्जा करने और तानाशाह इटली को संचालित करने के लिए उसी पर पूंजी लगायी।

5.2.1 मुसोलिनी और फासिस्ट पार्टी का उदय

आर्थिक संकट ने इटली में समाजवादियों और क्रांतिकारियों के उदय की सुविधा प्रदान की। मजदूर और खेतिहर मजदूर द्वारा अक्सर ग्रामीण इलाकों की सड़कों पर राज्य कुकृत्यों के खिलाफ विरोध-प्रदर्शन किया जाता था। कारखाने के मालिकों और जमींदारों को श्रमिकों के लिए उच्च मजदूरी और कम काम के घंटे देने के लिए मजबूर किया जा रहा था। कम्युनिस्ट इंटरनेशनल (कोमिन्टर्न) की स्थापना ने इतावली सोशलिस्ट पार्टी (आई एस पी) को प्रेरित किया और यह उसी से संबद्ध हो गया। आई एस पी ने इटली में 'डिक्टेटरशिप ऑफ द सर्वलेरिएट' की स्थापना के लिए एक

आह्वान किया। इसने नवंबर 1919 के चुनाव भी लड़े और एक तिहाई मत हासिल किया, जो कि निम्न सदन-चैंबर ऑफ डेप्यूटीज के निचले सदन में एकल सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी। जल्द ही कैथोलिक किसानों ने धार्मिक रूढ़िवाद से प्रेरित होकर, मध्य और दक्षिणी इटली में जमींदारों की भूमि को जब्त कर लिया। सितंबर 1920 में समाजवादी कार्यकर्ताओं में उत्तरी इतालवी शहरों के कारखानों को जब्त कर लिया तथा नियंत्रित किया।

प्रधानमंत्री फ्रांसिस्को नीटी (1919-20) की उदार सरकार और फिर गियोवन्नी गियोलिएट (1892 और 1921 के दौरान पाँच बार के प्रधानमंत्री) असहाय हो गए और हिंसक क्रांति के डर से किसी भी कार्रवाई करने से परहेज करने लगे। हालांकि, समाजवादियों में परिणामी गिरावट के साथ विभाजन देखा गया। क्रांतिकारी समाजवादियों ने जनवरी 1921 में एक अलग कम्युनिस्ट पार्टी का गठन किया। समाजवादी विद्रोह ने जमींदारों और उद्योगपतियों को चौंका दिया। नतीजतन, उन्हें एक देशभक्त और राष्ट्रवादी आंदोलन में शरण मिली, जो बेनिटो मुसोलिनी के नेतृत्व में बढ़ रहा था। राष्ट्रवादियों ने इटली की खोई हुई प्रतिष्ठा और राष्ट्रों के बीच सम्मान के लिए उचित सम्मान पाने का वादा किया। यह इस पृष्ठभूमि में था कि मुसोलिनी के नेतृत्व में इटली में फासीवाद का उदय हुआ।

बेनिटो मुसोलिनी, 1883 में, समाजवादी झुकाव वाले लोहार के यहाँ पैदा हुए जो फासीवाद आंदोलन के निर्माता, आत्मा और मार्गदर्शक बने। मुसोलिनी ने एक समाजवादी आंदोलनकारी के रूप में अपना राजनीतिक जीवन शुरू किया और बाद में स्विट्जरलैण्ड के लिए उन्हें निर्वासित किया गया था। 1912 में, उसने इतालवी आक्रामकता का विरोध किया, तुर्की के खिलाफ था, और बंदी बनाया गया। उन्होंने कहा कि सहयोगी दलों के पक्ष में इटली भाग ले जब प्रथम विश्वयुद्ध 1914 में शुरू किया था। अंत में उन्हें समर्थन युद्ध के कारण सोशलिस्ट पार्टी छोड़नी पड़ी और बाद में सेना में शामिल होकर युद्ध में भाग लिया। वह 1917 में कार्रवाई में जख्मी हो गया। इसके बाद, वह साम्यवाद का कट्टर दुश्मन बन गया और अपने पूरे जीवनकाल में उसने इसके खिलाफ लड़ाई लड़ी।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान और उसके तुरंत बाद इटली में मौजूद परिस्थितियाँ बेनिटो मुसोलिनी के अधीन फासीवादी तानाशाही के उदय के लिए अत्यधिक अनुकूल थीं। उन्होंने मार्च 1919 में देशभक्तों और बुद्धिजीवियों के पहले 'फासी' या क्लब की स्थापना की और इस तरह इटली में फासिस्ट आंदोलन शुरू किया। वह बेरोजगार युवाओं और पूर्व सैनिकों के लिए रैली का केंद्र बन गया। उन्होंने उद्योगपतियों और जमींदारों से धन प्राप्त किया। उसने इन लोगों की ओर से समाजवाद के खिलाफ उत्तर दिया। सेना के अधिकारियों ने मुसोलिनी को हथियार और गोला बारूद प्रदान किया। जिसके साथ उन्होंने राजनीतिक विरोधियों की बैठकें तोड़ दीं। पार्टी के अनुयायी और कार्यकर्त्ता अनुशासन के साथ उत्साहित थे। स्वयंसेवकों को उनकी पोशाक के लिए 'ब्लैक शर्ट्स' के रूप में जाना जाता था और उनके ड्यूस (नेता) को पुराने रोमन फैशन में खिंचे हुए हाथों से सलामी देते थे। इस प्रकार फासीवादी अर्ध-सैन्य संगठन बन गए। फासीवादियों की बढ़ती आक्रामकता के कारण दूसरे दलों के पतन के बाद, कम्युनिस्ट विशेष लक्ष्य बन गए।

फासीवादियों ने 1921 के चुनावों में चैंबर ऑफ डेप्युटी में 122 समाजवादियों और कम्युनिस्टों के खिलाफ 35 सीटें जीतीं। मुसोलिनी ने 28 अक्टूबर 1922 को नेपल्स

में एक राष्ट्रीय फासीवादी कांग्रेस का आयोजन किया और अपने लोगों के साथ 'मार्च ऑन रोम' की धमकी दी जब तक कि सरकार का शासन उन्हें नहीं सौंपा गया। धमकी भरे भाषण देने के बाद वह मिलान के लिए निकल पड़ा। जबकि हजारों सशस्त्र फासीवादी रोम पर ध्यान केंद्रित करने लगे। इस प्रकार, अक्टूबर 1922 में फासीवादियों ने बल द्वारा सरकार को उखाड़ फेंकने का पर्याप्त प्रयास किया। इस बीच, सरकार ने मार्शल लॉ घोषित करने का फैसला किया। लेकिन किंग विक्टर इमैनुएल तृतीय ने घोषणा पर हस्ताक्षर करने से इंकार कर दिया। उदार सरकार ने 27 अक्टूबर 1922 को इस्तीफा दे दिया और 29 अक्टूबर 1922 को राजा ने मुसोलिनी को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया। मुसोलिनी रोम के लिए चल पड़ा और घोषणा की कि 'इटली के पास मंत्रालय नहीं, बल्कि सरकार होगी। संसद ने मुसोलिनी को तानाशाही शक्तियाँ सौंपीं और इस तरह इटली में फासिस्ट तानाशाही शुरू हो गई।

मुसोलिनी की गठबंधन सरकार को 306-116 मतों के हिसाब से चैंबर ऑफ डेप्यूटी द्वारा मंजूरी दी गई थी। इटालियंस ने भी फासीवादी क्रांति को अपनी मंजूरी दे दी और उनसे एक दृढ़ और मजबूत सरकार की उम्मीद की, जैसा कि उनसे वादा किया गया था। 1922 से 1943 तक मुसोलिनी की तानाशाही के तहत फासिस्ट पार्टी सत्ता में थीं। मुसोलिनी द्वारा इक्कीस साल के शासन में राष्ट्र को पूरी तरह से फासीवादी विचारधारा में परिवर्तित कर दिया, हालांकि वास्तव में 20,000,000 फासिस्टों का अल्पसंख्यक मजबूत हिस्सा सक्रिय थी, जबकि अधिकांश लोग केवल नए शासन को स्वीकार करने के लिए बाध्य थे। मुसोलिनी, हिटलर से जुड़ गया और 1940 में युद्ध में प्रवेश किया। इटली को हालांकि, 1943 में हराया गया था और मुसोलिनी का शासन समाप्त कर दिया गया था।

5.2.2 इटली के उदय के कारण

क) **वर्साय की संधि** : वर्साय शांति संधि ने इटालियंस को निराश किया था क्योंकि यह जर्मन विदेशी क्षेत्रों में कोई भी हिस्सा प्राप्त नहीं कर सका था जिसे अन्य संबद्ध शक्तियों ने सुरक्षित कर लिया था। 1915 की लंदन की गुप्त संधि के बाद इटली मित्र राष्ट्रों में शामिल हो गया था। मित्र राष्ट्रों ने इटली को इरिट्रिया और ट्रिएस्ट जैसे कुछ क्षेत्रों को देने पर सहमति व्यक्त की थी और बाद में उसका समर्थन किया था। इसने मित्र राष्ट्रों के खिलाफ इटली की शिकायत का औचित्य दिया। इटली के सैन्य नेता निराश थे क्योंकि जीत ने उनके देश को किसी भी तरह से लाभ नहीं पहुँचाया था।

ख) **इटली की सामाजिक-आर्थिक स्थिति** : 1919 में इटली के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन में भयानक अव्यवस्था थी। युद्ध के कारण आर्थिक संरचना ध्वस्त हो गई थी और प्राकृतिक संसाधनों की कमी हो गई थी। यह फासीवाद के समर्थकों द्वारा तर्क दिया गया था कि ऐसे भयानक परिस्थितियों में इटली को वास्तव में फासीवादी क्रांति द्वारा बचाया जाएगा। हालांकि, विद्वानों के एक समूह ने तर्क दिया है कि युद्ध के बाद इटली की आर्थिक स्थिति, यानी 1919-1922 के बीच में काफी सुधार हुआ था। इसलिए वे इस पर विवाद करते हैं कि युद्ध के बाद की स्थिति ही अकेले इटली में फासीवाद के उदय के लिए जिम्मेदार थी। अल्पकालिक युद्ध के बाद की आर्थिक समृद्धि के बावजूद, पूरे इटली में आर्थिक स्थिति संतोषजनक नहीं थी और वहाँ बेरोजगारी थी। इससे

क्रांतिकारी आंदोलनों को मजबूती मिली, खासकर क्रांतिकारी आंदोलनों और कम्युनिस्ट पार्टी के प्रभाव को बढ़ाने में। हड़तालें, तालाबंदी और औद्योगिक प्रतिष्ठानों को बंद किया गया। राजनीतिक स्तर पर, सरकार स्थिति को बचाने में सक्षम नहीं थी क्योंकि प्रशासनिक अक्षमता और अव्यवस्था के कारण अराजकता और भ्रष्टाचार से संसदीय संस्थानों में विश्वास की हानि हुई। इस तरह की स्थिति ने मध्यवर्गीय और समृद्ध लोगों को भयावह कर दिया, जो बोल्शेविक क्रांति से डरे हुए थे। रूसी क्रांति की सफलता उन्हें घर पर कम्युनिस्टों के इरादों के बारे में संदेह करने के लिए एक और कारक थी।

ग) **समाजवाद और राष्ट्रवाद** : ये दो कारक विशेष रूप से यूरोप में किसी भी अन्य देश की तुलना में इटली में अधिक प्रमुख थे। फ्रांस और इंग्लैंड की तुलना में इटालियंस जीत के नुकसान के लिए असंतुष्ट तत्व थे, जिसने उन्हें अमीर पश्चिमी देशों के बीच गरीब रिश्तेदारों की तरह महसूस कराया। इसने 1920 के बाद से राष्ट्रवादियों और समाजवादियों जैसी विरोधी ताकतों को जमीन प्रदान की, जिससे कि प्रधानमंत्री गियोलित्ती की सरकार को युद्ध के बाद की इटली की बढ़ती सामाजिक-आर्थिक समस्याओं को हल करने में असमर्थता के लिए सरकार को बदनाम करना पड़ा। हिंसा और विद्रोह के माहौल के बीच में दोनों दल एक-दूसरे के खिलाफ भी लड़ रहे थे। इस मौके पर मुसोलिनी समाजवाद और राष्ट्रवाद के परस्पर विरोधी ताकतों के बीच सामंजस्य स्थापित करने के दावों के साथ सामने आया। उनकी नई राजनीतिक पार्टी ने राष्ट्रवाद और समाजवाद को एक साथ लाने का सुझाव दिया।

घ) **साम्यवाद का उदय** : मुसोलिनी ने दावा किया कि इटली में युद्ध के बाद की अशांति और असंतोष देश को साम्यवाद की ओर अग्रसर कर रहे थे और उनकी पार्टी, फासिसटी, अकेले ही समाज को साम्यवाद के खतरे से बचा सकती थी। फासीवाद कार्यकर्त्ताओं, ब्लैक शर्ट्स ने समाजवादियों और कम्युनिस्टों के खिलाफ एक हिंसक अभियान खोला। नतीजतन, 1921 में गियोलिटी की गठबंधन सरकार को हार मिली और फासिस्टों ने 35 सीटों के साथ चैंबर ऑफ डेप्यूटी में प्रवेश किया।

ड़) **इटालियंस की झूठी आकांक्षाएँ** : 1919 के शांति समझौते में हाशिए पर जाने और बाद में नुकसान के कारण निराशा की भावना ने इटालियंस के बीच एक भावना छोड़ दी कि हालांकि इटली ने युद्ध जीत लिया था, लेकिन यह शांति खो चुका था। मुसोलिनी द्वारा इटालियंस की निराशाओं और कुंठाओं का पूरी तरह से शोषण किया गया था। वह न केवल अपने नेतृत्व में लोगों को एकजुट करने में सफल रहा, बल्कि इटली पर अपनी व्यक्तिगत पकड़ बढ़ाने में भी सफल रहा। लोगों को यह एहसास था कि उनकी उच्च महत्त्वाकांक्षाएँ जो लोकतांत्रिक इटली के तहत हासिल नहीं की जा सकती हैं, उन्हें फासिस्ट इटली के तहत साकार किया जाएगा।

5.2.3 इटली में फासीवाद का प्रभाव

1) **अधिनायकवाद का उदय** : मुसोलिनी ने संसद पर हावी होने के अपने हितों के अनुरूप कानूनों को बदल दिया। उन्होंने अपने को छोड़कर सभी राजनीतिक दलों को भंग कर दिया। फासीवादियों ने विरोधियों को आतंकित करना शुरू कर दिया,

जिससे उनमें से अधिकांश इटली से भाग गए। समाजवादी नेता जियाकोमो माटेओटी को रहस्यमय तरीके से मार दिया गया था। उन्होंने 1929 में चैंबर ऑफ डेप्यूटी को समाप्त कर दिया। फासीस्ट ग्रैण्ड काउंसिल को शीर्ष पर ड्यूस (नेता) के साथ कानून बनाने के लिए स्थापित किया गया था, जिसमें उनके साथ विदेश मंत्रालय, आंतरिक उपनिवेश, युद्ध, वायु और समुद्री जैसे अधिकांश महत्त्वपूर्ण विभाग थे। कृषि और औद्योगिक प्रस्तुतियों को बढ़ाने के लिए हड़ताल और तालाबंदी को अवैध घोषित किया गया। इटली के जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों को राज्य द्वारा नियंत्रित किया जा रहा था।

2) **क्षेत्रीय विस्तार** : मुसोलिनी ने धीरे-धीरे पिछली सरकार की कमजोर विदेश नीति को बदल दिया और इटली को एक विश्व शक्ति बनाने की कोशिश की। जनसंख्या में वृद्धि, औद्योगिक विकास के लिए कच्चे माल की आवश्यकता, इटली के लिए क्षेत्रीय विस्तार करना अनिवार्य कर दिया। इस प्रकार इटली ने फ्रांस के खिलाफ इंग्लैंड के इस्तेमाल की नीति को अपनाया, जर्मनी के खिलाफ फ्रांस और इंग्लैंड, सोवियत संघ के खिलाफ इंग्लैंड, फ्रांस और जर्मनी इस प्रकार प्रमुख यूरोपीय शक्तियों को विभाजित करने और आक्रमण एवं विजय के माध्यम से व्यवस्थित नीति के माध्यम से, मुसोलिनी इतावली क्षेत्रों का विस्तार करने में सफल रहा।

3) **आक्रामक विदेश नीति** : मुसोलिनी ने महत्त्वाकांक्षी विदेश नीति को अपनाया और युगोस्लाविया को फिमें बंदरगाह को सौंपने के लिए राजी किया और 1924 में इसे हासिल कर लिया। उन्होंने 1926 में अल्बानिया में एक संरक्षतित राज्य की स्थापना की और बाद में 1939 में इसे रद्द कर दिया। उन्होंने इंग्लैंड और फ्रांस के साथ बातचीत के माध्यम से पूर्वी अफ्रीका और लीबिया के निकट कुछ क्षेत्रों का भी अधिग्रहण किया। 1936 में एबिसिनिया पर विजय प्राप्त की, जिसने राष्ट्र संघ की मृत्यु की घोषणा की।

4) **द्वितीय विश्व युद्ध का कारण बना** : मुसोलिनी 1939 में जर्मनी और जापान के कम्युनिस्ट-विरोधी समझौते में शामिल हो गया। इस प्रकार बर्लिन-टोक्यो-रोम एक्सिस के रूप में सामने आया। स्पैनिश गृहयुद्ध के दौरान, इटली ने जनरल फ्रेंको की मदद की। गृह युद्ध में जनरल की जीत ने पश्चिमी भूमध्यसागर में इटली की स्थिति को मजबूत किया। इटली अब जर्मन शिविर में था। इसके बाद, इटली ने 1938 में 1935 की फ्रांस के साथ की गई संधि की निंदा की। इटली युद्ध के रास्ते पर था, जब मई, 1939 में उसने जर्मनी के साथ एक औपचारिक सैन्य समझौता किया।

5) **इटली का आर्थिक पुनर्निर्माण एक सफलता थी** : इतालवी उद्योगों और कृषि ने फासिस्ट शासन के तहत एक महान प्रगति की। उन्होंने जलविद्युत परियोजनाएँ विकसित कीं और उद्योगों को सुविधा प्रदान की। ऑटोमोबाइल उद्योगों ने तेजी से प्रगति की। संचार के साधनों में भी सुधार हुआ। रेलवे का आधुनिकीकरण किया गया। समुद्री और व्यापारिक नौसेना जहाजों के अधिक प्रेरणा के साथ विकसित की गई थी।

5.2.4 फासीवाद विचारधारा

जियोवानी जेंटाइल (1875-1944) फासीवादी सिद्धांत के प्रमुख प्रतिपादक थे और हेगेल के शिष्य होने के साथ-साथ बेनिटो मुसोलिनी के महान् प्रशंसक भी थे। उन्होंने अपने दर्शन को इस प्रकार वर्णित किया था – बुद्धिजीवी-विरोधी, प्राधिकरण की संपूर्ण अधीनता और तर्क की अवमानना। उनका मानना था कि व्यक्ति और राज्य के बीच कोई विरोधाभास नहीं था और 'राज्य की अधिकतम ताकत के साथ अधिकतम स्वतंत्रता का मेल होता है।' जेंटाइल फासीवाद का आधिकारिक दार्शनिक बन गया और इसे 'जीवन की कुल अवधारणा के रूप में वर्णित किया।' उन्होंने आगे 1928 में समझाया कि फासीवाद एक दार्शनिक प्रणाली नहीं बल्कि कार्य योजना थी।

मुसोलिनी ने दावा किया कि फासीवादी राज्य एक बड़ी और नई सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक प्रणाली बनाने के लिए था क्योंकि उदारवादी, लोकतांत्रिक और समाजवादी या कम्युनिस्ट प्रणाली सब दोषपूर्ण थी। इसने अपने अधिकारों के बजाय नागरिकों के कर्त्तव्यों के बारे में दृढ़ता से वकालत की।

फासीवादी लोकतंत्र, उदारवाद और समाजवाद के सभी रूपों के विरोधी थे, चाहे वह क्रांतिकारी हो या विकासवादी। लोकतंत्र बेवकूफ, भ्रष्ट, धीमी गति से बढ़ने और सरकार के सबसे खराब रूप में देखा गया। बेकार की बात करने वाली दुकान के रूप में संसद का मज़ाक उड़ाया गया। उन्होंने मार्क्सवाद की वकालत को अस्वीकार कर दिया कि जीवन में सब कुछ आर्थिक कारकों द्वारा निर्धारित किया गया था और कहा गया कि 'आर्थिक भलाई मनुष्य को जानवरों के स्तर पर ला देगी।' फासीवादियों ने भी वर्ग युद्ध के विचार को खारिज कर दिया और राज्य के गौरव में समाज के सभी क्षेत्रों के बीच सहयोग के लिए खड़े हुए।

फासीवाद संकीर्ण और चरम राष्ट्रवाद पर आधारित था। राज्य के प्रति पूर्ण प्रतिबद्धता नागरिकों का परम कर्त्तव्य था। फासीवाद अंतर्राष्ट्रीय शांति और सौहार्द का भी विरोधी था और एक राष्ट्रीय नीति के रूप में युद्ध की वकालत करता था, क्योंकि यह अकेले ही राष्ट्र की ताकत का प्रदर्शन करने का अवसर प्रदान करता है। उन्होंने कहा, पुरुषों के लिए युद्ध का वही महत्व है जो महिलाओं के लिए मातृत्व का है। इसलिए क्षेत्रीय विस्तारवाद फासीवाद की घोषित नीति थी।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर के लिए सुझावों के लिए इकाई का अंतिम भाग देखें।

1) इटली में फासीवाद के उदय के कारण क्या थे?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) फासीवाद सिद्धांत की मुख्य विशेषताएं बताएँ।

.....

.....

.....

.....

.....

5.3 हिटलर और नाज़ी पार्टी का उदय

एडोल्फ़ हिटलर अपने मीन कैम्फ (मेरा संघर्ष) में लिखते हैं, ''सबसे खराब तत्वों की प्रमुख गतिविधि द्वारा पतन की अवधि को चिन्हित किया जाता है।'' यह इन परिस्थितियों में था कि उनकी अपनी पार्टी जर्मनी में उभरी। जर्मन साम्राज्य के खंडहरों पर कई दल और गुट उभरे, जिनमें से प्रत्येक में सत्ता पर कब्जा करने की दृढ़ इच्छाशक्ति थी। कम्युनिस्टों ने क्रांतिकारी तरीकों से इस मुकाम को हासिल करने की कोशिश की। प्रतिक्रियावादी तत्वों ने बीमार गणराज्य की विफलता का लाभ उठाया और समाजवादियों के खिलाफ शत्रुतापूर्ण प्रचार किया। सत्ता पर कब्जा करने के लिए उन्होंने समाजवादियों, कैथोलिकों और यहूदियों को दोषी ठहराया, यह कहते हुए कि उन्होंने 1914-18 के युद्ध के दौरान जर्मनी की 'पीठ में छुरा घोंपा था'। यह प्रचार लाखों मध्यम वर्ग के जर्मनों के लिए बहुत प्रभावी हो गया जो आर्थिक संकट (1921-23) के कारण कंगाल बनने की कगार पर थे। वे राष्ट्रीय समाजवादियों की श्रेणी में शामिल होने लगे। इन राष्ट्रीय समाजवादियों का समर्थन जर्मनी के भू-अभिजात वर्ग द्वारा किया जा रहा था, जो समाजवादियों के विस्तार से सदमें में थे। नेशनल सोशलिस्टस के नेता एडोल्फ हिटलर ने 1923 में तख्तापलट के कारण सत्ता पर कब्जा करने की कोशिश की लेकिन असफल रहे। हिटलर को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया और उसकी पार्टी पर मुकद्मा चला और उसे भंग कर दिया गया। यह इस कारावास के दौरान था कि उन्होंने मीन कैम्फ लिखी, जो 1926 में प्रकाशित हुई।

एडोल्फ हिटलर : 1889 में जन्में, वह एक ऑस्ट्रियाई थे और जर्मन सेना में शामिल हो गए थे और 'पश्चिमी मोर्चों' पर एक साधारण सैनिक के रूप में लड़े थे। हिटलर एँटोन ड्रेक्सलर द्वारा आयोजित एक समूह में शामिल हो गया, जिसने नाजी आंदोलन शुरू किया। हिटलर उस समूह का प्रभावशाली सदस्य था जिसने जर्मन लोगों से कहा था कि जर्मनी वास्तव में युद्ध में हारा नहीं हुआ था, लेकिन उसे नीचे दिखाया गया था। इस समूह ने तत्कालीन जर्मनों के बीच एक नई भावना का संचार किया और नाज़ी आंदोलन को क्रांतिकारी और उग्रवादी बना दिया। हिटलर ने कहा, 'हमें जो कुछ भी लड़ना है, वह सुरक्षा है, हमारी दौड़ और हमारे राष्ट्र के लिए, उसके बच्चों का पोषण और उसके रक्त की पवित्रता, स्वतंत्रता और पितृभूमि के लिए स्वतंत्रता।' उन्होंने जर्मनों की कोमल भावनाओं के लिए अपील की और उन्हें बताया कि 'जर्मन रीक (Reich) को, एक राज्य के रूप में सभी जर्मनों को शामिल करना चाहिए।' उन्होंने घोषणा की कि राष्ट्रीय समाजवादियों को जर्मन लोगों के लिए उस स्थान का विस्तार करना होगा, जिसमें हमारे लोगों को रहना चाहिए। उसे फ्रांस से बड़ी नफरत थी, जिसे वह जर्मन राष्ट्र का शाश्वत और नश्वर दुश्मन मानता था। उन्होंने वर्साय की संधि की निंदा की और इसके संशोधन की वकालत की।

नाजी पार्टी : नेशनल सोशलिस्ट जर्मन वर्कर्स पार्टी (नाज़ीस) ने 1926 से एक आक्रामक भूमिका निभाई और इसके बाद इसके समर्थकों में वृद्धि हुई। बेरोजगार श्रमिकों और गरीबी से त्रस्त मध्यम वर्ग जर्मनों को पार्टी के नेता के सम्मोहित करने वाले भाषणों ने बहुत प्रभावित किया और जर्मनी के लिए भविष्य की महानता के अपने वादों के द्वारा उन्हें अपनी और खींच लिया। नतीजतन, 1930 के राष्ट्रीय चुनावों में, राष्ट्रीय समाजवादियों ने एक रीच स्टैग में 107 सीटें जीतीं, कुल संख्या 576 सीटें थी। हिटलर ने कहा – 'इस संघर्ष में सिर लुढ़केंगे।' हिटलर ने 1932 में हिंडनबर्ग के खिलाफ राष्ट्रपति पद का चुनाव लड़ा और जर्मन मतों का 37 प्रतिशत हासिल किया। हालांकि वह चुनाव हार गए लेकिन इससे उन्हें यकीन हो गया कि वे जर्मनी के भविष्य के व्यक्ति हैं। 1932 के रीचस्टैग चुनावों ने उन्हें कुल 608 में से 230 सीटें दीं और वे सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरीं। सरकार ने फिर से चुनाव कराने का आदेश दिया जिसमें नेशनल सोशलिस्ट ने 584 के सदन में 196 सीटें जीतीं। हालांकि उनके वोट और ताकत कम हो गई फिर भी वे सबसे बड़ी पार्टी बनी रही। अब चांसलर बनने के लिए हिटलर को राष्ट्रपति ने आमंत्रित किया, जब हिटलर ने संसद की मदद के बिना देश पर शासन करने के लिए शक्तियों की माँग की, तो उसे अस्वीकार कर दिया गया। जनवरी 1933 में हिटलर ने अंततः एक गठबंधन सरकार बनाई। उन्होंने जल्द ही रीचस्टैग के लिए नए चुनावों का आदेश दिया। कुछ बदमाशों द्वारा चुनाव की पूर्व संध्या पर रीचस्टैग इमारत को आग लगा दी और कम्युनिस्टों पर आरोप लगाया और राष्ट्रपति पर आपातकाल की घोषणा पर हस्ताक्षर करने का दबाव बनाया। मौलिक और अन्य सभी प्रासंगिक अधिकारों के साथ संविधान को निलंबित कर दिया गया था। उन्होंने तब अपने राजनीतिक विरोधियों पर अपनी तूफानी टुकड़ी को छोड़ दिया। कम्युनिस्ट पार्टी को कोई अन्य दलों के साथ अवैध और प्रतिबंधित घोषित कर दिया गया था। आतंक का शासन हिटलर और राष्ट्रवादियों द्वारा आयोजित किया गया था। 1934 में जब राष्ट्रपति हिंडनबर्ग की मृत्यु हुई, तो उन्होंने राष्ट्रपति के कार्यालय को चांसलर के साथ जोड़ दिया और खुद जर्मनी के फ्यूहरर (लीडर) बन गए।

5.3.1 जर्मनी में नाजीवाद के उदय के कारण

जर्मनी में नाजीवाद के उदय के मुख्य कारण निम्नलिखित थे : 1) युद्ध और शांति समझौते ने जर्मनी का मोहभंग कर दिया और आध्यात्मिक और भौतिक रूप से कुचल दिया। 2) फ्रांस का निरंतर शत्रुतापूर्ण रवैया, रूहर, राइनलैंड पर कब्जे, सार घाटी पर झगड़े और जर्मनी द्वारा चुकायी गयी क्षतिपूर्ति। 3) सुरक्षा और निरस्त्रीकरण पर न खत्म होने वाली खटपट ने कई जर्मनों का आक्रोश और गुस्सा भड़का दिया। 4) गणतंत्र की अन्यायपूर्ण नीतियों का स्वीकारना, सुलह की नीति तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंध में दृढ़ती की कमी कई जर्मनों के दिल में खटकी। 5) अस्थायी आर्थिक पुनरूद्धार (1924 से 1929) की अवधि के दौरान ये कारक पृष्ठभूमि में बने रहे। इसे पूरी तरह से लागू करने के लिए कुछ वर्षों के कठिन समय और बढ़ती बेरोजगारी की आवश्यकता थी। इन परिस्थितियों का नाजीयों ने प्रचार विधियों, भाषणों, पोस्टर, बैनर, गीत, वर्दी, समारोह, अनुष्ठान, अनुशासन, ऐतिहासिक परंपरा, जर्मनों की नस्लीय श्रेष्ठता के सिद्धांत, यहूदी-विरोध, उत्साह, हिटलर के गतिशील व्यक्तित्व आदि के माध्यम से लाभ लिया गया। लाखों जर्मनों के लिए हिटलर का व्यक्तित्व आकर्षण का प्रमुख बिंदु था। जर्मन दृढ़ता से आश्वस्त थे कि उन्हें एक 'मजबूत आदमी' की आवश्यकता थी जो जर्मनी की शांति, प्रतिष्ठा और समृद्धि को बहाल करें।

5.3.2 नाजीवाद का प्रभाव

नाजी शासन का प्रभाव जर्मनी के लोगों पर प्रत्यक्ष और गंभीर था, जो यूरोप और बाकी दुनिया पर अप्रत्यक्ष और पंगु बना देने वाला था। नाज़ियों ने राष्ट्र की सेवा करने और जर्मन नस्ल की नस्लीय श्रेष्ठता की आड़ में बेईमान, निर्दयी और आतंकवादी तरीके अपनाए। उन्हें जान-माल की कोई परवाह नहीं थी। उनकी कोई राजनीतिक नैतिकता नहीं थी और उन्होंने अपनी पार्टी के विकास के लिए आग लगाने वाले तरीके को अपनाया। आतंकवाद का दायरा बड़ा था जिसने जर्मनी के भीतर एक प्रकार का लघु गृह युद्ध प्रस्तुत किया। लोगों को केवल पार्टी में शामिल होना था और यह समृद्धि उनकी होगी। ऐसे हिटलर के प्रचार के विषय थे। नाज़ी ने पच्चीस सूत्रीय कार्यक्रम को एक ही राज्य में सभी जर्मनों के संघ द्वारा श्रेष्ठ जर्मनी बनाने पर बड़े फोकस के साथ अपनाया।

क) **जर्मनी एक अधिनायकवादी राज्य बन गया** : हिटलर ने अपनी पार्टी के भीतर और बाहर सर्वोच्च शक्तियों को संभालने के बाद सभी विरोधों को कुचलने का फैसला किया। इटली के फासिस्ट राज्य और रूस के सोवियत राज्य की तरह, हिटलर के अधीन जर्मन एक अधिनायकवादी राज्य बन गया। हिटलर ने अपने पहले एक फरमान में घोषणा की, 'जर्मनी में केवल एक राजनीतिक दल है, और वह है राष्ट्रवादी, समाजवादी कार्यकर्ता पाटी'। कम्युनिस्टों और समाजवादियों के व्यापार संघ भंग कर दिए गए, उनके कार्यालयों को सील कर दिया गया और धन को जब्त कर लिया गया। किसी भी रूप में और किसी भी मंच पर संरकार की आलोचनाओं को बर्दाश्त नहीं किया जाना चाहिए था। रीचस्टैग की बैठकें सिर्फ फ्यूहरर की सराहना करने के लिए थीं। हिटलर की इच्छा पार्टी और राष्ट्र की इच्छा थी। हिटलर तानाशाह बन गया और देश के राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में जर्मनी के राष्ट्रीय पुनरुत्थान को निर्देशित करने के लिए आगे बढ़ा। गेस्टापो या जर्मन सीक्रेट पुलिस सर्विस ने फ्यूहरर के सभी विरोधियों को मिटा दिया। किसी भी तरह की व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अस्तित्व समाप्त हो गया। समाचारपत्र या तो नाजीयों के नियंत्रण में थे या समाप्त कर दिए गए थे।

ख) **शून्यवाद का चलन : तर्क नपुंसक है** : आदर्श आधारहीन है तथा नैतिकता का आविष्कार किया जाता है। शून्यवाद को एक विचार के रूप में वर्णित किया जा सकता है कि जीवन या दुनिया का कोई अलग अर्थ या उद्देश्य नहीं है। दुनिया में कोई क्रम या संरचना नहीं है सिवाय इसके कि जो हम इसे प्रदान करते हैं। आतंकवाद और निर्दोष लोगों की हत्या, बंदी शिविरों और गैस कक्षों में विनाशवाद स्पष्ट रूप से सामने आया। शून्यवाद नाजी प्रक्रिया का सार था जिसने व्यक्ति को एक नैतिक प्राणी के रूप में नष्ट करके लाखों लोगों की संगठित हत्याओं के माध्यम से खुद को प्रकट किया। नाजी शून्यवाद का उद्देश्य 'एक मानव को एक गैर-मानव में स्थानांतरित करना और नाजी शासकों के लिए स्वीकार्य होने वाले लोगों के लिए मानव होने की गुणवत्ता को लाना था।

ग) **जर्मनी का पुनः शस्त्रीकरण** : जर्मनी ने खुद का शस्त्रीकरण शुरू कर दिया। भारी आयुध, विशेष रूप से बख्तरबंद कारें, टैंक और हवाई जहाज भारी मात्रा में बनाए जाने लगे। हिटलर और एक दक्ष पायलट, हरमन गोअरिंग को जर्मन वायु सेना का कमांडर नियुक्त किया गया था। नाजियों ने 'गन्स नॉट बटर' का नारा अपनाया। 1935 में जर्मनी ने अनिवार्य सैन्य प्रशिक्षण शुरू किया और हिटलर ने

शांति प्रावधानों को धत्ता बता दिया जो जर्मनी के शस्त्रीकरण को सीमित करते थे। नाजियों ने अपमान के दाग को धोने और वर्साय की संधि को फाड़ने के लिए युद्ध के रास्ते को अपनाया।

घ) **नस्लवाद और यहूदी-विरोधीवाद** : नाज़ी नस्लवाद और यहूदी-विरोधीवाद रोसनबर्ग से प्रभावित था, जिन्होंने प्राचीन काल में ग्रीस और रोम की महान संस्कृतियों के लिए नॉर्डिक जाति की श्रेष्ठता की जिम्मेदार माना था। जर्मन नस्ल के पतन की वजह इसकी निम्न नस्लों के साथ मेल-जोल था। यहूदियों को मुख्य रूप से पतन के लिए जिम्मेदार ठहराया गया था और नार्दिक शुद्धता के खिलाफ उन्हें मुख्य षडयंत्रकारी के रूप में देखा गया था। हिटलर ने भी ऐसे विचारों पर विश्वास किया था जैसे 'लेबेन्सरम', एक राष्ट्र के लिए रहने की जगह। कोई भी राष्ट्र तब तक मजबूत नहीं हो सकता जब तक कि उसकी भूमि उपजाऊ न हो और किसान संतुष्ट न हो। हिटलर ने लोगों को 'कल्चर-क्रिएटर्स', 'कल्चर-बियरर्स' और 'कल्चर-डेस्ट्रॉयर्स' के रूप में वर्गीकृत किया था। (संस्कृति निर्माता, संस्कृति के वाहक और संस्कृति विध्वंसक) आर्य संस्कृति–निर्माता, जिनमें जर्मन, डच और ब्रिटिश शामिल थे। हिटलर यहूदियों को आर्यों के वर्चस्व का दुश्मन मानता था क्योंकि वे जर्मन लोगों की भलाई की तुलना में पैसे और मुनाफे में दिलचस्पी रखने वाले अंतर्राष्ट्रीय बैकरों के एक गिरोह 'संस्कृति पतन' के अवतार थे।

ड़) **स्कूल प्रचार मशीन बन गए** : नाजी शिक्षा का उद्देश्य युवा दिमागों को अच्छे नाजियों में आकार देना था। इसलिए, स्कूलों को प्रचार मशीनों में बदल दिया गया। नस्ल के अध्ययन और आनुवांशिकी जैसे विषयों को शामिल करने के लिए स्कूल पाठ्यक्रम को पुनः व्यवस्थित किया गया। जिन किताबों को अच्छे नाजियों द्वारा पढ़ा नहीं जाना था, उन्हें सार्वजनिक रूप से जलाया गया था। उदार लेखकों को ब्लैक-लिस्टेड (काली सूची) में डाला गया और लेखन को रोकने के लिए मजबूर किया गया था। अतः इस प्रकार, सोच और लेखन को भी नियंत्रित किया गया।

च) **आर्थिक विकास** : 1934 में जब हिटलर ने सत्ता संभाली तो आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ और 'आर्थिक चमत्कार' का श्रेय हिटलर को दिया गया। हिटलर ने अर्थव्यवस्था पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए क्रुप्स जैसे निगमों के हाथों में चार साल की योजनाओं और उद्योगों के केंद्रीकरण की एक शृंखला शुरू की। 1935 के बाद जर्मनी की अर्थव्यवस्था में बड़े पैमाने पर फेरबदल की योजना के कारण जर्मन उद्योगों को भारी रोजगार मिल रहा था। नतीजतन, श्रमिक स्वेच्छा से अपनी स्वतंत्रता के साथ समझौता कर रहे थे और श्रमिकों के संघों ने रोजगार और सामाजिक सुरक्षा के बदले नाजी पार्टी का मोर्चा संगठन बनकर अपनी स्वतंत्रता खो दी। आर्थिक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया में लगभग सभी हितधारकों ने नाजी पार्टी को अपना समर्थन दिया।

छ) **जर्मनी का विस्तार** : नाजीवाद का प्रभाव केवल जर्मनी तक ही सीमित नहीं था, बल्कि इसकी विस्तारवादी नीति ने कई अन्य देशों को प्रभावित किया। इसने बुनियादी मानवीय समानता को नकारा और यहूदियों के उत्पीड़न की वजह बना। 1935 में हिटलर की विस्तारवादी सैन्य नीति के कारण 1936 में राइनलैंड का सैन्यीकरण, 1938 में ऑस्ट्रिया पर कब्जा, 1939 में चेकोस्लोवाकिया पर कब्जा

तथा सितंबर 1939 में पोलैंड पर आक्रमण से द्वितीय विश्वयुद्ध की शुरुआत हुई। 1940 में फ्रांस को जीत लिया गया था, नाजियों ने यूरोप के बड़े हिस्से पर कब्जा करते हुए जून 1941 में सोवियत संघ पर हमला किया और दिसंबर 1941 में संयुक्त राज्य अमेरिका पर युद्ध की घोषणा की।

5.3.3 नाजी सिद्धान्त

नीत्शे, हेगेल और रोसेनबर्ग की शिक्षाओं ने नाज़ीवाद को बहुत प्रभावित किया था। हेगेल ने चरम सैन्यवाद और संकीर्ण राष्ट्रवाद के विचार दिए। नीत्शे के शून्यवाद ने नैतिकता और पुरुषों की गरिमा के पश्चिमी विचारों को खारिज़ कर दिया, जिसके परिणामों की चर्चा ऊपर की गई है।

पहले विरोधियों पर निर्मम हमले का उनका तरीका था। दूसरा 'वर्साय और सेंट जर्मेन की संधि का प्रतिकार था। तीसरा जर्मन उपनिवेशों की बहाली के लिए था ताकि जर्मन लोगों को बनाए रखा जा सके और उनकी अधिशेष आबादी को एक रिहाइश प्रदान किया जा सके। चौथा, यह एक मजबूत केंद्रीय प्राधिकरण और एक राष्ट्रीय सेवा के लिए भी खड़ा था। पाँचवें वे सभी अनर्जित आय को समाप्त करना चाहते थे। उन्होंने सभी जर्मनों को सभी चीजें देने का नाटक किया।

बोध प्रश्न 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर के लिए सुझावों के लिए इकाई का अंत देखें।

1) नाजीवाद के उदय के कारण क्या थे?

.....

.....

.....

.....

.....

5.4 सारांश

फासीवाद और नाजीवाद दोनों का उदय अस्थायी घटना थी, लेकिन विनाशकारी और कुछ स्थायी प्रभाव थे, जो अंतर-युद्ध काल के दौरान अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर उभरे। दोनों ने संपूर्ण यूरोप को सत्तावाद की तरफ घसीटा और द्वितीय विश्व युद्ध का नेतृत्व किया। उन्होंने देश को तबाह कर दिया, एक ऐसे प्राणी के रूप में राष्ट्र का विचार जिसका उद्देश्य व्यक्ति की भलाई से सर्वोच्च था। अधिकारों से अधिक महत्त्वपूर्ण वे कर्त्तव्य हैं जो व्यक्ति राष्ट्र के प्रति समर्पित हैं। एक मजबूत और सैन्य राष्ट्रवाद, क्षेत्रीय विस्तार के लिए युद्ध की तैयारी, नस्लवाद और नस्लीय श्रेष्ठता के सिद्धान्त में सहज विश्वास और अन्य (नाजी जर्मनी के मामले में यहूदियों) के प्रति नफरत और विनाश फासीवाद और नाजीवाद दोनों की पहचान थे। द्वितीय विश्व युद्ध का अंत उनके ताबूत में अंतिम मृत्यु-कील था। दुनिया ने राहत की सांस ली और कहा 'नेवर अगेन' (फिर कभी नहीं)।

5.5 संदर्भ

अर्जुन देव और इंदिरा अर्जुन देव (2009). *हिस्ट्री ऑफ द वर्ल्ड.* हैदराबाद : ओरिएँट ब्लैक्स्वान.

नॉर्मन लोवे. (1997). *मास्टेरिंग मॉडर्न वर्ल्ड हिस्ट्री.* गुड़गाँव : मैकमिलन पब्लिशर्स.

रोजर ग्रिफिन. (सं.). (2009). *फासिज्म.* ऑक्सफोर्ड : ओयूपी.

रोजर, डी. ग्रिफिन. (1993). *द नेचर ऑफ फासिज़्म.* लंदन : रूटलेज.

इयान केरशॉ. (1993). *द नाजी डिक्टेटरशिप.* तीसरा संस्करण. लंदन : एडवर्ड आर्नोल्ड.

एफ. एल. कार्स्टन. (1967). *द राइज़ ऑफ फासिज्म.* लंदन : मेपुएन.

जेरेमी नोक और जेफ्री फ्रिडम. (1974). *डोक्यूमेंटस ऑफ नाजिज्म : 1919-1945.* लंदन : जोनाथन केप.

लकेरूर, डब्ल्यू (सं.). (1979). *नाजिज्म : एक सीर्डस गाइड,* हारमोंसवर्थ : पेंगुइन.

5.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) सामाजिक आर्थिक-स्थिति का पतन साम्यवादियों का बढ़ता प्रभाव।

2) फासिस्ट दर्शन के मुख्य बिंदु – बुद्धिजीवी-विरोध, तर्क की अवमानना और प्राधिकरण के सामने झुकना।

बोध प्रश्न 2

1) वर्साय संधि ने जर्मनी को कुचल दिया, जर्मन संसद का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दृढ़ न हो पाना और ग्रेट डिप्रेशन की वजह से आर्थिक पतन।

इकाई 6 द्वितीय विश्व युद्ध : कारण और परिणाम*

संरचना

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 द्वितीय विश्व युद्ध के कारण और शुरुआत

6.2.1 युद्ध की शुरुआत

6.2.2 यूएसए और यूएसएसआर मित्र राष्ट्र बन गए

6.3 एक्सिस/धुरी राष्ट्रों की हार

6.3.1 इटली और जर्मनी की हार

6.3.2 जापान की हार

6.4 द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शांति बनाना

6.4.1 पॉट्सडैम सम्मेलन

6.4.2 शांति की संधियाँ

6.5 द्वितीय विश्व युद्ध में भारत का योगदान

6.6 महा शक्तियों का उद्‌भव

6.6.1 संयुक्त राज्य अमेरिका परमाणु शक्ति बन गया

6.6.2 सोवियत संघ की संयुक्त राज्य अमेरिका को चुनौती

6.7 सारांश

6.8 संदर्भ

6.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.0 उद्देश्य

इस इकाई में, आप द्वितीय विश्व युद्ध के बारे में पढ़ेंगे, जो सितंबर 1939 में शुरू हुआ था और अगस्त 1945 में समाप्त हो गया था। इस इकाई के माध्यम से आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे :

- द्वितीय विश्व युद्ध के कारणों की व्याख्या करने में;
- कैसे यूएसए और यूएसएसआर सहयोगी बने, यह बताने में;
- युद्ध के परिणाम और युद्ध के अंत में शांति संधियों पर चर्चा करने में; तथा
- दो महाशक्तियों के रूप में यूएसआर और यूएसएसआर के उदय का वर्णन करने में।

* डॉ. वी. एन. खन्ना, देशबन्धु गुप्ता कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

6.1 प्रस्तावना

1939 में 1 सितम्बर को पोलैंड पर जर्मन आक्रमण के साथ द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हुआ। इससे पहले, जर्मनी और सोवियत संघ, पूर्ववर्ती दुश्मनों ने आपस में पोलिश विभाजन के लिए एक गैर आक्रामकता संधि पर हस्ताक्षर किए थे। एक ओर सोवियत संघ तथा दूसरी तरफ ब्रिटेन और फ्रांस के बीच किसी समझ तक पहुँचने के सभी प्रयास बेकार साबित हुए। अंतर्राष्ट्रीय संबंध अभी भी उन्हीं दुष्प्रवृत्तियों की विशेषता थी जो प्रथम विश्व युद्ध के कारण बनीं – क्षेत्रीय विस्तार और यूरोपीय महाशक्तियों के बीच गुप्त संधियां। वास्तव में, सोवियत संघ और जर्मनी के बीच और ब्रिटेन और जर्मनी के बीच भी गुप्त बातचीत चल रही थी। ब्रिटेन और फ्रांस ने सोवियत संघ को हल्के में लिया और उसके साथ सैन्य संगठन समाप्त करने की जहमत नहीं उठी। इसने सोवियत-जर्मन गैर आक्रामकता संधि और पोलैंड पर जर्मन हमले का मार्ग प्रशस्त किया।

द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत से कुछ महीने पहले, ब्रिटेन और फ्रांस दोनों ने पोलैंड को इस बात की गारंटी दी थी कि आक्रमण होने की स्थिति में वे उसे हर संभव सहायता प्रदान करेंगे। जब युद्ध से बचने और पोलैंड की रक्षा करने के सभी प्रयास विफल हो गए थे, तो ब्रिटेन और फ्रांस ने 3 सितंबर, 1939 को जर्मनी पर युद्ध की घोषणा की। कुछ समय के लिए युद्ध में इटली तटस्थ रहा लेकिन आखिरकार जून 1940 में जर्मनी की ओर से युद्ध में शामिल हो गया। जर्मनी द्वारा यूरोप के कई देशों के खिलाफ निर्णायक जीत हासिल करने के बाद, उसने 22 जून, 1941 को सोवियत संघ के खिलाफ भी युद्ध छेड़ दिया। इसने यूएसएसआर को मित्र देशों के शिविर में लाया। 7 दिसंबर, 1941 को पर्ल हार्बर पर जापानी बमबारी के साथ संयुक्त राज्य अमेरिका ने अंततः युद्ध में प्रवेश किया। युद्ध एक तरफ मित्र राष्ट्रों (ब्रिटेन, फ्रांस, सोवियत संघ, अमेरिका और उनके दोस्तों) के बीच और दूसरी तरफ एक्सिस पॉवर्स या धुरी राष्ट्रों (जर्मनी, इटली और जापान) के बीच लड़ा गया था। इसी क्रम में इटली, जर्मनी और जापान के बिना शर्त आत्मसमर्पण के साथ युद्ध समाप्त हो गया।

6.2 द्वितीय विश्व युद्ध के कारण और शुरुआत

आपने द्वितीय विश्व युद्ध के बारे में पढ़ा है जो सितंबर 1939 में पोलैंड पर जर्मन हमले के बाद और जर्मनी के साथ ब्रिटेन और फ्रांस द्वारा युद्ध की घोषणा से शुरू हुआ था। इससे यह आभास होता है कि युद्ध पोलिश विवाद के कारण हुआ था। यह आंशिक रूप से सच है। पोलिश समस्या वास्तव में युद्ध का तत्काल कारण थी, लेकिन कई अन्य कारण थे जिन्होंने युद्ध की स्थिति को अपरिहार्य बना दिया। आइए, हम युद्ध के कारणों के बारे में संक्षेप में चर्चा करें।

क) **वर्साय की संधि** : न्याय, शांति और निरस्त्रीकरण पर आधारित एक आदर्श विश्व व्यवस्था स्थापित करने के लिए 1919 में प्रथम विश्व युद्ध के बाद आयोजित पेरिस शांति सम्मेलन में प्रयास किया गया था। लेकिन, आखिरकार वर्साय की संधि के आकार में जो उभरा, वह जर्मनी पर लागू शांति की एक निर्धारित संधि थी, विजेता प्रतिभागियों में उद्देश्य की ईमानदारी का अभाव था।

पेरिस शांति सम्मेलन पाँच महीने तक चला और इससे चार बड़ी विजयी शक्तियों (ब्रिटेन, फ्रांस, इटली और अमेरिका) का वर्चस्व रहा। पराजित शक्ति में से कोई

भी शांति प्रक्रिया का हिस्सा नहीं था, मित्र राष्ट्रों की ओर से लड़े गए छोटे देशों को भी छोड़ दिया गया था।

एक संप्रभु देश के प्रतिनिधियों द्वारा अपेक्षित सामान्य शिष्टाचार तक जर्मनी को नहीं दिया गया। शांति सम्मेलन जनवरी 1919 में शुरू हुआ था। मित्र देशों द्वारा शांति की संधि का मसौदा जर्मनी के साथ बिना किसी बातचीत के तैयार किया गया था। 7 मई, 1919 को जर्मनी को तीन सप्ताह के भीतर लिखित में दिए जाने वाले अपने सुझाव के लिए मसौदा संधि दी गई। संधि की शर्तों की घोषणा से जर्मनी में नाराजगी का प्रकोप बढ़ गया। जर्मनी ने इन्कार किया कि वह अकेले युद्ध के लिए जिम्मेदार था। जर्मनी ने कई आपत्तियाँ उठाईं और संशोधनों का सुझाव दिया लेकिन, एक संशोधन को छोड़कर, सभी आपत्तियों को एक तरफ रख दिया गया। अंत में, जर्मनी को 28 जून, 1919 को वर्साय की संधि पर हस्ताक्षर करवाए गए। जर्मनों ने इसे 'कड़ा फरमान' कहा, और इस अपमान एवं तिरस्कार को सहन नहीं कर पाया। जबकि जर्मनी के साथ वर्साय संधि पर हस्ताक्षर किए गए थे, मित्र राष्ट्रों ने ऑस्ट्रिया, बुल्गारिया, हंगरी और तुर्की के साथ अलग-अलग संधियों पर हस्ताक्षर किए। जुलाई 1923 में लुसाने की संधि पर हस्ताक्षर होने तक औपचारिक शांति प्रतिक्रिया पूर्ण नहीं हुई थी।

वर्साय की संधि जर्मनी पर एक दंडात्मक संधि थी। (1) अनुच्छेद 231 में जर्मनी को युद्ध अपराधों का दोषी ठहराया गया था। (2) इसे बेल्जियम, चेकोस्लोवाकिया और पोलैंड को अपना क्षेत्र देने के लिए मजबूर किया गया, फ्रांस को अलसास और लॉरेन लौटाया और चीन, प्रशांत महासागर और अफ्रीका में अपने सभी विदेशी उपनिवेशों को मित्र राष्ट्रों को सौंप दिया। (3) जर्मनी को अपनी सेना काफी कम करने के लिए कहा गया था और अपनी खुद की वायुसेना के लिए नहीं। जर्मनी को यह गैर फौजीकरण स्वीकार करना पड़ा और राईन नदी के आस-पास के इलाके पर मित्र राष्ट्रों का कब्जा सहन करना पड़ा। (4) वर्साय संधि ने यूरोप की सीमाओं को पुनः निर्धारित किया। इसने पूर्व ऑस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य को यूगोस्लाविया, पोलैंड और चेकोस्लोवाकिया जैसे राज्यों में परिवर्तित करके छोटे राष्ट्रों का एक अस्थिर संग्रह बनाया। ओटोमन साम्राज्य में, केवल तुर्की का केंद्रीय स्थल बरकरार रह गया था, इसकी शेष यूरोपीय परिधियाँ चली गई और मध्यपूर्वी प्रांतों को राष्ट्र संघ के तहत यूरोपीय 'शासनदेश' के रूप में बनाया गया था। यूरोपीय शक्तियों ने अभी भी शक्तियों के संतुलन का अभ्यास किया, अब कई छोटे राज्यों के साथ सत्ता का संतुलन बनाए रखना अस्थिर हो गया। (5) जर्मनी को कई अरबों का भुगतान करने के लिए कहा गया था 'नागरिक क्षतिपूर्ति के लिए'। कुल क्षतिपूर्ति लगभग 100,000 टन सोने के बराबर थी (बी.बी.सी. : 2 अक्टूबर, 2010)। फ्रांस और ब्रिटेन इस दंडात्मक संधि और यूरोप में व्याप्त अस्थिर शांति के लिए काफी हद तक जिम्मेदार थे। फ्रांस, जर्मनी को निशस्त्र करना चाहता था, इसकी सैन्य क्षमता को घटाना, उसे अपमानित करना और जर्मनी के हाथों अपनी सभी अतीत की हार का बदला लेना चाहता था। युद्ध ने ब्रिटेन को यूरोप पर हावी होने का मौका दिया था और सचमुच इसका पुनर्निर्माण हुआ। यह यूरोप पर अपना वर्चस्व खोना नहीं चाहता था और अमेरिका एवं राष्ट्रपति विल्सन के 14-प्वाइंट कार्यक्रम को संदेह की दृष्टि से देखता था।

ब्रिटिश अर्थशास्त्री जॉन मेनार्ड कीन्स ने पाया था कि जर्मनी संभवतः संपूर्ण यूरोपीय अर्थव्यवस्था के लिए गंभीर जोखिमों के बिना क्षतिपूर्ति में इतना भुगतान नहीं कर सकता था। अमेरिकी राष्ट्रपति हर्बर्ट हूवर ने 1929 की महामंदी के कारण क्षतिपूर्ति को बताया। कई लोगों ने महसूस किया कि जर्मनी सभी क्षतिपूर्ति का भुगतान नहीं कर सकता है। 1924 की डावेस योजना और 1924 की युवा योजना ने ऋण को 112 बिलियन गोल्डमार्क तक घटा दिया, जर्मनी को अपने भुगतान कार्यक्रम को पूरा करने के लिए ऋण दिया गया था। 1929 के विश्व मंदी ने भी यूरोपीय अर्थव्यवस्थाओं को प्रभावित किया। अमेरिकी राष्ट्रपति हर्बर्ट हूवर ने तब जर्मन भुगतान पर एक साल की मोहलत का प्रस्ताव रखा। जर्मनी ने हिटलर के सत्ता में आने पर केवल एक-आठवें हिस्से का भुगतान किया था और किसी भी अधिक भुगतान के लिए मना कर दिया था। अवज्ञा के कार्य ने जर्मनों के राष्ट्रवादी गौरव की अपील बढ़ा दी। हालांकि यूरोपीय मित्र शक्तियों ने हार नहीं मानीं। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जर्मनी को दो राज्यों में विभाजित किया गया था – जर्मनी के पूंजीवादी संघीय गणराज्य और समाजवादी जर्मन लोकतांत्रिक गणराज्य। उत्तराधिकारी राज्य कौन था जो अब क्षतिपूर्ति का भुगतान करेगा? 1953 की लंदन संधि ने दोनों जर्मनी के एकजुट होने तक क्षतिपूर्ति के भुगतान को स्थगित करने पर सहमति व्यक्त की। 1990 में जर्मन क्षतिपूर्ति के साथ ऋण वसूली का सवाल उठा। तब यह सहमति बनी थी, कि परिवर्तित अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों में क्षतिपूर्ति भुगतान को हमेशा के लिए खत्म कर देना चाहिए। हालांकि, यह केवल 2010 में था कि जर्मनी ने 70 मिलियन यूरो का अंतिम भुगतान किया था जो कि ऋणों का ब्याज भुगतान करने के लिए किया था जो कि क्षतिपूर्ति को चुकाने के लिए इसने लिया था।

वर्साय की संधि ने जर्मनी को अपमानित और तिरस्कारित किया। बीस साल बाद, बदला लेने के लिए जर्मनी की बारी थी। हिटलर केंद्र के मंच पर आ गया था, अपने अभिमानी लोगों को अपमान का बदला लेने के लिए नेतृत्व किया और इस तरह द्वितीय विश्व युद्ध का मार्ग प्रशस्त किया।

ख) **सामूहिक सुरक्षा प्रणाली की विफलता** : सामूहिक सुरक्षा प्रणाली एक उल्लेखनीय आदर्श था, जिसे स्थापित करने का वचन विश्व नेताओं ने प्रथम विश्व युद्ध के अंत में गिरवी रखा था। अंतर्राष्ट्रीय आक्रामकता के शिकार को सामूहिक रूप से सुरक्षा प्रदान करना इसका उद्देश्य था। इस प्रकार राष्ट्र संघ के प्रतिज्ञापत्र ने प्रयास किया कि आक्रामकता के मामले में, संघ के सदस्य, अपनी सामूहिक कार्रवाई से, आक्रमणकारी को पीछे हटने के लिए मजबूर करेंगे। यह सामूहिक कार्रवाई या तो आक्रामक के खिलाफ आर्थिक प्रतिबंधों के रूप में हो सकती है, या सैन्य आक्रमण या दोनों। हालांकि, युद्ध के बीच के वर्षों के दौरान, यह साबित हुआ कि लीग एक बड़ी शक्ति के संबंध में एक अप्रभावी संगठन था यदि बड़े देश ने एक छोटे देश के खिलाफ युद्ध किया। 1931 में, जापान ने चीन के खिलाफ आक्रामकता की शुरुआत की और 1932 की शुरुआत में, मंचूरिया को जीतने में कामयाब रहा – जो कि चीन का एक प्रांत था। जापान बहुत चतुराई से लीग को बताता रहा कि मंचूरिया में उसकी कार्रवाई आत्मरक्षा में की गई थी (मंचूरिया में जापानी लोगों के जीवन और संपत्ति की रक्षा करना, यह केवल एक पुलिस कार्रवाई थी न कि आक्रामकता)। जापान, लीग का एक स्थायी सदस्य, मंचूरिया में कठपुतली मंचुको शासन स्थापित करने के लिए आगे बढ़ा।

जब संघ ने सदस्य राष्ट्रों को मंचुको को मान्यता नहीं देने को कहा, तो जापान ने संघ छोड़ दिया लेकिन विजित क्षेत्र पर नियंत्रण बनाए रखा।

बाद में, 1935 में इटली ने अबीसीनिया के खिलाफ युद्ध छेड़ा और उसे हराया, और मई 1936 में औपचारिक रूप से उस देश को इतालवी साम्राज्य में शामिल कर लिया गया। लीग ने सामूहिक सुरक्षा प्रणाली को लागू करने की कोशिश की, इटली को एक आक्रामक देश घोषित किया और आर्थिक प्रतिबंधों की घोषणा की। यह सब से कोई फायदा नहीं हुआ क्योंकि इटली के खिलाफ कोई सैन्य कार्रवाई नहीं की गई थी; जो एक बड़ी शक्ति और लीग काउंसिल का स्थायी सदस्य भी था। इसी तरह, जर्मनी के खिलाफ एक कमजोर लीग ऑफ नेशंस द्वारा कोई कार्रवाई नहीं की गई थीं। जब उसने वर्साय संधि की सैन्य शर्तों को तोड़ा (1935), और लोकार्नो संधि पर खुलकर बातचीत की, राइनलैंड का पुनः फौजीकरण किया, (1936) ऑस्ट्रिया (1938) पर कब्जा कर लिया और चेकोस्लोवाकिया (1938-39) को तहस-नहस कर दिया। इस प्रकार, सामूहिक सुरक्षा प्रणाली की विफलता द्वितीय विश्व युद्ध का एक प्रमुख कारण बनी।

ग) **निरस्त्रीकरण की विफलता** : पेरिस शांति सम्मेलन में इस बात की सहमति हुई कि विश्वशांति तभी सुनिश्चित हो सकती है, जब राष्ट्र अपनी सेनाओं को उनकी घरेलू सुरक्षा या रक्षा के अनुरूप एक बिन्दु तक कम कर दें। इसका मतलब है कि आक्रामक प्रकृति के सभी हथियारों को नष्ट किया जाना था। हथियारों की कमी के लिए एक योजना तैयार करने का कार्य राष्ट्र संघ को सौंपा गया था। लीग ने 1920 में अस्थायी मिक्सड (Mixed) आयोग को नियुक्त किया, जो हालांकि कोई बड़ा काम नहीं कर सका क्योंकि फ्रांस ने निरस्त्रीकरण से पहले सुरक्षा पर जोर दिया। 1925 में परीपेरेटरी (Preparatary) आयोग की स्थापना की गई थी। विवादित राष्ट्रों के विचारों के कारण, यह आक्रामक हथियारों की पहचान नहीं कर सका।

अंत में, बहुत तैयारी के बिना एक निरस्त्रीकरण सम्मेलन फरवरी 1932 में जिनेवा में हुआ। एक बार फिर, आपसी अविश्वास और संदेह लंबी बातचीत के बावजूद सम्मेलन की विफलता का कारण रहा।

वर्साय की संधि द्वारा जर्मनी को निरस्त्र कर दिया गया था। विजयी राष्ट्रों को बाद में निरस्त्र होना था। वे ऐसा हालांकि, वास्तव में कभी भी नहीं करना चाहते थे। इसलिए, अक्टूबर 1933 में जर्मनी ने घोषणा की कि वह निरस्त्रीकरण सम्मेलन और राष्ट्र संघ दोनों को छोड़ रहा है। बाद में 1935 में जर्मनी ने औपचारिक रूप से घोषणा की कि वह वर्साय की संधि के सैन्य निरस्त्रीकरण खंड से अधिक बाध्य नहीं था। अन्य देशों के पास पहले से ही बड़ी मात्रा में सेना और बड़े सशस्त्र बल थे। जर्मन निर्णय ने एक विशाल आयुध दौड़ की शुरुआत की जिससे सशस्त्र संघर्ष हुआ। निरस्त्रीकरण की विफलता द्वितीय विश्व युद्ध का एक और प्रमुख कारण बन गई।

घ) विश्व आर्थिक संकट : विश्व आर्थिक संकट की शुरुआत 1929 में यूरोपीय देशों पर अमेरिकी वित्तीय घरानों द्वारा अचानक ऋण पर रोक से हुई। उनमें से कई, विशेष रूप से जर्मनी, ज्यादातर अमेरिकी उधार के साथ तेजी से औद्योगिक प्रगति कर रहे थे। संकट का प्रभाव 1930-32 के दौरान गंभीर था। इसने ज्यादातर देशों के अर्थशास्त्र को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया।

जर्मनी सबसे बुरी तरह से प्रभावित देश साबित हुआ जहाँ लगभग 700,000 लोग बेरोजगार हो गए। यह घोषित करने के लिए मजबूर हुआ कि यह क्षतिपूर्ति का कोई और भुगतान नहीं करेगा। जर्मनी के आर्थिक संकट से एडॉल्फ हिटलर की नाजी तानाशाही उभरी। वह 1933 में जर्मनी चांसलर बने, जल्द ही लोकतंत्र को नष्ट कर दिया और अपनी तानाशाही स्थापित की। इस बीच, यहाँ तक कि इंग्लैंड को भी कुछ कठोर उपाय करने पड़े, जैसे कि सोने के मानक को छोड़ना। जर्मनी, जापान और इटली ने इस आर्थिक संकट का फायदा उठाया और अलग-अलग आक्रामक मसौदे तैयार किए। उन्होंने अपने फ़ासीवादी ब्लॉक की स्थापना की जो दूसरे विश्व युद्ध के लिए काफी हद तक जिम्मेदार था।

ड़) **रोम–बर्लिन–टोक्यो धुरी** : प्रथम विश्व युद्ध की पूर्व संध्या पर, यूरोप को दो शत्रुतापूर्ण शिविरों में विभाजित किया गया था। जर्मनी, जापान और इटली के गठबंधन के गठन के साथ एक ही प्रक्रिया को एक बार फिर दोहराया था। यह गठबंधन 1936-37 के दौरान एँटी-कॉमिन्टर्न संधि के माध्यम से किया गया था। आमतौर पर रोम-बर्लिन-टोक्यो धुरी नामक फासिस्ट शक्तियों के इस संयोजन का उद्देश्य साम्राज्यवादी विस्तार था। उन्होंने युद्ध का महिमामंडन किया और विवादों के शांतिपूर्ण निपटारे की खुले तौर पर निंदा की। उन्होंने पश्चिमी देशों को तंग किया और चीन, ऑस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया, अल्बानिया और पोलैंड जैसे कमजोर देशों को पीड़ित किया। उनकी युद्ध जैसी हरकतों और आक्रामकता पर ध्यान तो दिया गया पर उन्हें दंडित नहीं किया गया। धुरी शक्तियों के आचरण पर चिंतित, इंग्लैंड और फ्रांस एक-दूसरे के करीब आए और एक एँग्लो-फ्रेंच- सोवियत फ्रंट के गठन का असफल प्रयास किया गया। हालांकि फ्रांस और सोवियत संघ का एक गठबंधन था, फिर भी हिटलर का तुष्टिकरण करने की उनकी नीति में, फ्रांस और इंग्लैंड ने सोवियत संघ की उपेक्षा की। जब स्टालिन तीन गैर-फासीवादी शक्तियों के बीच एक सैन्य संधि चाहता था, तो उन्होंने ध्यान नहीं दिया। सोवियत संघ आशांकित हो गया और जर्मनी के साथ गैर-आक्रमण समझौते पर हस्ताक्षर करके दुनिया को आश्चर्यचकित कर दिया। इसने सीधे पोलैंड पर जर्मन हमले का रास्ता साफ कर दिया जिस कारण द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत हुई। जबकि सोवियत संघ ने भी पौलेंड पर हमला किया, इंग्लैंड और फ्रांस ने जर्मनी पर युद्ध की घोषणा की।

च) **राष्ट्रीय अल्पसंख्यकों की समस्या** : प्रथम विश्व युद्ध के बाद शांति समझौते की वजह से यूरोप में नए राष्ट्र राज्यों का गठन हुआ, जिसकी वजह से, बड़ी संख्या में राष्ट्रीय अल्पसंख्यक पीछे छूट गए जिनकी देखभाल नहीं हुई। संयुक्त राज्य के राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने आत्मनिर्णय के सिद्धांत की वकालत की थी। लेकिन विभिन्न रणनीतिक विचारों के कारण इस सिद्धांत को कभी ठीक से लागू नहीं किया जा सका। इस प्रकार उदाहरण के लिए बड़े जर्मन अल्पसंख्यकों ने खुद को पोलैंड और चेकोस्लावाकिया में गैर जर्मनों के साथ पाया।

पोलैंड और रूमानिया में रूसी अल्पसंख्यक थे, तथा पेरिस सम्मेलन के बाद अल्पसंख्यक संधियों के समाप्त होने के बाद भी, लगभग 750,000 जर्मन विदेशी शासन के अधीन थे। हिटलर ने स्थिति का शोषण किया और चेकोस्लोवाकिया और पोलैंड में जर्मन अल्पसंख्यकों के अधिकारों के हनन के नाम पर इन देशों पर हमला करने की तैयारी की। उसने ऑस्ट्रिया और चेकोस्लोवाकिया को नष्ट

कर दिया और अंत में पोलैंड पर आक्रमण कर दिया। इस प्रकार, युद्ध के लिए अल्पसंख्यकों की समस्या एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा और प्रमुख बहाना बन गई।

छ) **ब्रिटेन और फ्रांस द्वारा तुष्टिकरण :** नाजी-फासीवाद तानाशाहों के तुष्टीकरण पर आधारित विदेश नीति द्वितीय विश्व युद्ध का एक प्रमुख कारण बनी। प्रथम विश्व युद्ध के बाद, ब्रिटेन और फ्रांस की नीतियों में दरार दिखाई दी। शक्ति संतुलन हमेशा ब्रिटिश विदेश नीति की आधारशिला रहा। ब्रिटेन को डर था कि एक बहुत शक्तिशाली फ्रांस यूरोप में शक्ति संतुलन को बिगाड़ देगा। इसलिए, युद्ध के बीच के वर्षों में इसने फ्रांस के खिलाफ जर्मनी की मदद की। एक बार हिटलर जर्मनी में सत्ता में आया और इटली नाजी तानाशाह का सहयोगी बन गया, ब्रिटेन जल्दी से फ्रांस के करीब चला गया। फ्रांस को शत्रुतापूर्ण जर्मनी के खिलाफ ब्रिटिश सहायता की जरूरत थी। 1933 के बाद, फ्रांस की विदेश नीति वस्तुतः ब्रिटिश विदेश नीति का विस्तार बन गई। साम्यवाद के बढ़ते प्रभाव से ब्रिटेन चिंतित था। न केवल सोवियत संघ को प्रभावी ढंग से चुनौती दी जानी थी, बल्कि फ्रांस और स्पेन में तथाकथित लोकप्रिय मोर्चों को भी नष्ट करना था। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, ब्रिटेन ने हिटलर और मुसोलिनी के प्रति तुष्टीकरण की नीति को अपनाया। फ्रांस ने जल्द ही इस का पालन किया, प्रधानमंत्री स्टेनली बाल्डविन द्वारा तुष्टिकरण शुरू किया गया था, लेकिन 1938 में नेविल चेम्बरलेन ने सख्ती से इसका समर्थन किया। एबिसिनया युद्ध के दौरान मुसोलिनी की मदद करने की एँग्लो-फ्रांसीसी इच्छा, लीग प्रयासों के लिए समर्थन बनाए रखते हुए, म्यूनिख सम्मेलन में हिटलर के लिए उनके आभासी आत्मसमर्पण, और ऑस्ट्रिया और अल्बानिया जैसे कमजोर देशों की रक्षा करने में उनकी अक्षमता एँग्लो फ्रेंच कमजोरी के स्पष्ट सबूत थे और इसने युद्ध के लिए जमीन तैयार की।

ज) **पोलैंड पर जर्मन हमला :** युद्ध का स्पष्ट और तात्कालिक कारण 1 सितंबर 1939 को पोलैंड पर जर्मन हमला था। इससे पहले, जब सोवियत संघ के साथ एँग्लो फ्रेंच गठबंधन के सभी प्रयास विफल हो गए थे, हिटलर ने स्टालिन के साथ एक गैर-आक्रामक संधि की। यह सबसे अप्रत्याशित था, क्योंकि कई सालों तक नाजी जर्मनी और सोवियत रूस के बीच केवल नफरत ही मौजूद थी। अब, अपने बीच पोलैंड को विभाजित करने के इच्छुक जर्मनी और सोवियत संघ ने एक दूसरे के खिलाफ युद्ध नहीं छेड़ने के लिए समझौते पर हस्ताक्षर किए। फिर भी, जैसा कि घटनाओं से पता चला, संधि को उसके आलोचकों ने 'पोलैंड के खिलाफ सरल आक्रामकता संधि' के रूप में कहा था। एक गुप्त संधि में, जो केवल 1945 में सामने आई थी, दोनों देशों ने 1 सितंबर, 1939 को पूर्वी यूरोप को अपने क्षेत्रों में विभाजित करने का संकल्प लिया था। इंग्लैंड और फ्रांस ने पहले ही आक्रमण के मामले में पोलैंड को मदद का आश्वासन दिया था। उन्होंने अपनी बात रखी और जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा की। जबकि जर्मनी ने पश्चिम में पोलैंड पर हमला किया, सोवियत सेनाएँ 17-18 सितंबर, 1939 को पूर्व से पोलैंड में चली गई। 28 सितंबर 1939 को सोवियत जर्मन फ्रंटियर और मैत्री संधि द्वारा पोलैंड को जर्मनी और सोवियत संघ के बीच विभाजित किया गया था। इस बीच, कई अन्य देशों ने भी जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी, हालांकि ये प्रतीकात्मक घोषणाएँ थीं क्योंकि फ्रांस और ब्रिटेन अभी भी युद्ध की तैयारी में व्यस्त थे, जबकि पोलैंड नष्ट हो रहा था।

6.2.1 युद्ध की शुरुआत

पोलैंड, जैसा कि हमने ऊपर देखा है, युद्ध का तत्काल कारण बन गया। 23 मार्च, 1939 को हिटलर द्वारा लिथुआनिया को आत्मसमर्पण करने के लिए कहने के बाद जर्मन सैनिकों ने मेमेल (लिथुआनियाई संप्रभुता के तहत एक जर्मन शहर) पर कब्जा कर लिया था। उसी दिन जर्मन विदेश मंत्री रिबेंट्रोप ने पोलैंड पर अपना अधिकार जताया। उन्होंने माँग की कि डेंजिग (जो पहले से नाजी हो चुका था) को जर्मनी को वापस कर दिया जाना चाहिए, और पोलिश कॉरिडोर द्वारा पूर्व-पश्चिम राजमार्ग और रेल-लिंक की अनुमति दी जाए ताकि पूर्वी प्रशिया को सीधे जर्मनी के साथ जोड़ा जा सके। हालांकि, हिटलर ब्रिटेन द्वारा एक और म्यूनिख गलती की पुनरावृत्ति की सोच रहा था जो नहीं हुई। प्रधानमंत्री चेम्बरलेन ने पोलैंड को स्पष्ट रूप से ब्रिटिश गारंटी की घोषणा की। बाद में, जब इटली ने अल्बानिया (7 अप्रैल) पर आक्रमण की घोषणा की, तो ब्रिटेन ने ग्रीस और रूमानिया को समान गारंटी दी। फ्रांस ने ब्रिटेन का अनुसरण किया और अनिवार्य सैन्य भर्ती की घोषणा की। हिटलर ने अगले दिन जवाबी कार्रवाई की और 1934 की पोलिश-जर्मन गैर-आक्रामकता संधि और 1935 की एँग्लो-जर्मन नौसेना संधि को रद्द कर दिया।

नवंबर 1936 में जर्मनी और जापान द्वारा एँटी-कॉमिन्टर्न संधि पर हस्ताक्षर किए गए और एक साल बाद इटली भी इसमें शामिल हो गया। इस प्रकार, रोम-बर्लिन टोक्यो धूरी ने तीन देशों का प्रतिनिधित्व किया जो कि विश्व साम्यवाद को नष्ट करने के लिए दृढ़ संकल्प थे। यह वास्तव में, सोवियत संघ के खिलाफ एक गठबंधन था। अगस्त 1939 तक हिटलर अपनी शर्तों पर पोलिश मुद्दे को निपटाने के लिए तैयार था। हालांकि, वह एक प्रशंसनीय बहाने की तलाश में था। उसने राजनयिक रूप से ब्रिटेन की बांह मरोड़ दी, जब हिटलर ने डैनजिंग मुद्दे पर पोलैंड के साथ सीधी बातचीत के लिए सहमति जताई। हिटलर ने 29 अगस्त, 1939 को बर्लिन में अपने राजदूत के माध्यम से ब्रिटेन से पोलिश प्रतिनिधिमंडल की व्यवस्था करने के लिए कहा, ताकि अगले दिन बर्लिन पहुँचे, जो जर्मनों के साथ बातचीत और समझौता करने के लिए पूरी तरह से सशक्त हो। यह सबसे असामान्य माँग थी। आमतौर पर, अंतर्राष्ट्रीय वार्ता शुरू होने में बहुत समय लगता है। किसी भी मामले में, औपचारिक प्रतिनिधि पहले विदेशी प्रतिनिधि मंडल को आमंत्रित करने से पहले राजनयिक माध्यम से भेजे जाते हैं, जो स्पष्ट रूप से 30 अगस्त, को नहीं आ सके। जर्मनी ने बातचीत के लिए सभी दरवाजे बंद कर दिए। इसने हिटलर को पोलैंड पर नियोजित हमले के बहाने का बहुप्रतिक्षित मौका दिया। 1 सितंबर, 1939 की सुबह, जब जर्मन सैनिकों ने पोलैंड पर हमला किया, तब युद्ध शुरू हुआ। इंग्लैंड और फ्रांस ने 3 सितंबर, 1939 को जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा की। 18 सितंबर को सोवियत संघ ने भी पोलैंड पर आक्रमण किया, लेकिन न तो इटली और न ही संयुक्त राज्य अमेरिका ने युद्ध में प्रवेश किया। जर्मनी एक पूर्ण युद्ध के लिए दृढ़ था जबकि किसी समाधान के लिए प्रयास हो रहे थे।

6.2.2 यूएसए और यूएसएसआर मित्र राष्ट्र बन गए

जब युद्ध शुरू हुआ, जर्मनी और इटली राजनीतिक सहयोगी थे, लेकिन सोवियत-जर्मन गैर-आक्रामकता संधि ने मुसोलिनी को निराश किया। जून 1940 तक इटली ने युद्ध में प्रवेश नहीं किया। तब, जैसे कि फ्रांस हार और आत्मसमर्पण के कगार पर था, इटली, फ्रांस और मित्र राष्ट्रों के खिलाफ जर्मनी की ओर से युद्ध में शामिल हो गया।

सोवियत संघ युद्ध में शामिल नहीं हुआ, लेकिन पोलैंड पर आक्रमण करके जर्मनी की मदद कर रहा था। बाद में उसने फिनलैंड पर हमला किया और लीग ऑफ नेशंस की सदस्यता से निष्कासित कर दिया गया। स्टालिन ने हिटलर पर भरोसा करना जारी रखा जब तक कि नाजी तानाशाह ने अधिकांश यूरोपीय पड़ोसियों को हराया और 22 जून 1941 को सोवियत संघ पर हमला किया। इस बीच, स्टालिन ने तीन बाल्टिक राष्ट्रों – लाटविया, लिथुआनिया और एस्टोनिया – को सोवियत संघ में शामिल होने के लिए मजबूर किया था। उन्होंने अपनी स्वतंत्रता खो दी क्योंकि स्टालिन ने उनके नेताओं से कहा कि अगर उन्होंने यूएसएसआर में शामिल होने से इंकार कर दिया, तो वे जर्मनी द्वारा बर्बाद हो जाएँगे।

सोवियत संघ ने भी रूमानिया को शर्तें निर्धारित की थीं और इसमें से बेसरबिया, और बुकोविना को बरामद किया था। इस प्रकार, 1941 के मध्य तक सोवियत संघ युद्ध में शामिल हुए बिना युद्ध लाभ प्राप्त करने में व्यस्त था। हिटलर ने जून 1940 में फ्रेंच आत्मसर्मपण हासिल किया था। लेकिन हिटलर इतना भाग्यशाली नहीं था। जहाँ तक स्पेन का संबंध था जनरल फ्रेंको ने अपने देश को युद्ध से दूर रखा। चूँकि यह हिटलर द्वारा स्टालिन के साथ मिलकर लड़ा जा रहा था, इसलिए स्पेन युद्ध के दौरान तटस्थ रहा। युद्ध में शामिल होने के लिए संयुक्त राज्य में जनता के बीच भारी विरोध था। 1937 में, अमेरिकी कांग्रेस ने तटस्थता अधिनियम पारित किया था, जिसमें भविष्य के युद्ध में हथियारों की बिक्री पर भी प्रतिबंध था। जब वास्तव में युद्ध छिड़ गया और विनाश शुरू हुआ, तो अमेरिकियों ने अपनी तटस्थता के रूख को कमजोर करना शुरू कर दिया। नवंबर 1939 में कैश एण्ड कैरी अधिनियम पारित किया गया था, युद्ध में देशों को अमेरिकी हथियार खरीदने की अनुमति प्रदान की, बशर्ते वे नकद भुगतान करें और उन्हें अपने जहाजों में ले जाएं। जब युद्ध एक महत्त्वपूर्ण चरण में पहुँच गया, मार्च 1941 में लैंडलीज एक्ट पारित किया गया। इसने राष्ट्रपति को किसी भी रक्षा अनुच्छेद को बेचने, विनिमय करने, लीज समाप्त करने या अन्यथा बंद करने की अनुमति दी। इस प्रकार, अमेरिका ने ब्रिटेन और चीन जैसे मित्र देशों की सेना की आपूर्ति शुरू कर दी। तीन महीने बाद जब जर्मनी ने सोवियत यूनियन पर हमला किया तो उसे भी लैंड-लीज एक्ट द्वारा बचाया गया था।

1939 में सोवियत-जर्मन गैर-आक्रामक संधि पर हस्ताक्षर किए गए थे, जिसे हिटलर ने सोवियत संघ को अपने इरादों के बारे में अंधेरे में रखने के लिए डिजाइन किया था। जैसे ही जर्मनी ने यूरोपीय महाद्वीप पर अपने दुश्मनों को हराया था, उसने खुद सोवियत संघ के आक्रमण की तैयारी शुरू कर दी। लेकिन, स्टालिन आश्वस्त थे कि हिटलर सोवियत संघ पर हमला नहीं करेगा। सभी ने नाजी हमले के लिए स्टालिन को चेतावनी दी थी – चर्चिल, अमेरिका दूतावास और स्टालिन के स्वयं के आदमियों ने जो टोक्यो में थे। लेकिन स्टालिन ने 22 जून, 1941 तक सुनने से इंकार कर दिया था, जब जर्मनी ने वास्तव में सोवियत संघ पर हमला शुरू किया। इस पर स्टालिन स्तब्ध रह गया और सोवियत संघ ने मित्र राष्ट्रों से सहायता मांगी। ब्रिटेन ने सोवियत संघ को मित्र देशों के शिविर में स्वीकार कर लिया। जुलाई में, लंदन और मास्को ने एक सैन्य समझौते पर हस्ताक्षर किए।

जब सोवियत संघ एक विनाशकारी युद्ध का सामना कर रहा था, दिसंबर 1941 में संयुक्त राज्य अमेरिका को युद्ध में प्रवेश करने के लिए मजबूर हुआ, जब जापान ने पर्ल हार्बर नौसैनिक अड्डे पर हमला किया था। जापान के साथ अमेरिकी संबंध कभी सौहार्दपूर्ण नहीं थे। अमेरिका में जापानी संपत्ति पहले से ही प्रतिबंधित हुई थी। अगस्त

1941 में अमेरिका ने घोषणा की थी कि थाइलैंड के खिलाफ कोई भी जापानी कार्रवाई उसकी गंभीर चिंता का कारण होगी। सितंबर में अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट और जापानी प्रधानमंत्री कोनो के बीच एक बैठक के लिए असफल प्रयास किए गए थे। अक्टूबर में कोनो ने इस्तीफा दे दिया और जनरल तोजो जापान के प्रधानमंत्री बन गए। उन्होंने संघर्ष को खुले तौर पर प्रोत्साहित किया। नवंबर में, ब्रिटेन ने जापान के खिलाफ युद्ध की घोषणा करने का वादा किया था यदि संयुक्त राज्य अमेरिका उस देश के साथ युद्ध में शामिल हो गया। तनाव तेजी से बढ़ रहा था और युद्ध (सिर पर) की आफत दिखाई दी। 6 दिसंबर, 1941 को राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने जापानी सम्राट से शांति बनाए रखने में मदद के लिए एक व्यक्तिगत अनुरोध किया। शांति के बजाय अमेरिका पर अगले दिन जापानी बमबारी हुई। 7 दिसंबर, 1941 को सुबह-सुबह पर्ल हार्बर (हवाई द्वीप) पर स्थित बड़े, अमेरिकी नौसेना के बेड़े पर जापानियों द्वारा भारी बमबारी की गई। कुछ घंटे बाद, जापान ने 'संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटिश साम्राज्य' पर युद्ध की घोषणा की। 11 दिसंबर को, जर्मनी और इटली दोनों ने संयुक्त राज्य अमेरिका पर युद्ध की घोषणा की। इस प्रकार से युद्ध वैश्विक हो गया।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) आपके उत्तर के लिए नीचे दिये गए स्थान का उपयोग करें।

ii) अपने उत्तर के लिए सुझावों के लिए इकाई का अंतिम भाग देखें।

1) द्वितीय विश्व युद्ध के तत्कालीन कारणों की व्याख्या करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) सामूहिक सुरक्षा की अवधारणा पर एक नोट लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

6.3 एक्सिस/धुरी राष्ट्रों की हार

6.3.1 इटली और जर्मनी की हार

दो यूरोपीय फासीवादी शक्तियों ने महाद्वीप के अधिकांश देशों को जीत लिया था। ब्रिटेन लगातार हमलों के अधीन था, और तीन बाल्टिक गणराज्य सहित सोवियत संघ के बड़े हिस्से पर जर्मनी का अतिक्रमण हो गया था। 1943 में मित्र देशों ने अफ्रीका में इतालवी साम्राज्य को नष्ट करके धुरी राष्ट्रों के खिलाफ आक्रामक शुरुआत करने का फैसला किया। इस उद्देश्य को मई 1943 तक प्राप्त किया गया था। इटालियंस

परेशान थे और फासीवाद संरचना में दरार के संकेत थे। मित्र राष्ट्रों ने सिसली के माध्यम से इतालवी आक्रमण शुरू करने के लिए 'ऑपरेशन ह्यूकी' पर फैसला किया। यह अंतिम प्रयास नहीं था क्योंकि जर्मनी और बाल्कन की बमबारी के लिए इटली को एक आधार के रूप में उपयोग करने का विचार था। जुलाई, 1943 में, भारी हवाई हमलों के बाद बड़ी संख्या में इटालियंस ने सिसिली में आत्मसमर्पण कर दिया। मुसोलिनी ने हिटलर से मुलाकात की और अधिक जर्मन सहायता माँगी, लेकिन उसे ठुकरा दिया गया। मुसोलिनी ने फासिस्ट ग्राण्ड काउंसिल की बैठक बुलाई जिसमें राजा को सीधे कमान लेने के लिए कहा। 25 जुलाई 1943 को किंग विक्टर इमैनुएल-3 ने मुसोलिनी को बर्खाश्त कर दिया और मार्शल बोडोलियो को नई सरकार का प्रमुख नियुक्त किया। मुसोलिनी को गिरफ्तार कर लिया गया। इटली ने आखिरकार 3 सितंबर, 1943 को बिना शर्त आत्मसमर्पण कर दिया। उसी दिन, जर्मनों ने रोम में प्रवेश किया और इसे कई महीनों तक अपने कब्जे में रखा। मित्र देशों की सेना केवल 4 जून, 1944 को रोम पर कब्जा कर पाईं।

मित्र देशों की शक्तियों ने उसके खिलाफ दो मोर्चों को खोलकर जर्मनी को हराने का फैसला किया। पूर्व से, सोवियत संघ उसे बाहर धकेल रहा था; पश्चिम में इंग्लैंड, अमेरिका और उसके सहयोगियों ने फ्रांस को आजाद करने के लिए नॉर्मांडी पर हमला किया। मार्च 1944 तक, एक्सिस सेना को यूक्रेन के अधिकांश और सोवियत संघ के अन्य हिस्सों से निष्कासित कर दिया गया था। साल खत्म होने से पहले ही सोवियत जमीन को जर्मन सेनाओं से साफ़ कर दिया था। जर्मनी के खिलाफ पश्चिम मोर्चा 6 जून 1944 को खोला गया था।यह अंग्रेजी चैनल से शुरू हुआ था, और इस उद्देश्य के लिए हर महीने 150,000 अमेरिकी सैनिकों को ले जाया जाता था। मित्र देशों की सेना ने फ्रांस को आज़ाद कर दिया और उनके आक्रमण के 97 दिन बाद 11 सितंबर, 1944 को जर्मनी में प्रवेश किया। इसके बाद हिटलर की वायु सेना ने लंदन में बड़े पैमाने पर बमबारी शुरू कर दी जो 1945 की शुरुआत तक जारी रही। जैसा कि जर्मनी को हराया जाना शुरू हुआ, हिटलर को खत्म करने के लिए षड्यंत्र रचे गए। फरवरी 1945 में याल्टा सम्मेलन में जर्मनी पर अंतिम हमले की योजना बनाई गई थी। ब्रिटिश, कनाडाई, फ्रांसीसी और अमेरिकी सेना द्वारा जर्मनी के खिलाफ अंतिम हमले की शुरुआत की गई थीं। इस बीच, सोवियत आक्रमण निरंतर जारी था। यह लड़ाई जर्मन चांसलरी में सबसे भयंकर थी, जिसके भूमिगत गढ़ में हिटलर ने अपना अंतिम मुख्यालय स्थापित किया था। जब सब कुछ खो गया था; नाजी तानाशाह, जो कभी पूरी दुनिया पर शासन करने का सपना देख रहा था, ने 30 अप्रैल, 1945 को आत्महत्या कर ली। हिटलर ने डॉकनिट्ज को अपने उत्तराधिकारी के रूप में नामित किया था लेकिन वह देश को बचाने के लिए कुछ नहीं कर सकता था। 5 मई, 1945 को, नॉर्थ ईस्ट जर्मनी, नीदरलैंड, और डेनमार्क में जर्मन कमांडरों ने बिना शर्त आत्मसमर्पण कर दिया, ऑस्ट्रिया में नाज़ी सेनाओं ने अगले दिन आत्मसमर्पण कर दिया। अंत में 7 मई को, डोकनिट्ज सरकार (जर्मनी की) ने बिना शर्त आत्मसमर्पण कर दिया। 8 मई, 1945 को यूरोप में युद्ध समाप्त हो गया था।

6.3.2 जापान की हार

मित्र राष्ट्र सुदूर पूर्व में जापान के खिलाफ जीत के लिए कड़ा संघर्ष कर रहे थे। इसलिए मुख्य जिम्मेदारी संयुक्त राज्य अमेरिका पर गिर गई, जिसे, ब्रिटेन, चीन, नीदरलैंड, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड द्वारा सहायता प्रदान की गई। आधार के रूप में चीन के साथ जापान के मित्र देशों के आक्रमण का आयोजन किया गया था।

अमेरिकी जनरल डगलस मैकआर्थर ने इन ऑपरेशनों का निर्देशन किया। 1944 की शरद् ऋतु में दो संबद्ध अभियान शुरू किए गए थे। लार्ड माउंटबेटन के नेतृत्व में बर्मा को फिर से जीतने का लक्ष्य था। जनरल मैकआर्थर के तहत अन्य, फिलीपीन द्वीपों की मुक्ति में शामिल थे। दोनों मिशन सन् 1945 तक पूरे हो गए थे। पॉट्सडैम सम्मेलन, जो पराजित जर्मनी और अन्य संबंधित मुद्दों के भविष्य के बारे में निर्णय कर रहा था, ने जुलाई 1945 में जापान को 'सभी जापानी सशस्त्र बलों के बिना शर्त आत्मसमर्पण' की घोषणा करने का आह्वाहन किया। अल्टीमेटम को जापानियों ने नजरअंदाज कर दिया, जिन्होंने लड़ाई जारी रखी। इस स्तर पर अमेरिका ने परमाणु बम का उपयोग करने और जापान के बिना शर्त्त आत्मसमर्पण को सुरक्षित करने का फैसला किया। 6 अगस्त, 1945 को अमेरिकी वायु सेना ने हिरोशिमा के महत्त्वपूर्ण जापानी शहर पर पहला परमाणु बम गिराया और लक्ष्य के आधे से अधिक क्षेत्र को मिटा दिया। दो दिन बाद (8 अगस्त) को सोवियत संघ ने जापान पर युद्ध की घोषणा की और मंचूरिया और दक्षिणी सखालिन (दोनों उस समय जापानी नियंत्रण में थे) पर हमला किया। सोवियत सैनिकों की प्रगति तेज थी। 9 अगस्त, 1945 को नागासाकी पर एक दूसरा परमाणु बम गिराया गया; जिसमें अभूतपूर्व विनाश हुआ। अगले दिन, जापान ने शांति के लिए निवेदन किया। लड़ाई बंद हो गई लेकिन अमेरिकी युद्धपोत मिसौरी पर 2 सितंबर, 1945 को आत्मसमर्पण संबंधी दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए गए। द्वितीय विश्व युद्ध अंत में जापान के अमेरिकी कब्जे में आने के साथ समाप्त हो गया। युद्ध के परिणाम, तीन धुरी शक्तियों की कुल हार और मित्र राष्ट्रों की जीत थी। यह लोकतंत्र की विजय और फासीवाद और तानाशाही की हार का भी सूचक था।

6.4 द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शांति बनाना

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शांति संधियों का समापन एक बहुत मुश्किल काम साबित हुआ। शत्रुता समाप्त करने के दो साल बाद, संधियों में से केवल पाँच शक्तियों के साथ संधियाँ संपन्न हुईं। वे इटली, रूमानिया, बुल्गारिया, हंगरी और फिनलैंड थी। ऑस्ट्रिया के साथ शांति की संधि केवल 1955 में समाप्त हो सकी और 1952 में जापान के साथ। जर्मनी फिर से एक नहीं हो सकता था। यह संघीय गणराज्य जर्मनी (पश्चिम जर्मनी) और डेमोक्रेटिक जर्मन गणराज्य के बीच विभाजित रहा। चूँकि जर्मनी का पुनर्मिलन नहीं हुआ था; इसलिए जर्मनी के साथ कोई भी संधि कभी हुई ही नहीं। 1990 में दो जर्मनी अंततः एकजुट हो गए। हम पॉट्सडैम सम्मेलन और फिर अन्य पराजित शक्तियों के साथ संपन्न शांति संधियों के बारे में संक्षेप में बताएँगे।

6.4.1 पॉट्सडैम सम्मेलन

पॉट्सडैम (बर्लिन) सम्मेलन जुलाई-अगस्त 1945 के दौरान आयोजित किया गया था। जर्मनी ने बिना शर्त आत्मसमर्पण कर दिया था। जर्मनी और पूर्वी यूरोपीय देशों के भविष्य के बारे में विभिन्न युद्धकालीन सम्मेलनों के दौरान कई निर्णय लिए गए थे। इन निर्णयों के आलोक में अब एक औपचारिक व्यवस्था की जानी थी। पॉट्सडैम सम्मेलन में जोसेफ स्टालिन, विंस्टन चर्चिल, चियाँग काई-शेक और अमेरिकी राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन ने भाग लिया। उन्हें उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडलों द्वारा सहायता प्रदान की गई। सम्मेलन ने जर्मनी में स्थापित भविष्य के संबंध में महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए जो शांति की एक औपचारिक संधि के निष्कर्ष पर लंबित थे। अन्य पराजित शक्तियों के

साथ संपन्न होने वाली शांति संधियों पर हस्ताक्षर के लिए भी तैयारियाँ शुरू कर दी गईं। जापान को हराया जाना बाकी था। पोलैंड की सीमाओं में परिवर्तन किया गया। यह भी सहमति हुई कि जितनी जल्दी हो सके, पोलैंड में स्वतंत्र और निष्पक्ष लोकतांत्रिक चुनाव होंगे। पॉट्सडैम सम्मेलन ने तय किया कि मित्र सेना को ईरान से तुरंत वापस ले लिया जाएगा और तंजियर को एक अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र घोषित किया जाना था। ऑस्ट्रिया से कोई क्षतिपूर्ति नहीं ली जानी थी।

सम्मेलन ने जापान द्वारा आत्मसमर्पण के आधार के बारे में निर्णय लिए। साम्राज्यवादी तत्त्वों को समाप्त कर दिया जाएगा और जापान को निरस्त्र कर दिया जाएगा। जापान के युद्ध अपराधियों को दंडित किया जाएगा। उसके आत्मसमर्पण के तुरंत बाद, जापान में मित्र देशों का सैन्य नियंत्रण स्थापित किया जाएगा और अंततः एक लोकतांत्रिक सरकार स्थापित की जाएगी। जापान की संप्रभुता उसके चार प्रमुख और कुछ छोटे द्वीपों तक सीमित होगी। दूसरे विश्व युद्ध से पहले या उसके दौरान जापान के कब्जे वाले सभी विदेशी क्षेत्रों को मुक्त किया जाएगा और उन देशों में स्थानांतरित कर दिया जाएगा जिनका वे कानूनी रूप से हिस्सा थे।

जापानी आत्मसमर्पण के लिए पॉट्सडैम सम्मेलन में शर्तो का उल्लेख किया गया था, जिन्हें जापान द्वारा स्वीकार नहीं किया गया था। संयुक्त राज्य अमेरिका ने, सोवियत संघ को विश्वास में लिए बिना, अगस्त 1945 की शुरुआत में जापानी शहरों में से दो पर परमाणु बम गिराए और 10 अगस्त, 1945 को बिना शर्त आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर किया। इस प्रकार, द्वितीय विश्व युद्ध का अंत हो गया। तथ्य यह है कि संयुक्त राज्य अमेरिका ने सोवियत संघ के ज्ञान के बिना परमाणु बम का विकास और उपयोग किया, यह एक कारण बन गया जिसने द्वितीय विश्व युद्ध के तुरंत बाद शीत युद्ध को जन्म दिया।

6.4.2 शांति की संधियाँ

प्रथम विश्व युद्ध के बाद संपन्न हुई शांति संधियों के साथ विजयी शक्तियों ने उनके अनुभवों से सीखा परंतु बहुत ज्यादा नहीं। द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद शांति संधियों का समापन एक बार फिर से यूरोपीय राज्यों के बीच क्षेत्रीय विभाजन और समायोजन लाया, प्रदेशों और विदेशी उपनिवेशों पर कब्जा और क्षतिपूर्ति लागू की गई।

1919 के पेरिस शांति सम्मेलन के विपरीत, 11 सितंबर से 3 अक्टूबर, 1945 तक लंदन में केवल विदेश मंत्रियों की बैठक हुई थी। उस समय तक पश्चिमी शक्तियों के बीच एक ओर गंभीर मतभेद विकसित हो गए थे और दूसरी ओर सोवियत संघ के साथ। लंदन सम्मेलन में बहुत कम प्रगति की जा सकी और न ही बाद की तीन बैठकों में कोई प्रगति हासिल की। इन बैठकों में मसौदा-संधियाँ तैयार की गईं, जिनका समापन पाँच शक्तियों, इटली, रूमानिया, बुल्गारिया, हंगरी और फ़िनलैंड के साथ किया जाएगा। इसके बाद, 29 जुलाई से 15 अक्टूबर, 1946 तक पेरिस सम्मेलन आयोजित किया गया था। इसके बाद विदेश मंत्रियों की समिति की अन्य बैठकें हुईं और 12 दिसंबर, 1946 को न्यूयार्क में समिति द्वारा संधियों को मंजूरी दी गई। अंत में, एक तरफ इन संधियों पर मित्र राष्ट्रों और ऊपर उल्लेखित पांच राष्ट्रों ने हस्ताक्षर किए। उनमें से प्रत्येक के साथ अलग-अलग संधियाँ संपन्न हुईं।

इन शांति संधियों के मुख्य प्रावधानों का संक्षेप में यहाँ उल्लेख किया जा सकता है। 1) इटली के साथ संपन्न संधि ने उसे कई प्रदेशों से वंचित कर दिया। फ्रांस, ग्रीस और यूगोस्लाविया ने इटली की कीमत पर राज्य प्राप्त किए। 2) संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद् द्वारा नियुक्त गवर्नर के तहत ट्राइस्टे एक स्वतंत्र बंदगाह बन गया। 3) अल्बानिया और इथियोपिया ने अपनी स्वतंत्रता हासिल कर ली। एक बार फिर से संप्रभु राज्य बन गए। 4) इटली को काफी क्षेत्र से वंचित किया गया था और उसे सात वर्षों के भीतर बड़ी क्षतिपूर्ति का भुगतान करना आवश्यक था। 5) रूमानिया संधि द्वारा बेस्सारबिया और बोउविना रूमानिया से सोवियत संघ को दिए गए और डौब्रुजा बुल्गारिया को दिया गया। उसे सोवियत संघ को क्षतिपूर्ति भुगतान करना था और उसके सैन्य बलों पर सीमाएं लगाई गई थीं। 6) हंगरी को डेन्यूब नदी के दक्षिण में स्थित कुछ गाँवों को चेकोस्लोवाकिया को लौटाने पड़े जिन पर उसने 1938 में कब्जा कर लिया था। 7) ट्रांसिल्वेनिया प्रांत को हंगरी ने रूमानिया को लौटा दिया था। उसे भी क्षतिपूर्ति भुगतान की आवश्यकता थी और उसे निरस्त्र कर दिया गया था। बुल्गारिया ने किसी भी क्षेत्र को नहीं खोया। इसने वास्तव में रूमानिया से डबरूजा का क्षेत्र प्राप्त किया। लेकिन अन्य लोगों की तरह, बुल्गारिया को भी क्षतिपूर्ति भुगतान करने के लिए कहा गया और उसकी सशस्त्र सेना को घटाया गया। 7) फिनलैंड कई छोटे क्षेत्रों से वंचित था जो सभी सोवियत संघ में चले गए थे। अन्य पराजित शक्तियों की तरह, फिनलैंड पर भी क्षतिपूर्ति थोपी गई। इसकी सशस्त्र सेनाओं पर काफी हद तक अंकुश लगा दिया गया था। इन पाँच संधियों ने सोवियत संघ को अधिकतम लाभ दिया। एक और देश जिसने पर्याप्त क्षेत्र शक्ति प्राप्त हुई, वह यूगोस्लाविया था जो बाल्कन में सबसे शक्तिशाली राष्ट्र और इटली का प्रतिद्वन्द्वी बन गया।

ऑस्ट्रिया : ऑस्ट्रिया पर 1938 में जर्मन सेना द्वारा कब्जा कर लिया गया था और तब से पराजित जर्मनी के कब्जे वाले हिस्से के रूप में जारी रहा। ऑस्ट्रिया को 'मुक्त क्षेत्र' माना गया। 1943 के मॉस्को सम्मेलन ने ऑस्ट्रिया को एक संप्रभुराज्य बनाने का संकल्प लिया था। लेकिन, युद्ध के तुरंत बाद, मित्र राष्ट्रों के बीच गंभीर मतभेद विकसित हो गए। सोवियत संघ ऑस्ट्रिया पर गंभीर आर्थिक प्रतिबंध लगाना चाहता था। यह पश्चिमी शक्तियों के लिए स्वीकार्य नहीं था। गतिरोध करीब 10 साल तक रहा। अंत में, ऑस्ट्रिया खुद को 'तटस्थ' देश घोषित करने और सोवियत संघ को कुछ मुआवजा देने के लिए सहमत हो गया। तत्कालीन सोवियत संघ ने आस्ट्रियाई प्रश्न को जर्मनी की समस्या से अलग करने पर सहमति व्यक्त की। 15 मई, 1955 को ऑस्ट्रिया द्वारा एक शांति संधि पर हस्ताक्षर किए गए, जिससे यह एक 'तटस्थ' देश बन गया।

जापान : शीत युद्ध और संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के बीच मतभेदों ने जापान के साथ शांति संधि के समापन में देरी की। लेकिन, जर्मनी और ऑस्ट्रिया के विपरीत जापान केवल अमेरिकी सेना के कब्जे में था। 10 अगस्त, 1945 को जापानी आत्मसमर्पण के बाद, एक अंतरिम सैन्य प्रशासन अमेरिकियों द्वारा स्थापित किया गया था। संपूर्ण अधिकार मित्र राष्ट्रों के सर्वोच्च कमांडर के हाथों निहित था। जनरल मैकाआर्थर को एक सुप्रीम कमांडर और जापानी प्रशासक के रूप में नियुक्त किया गया था। 1951 में सैन फ्रांसिस्को में संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा एक शांति संधि के लिए एक बैठक बुलाई गई थी। इस बैठक में 52 देशों ने भाग लिया था। इसमें सोवियत संघ और अन्य समाजवादी देशों ने भाग लिया था, लेकिन भारत और बर्मा ने

इसमें भाग लेने से इंकार कर दिया। शांति की प्रस्तावित कुछ शर्तें भारत को स्वीकार्य नहीं थीं। यहाँ तक कि सोवियत संघ ने मसौदा संधि पर हस्ताक्षर करना असंभव पाया। अमेरिकी प्रभाव के तहत तैयार की गई संधि पर जापान के साथ 49 देशों ने 28 अप्रैल, 1952 को हस्ताक्षर किए थे। जून 1952 में जापान के साथ भारत द्वारा एक अलंग शांति संधि पर हस्ताक्षर किए गए थे।

जापान द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका और 48 अन्य देशों के साथ शांति संधि में 27 अनुच्छेद थे। इसने कोरिया की स्वतंत्रता को मान्यता दी। उत्तर कोरिया (कम्युनिस्ट) और दक्षिण कोरिया (लिबरल डेमोक्रेसी) के बीच युद्ध के बाद कोरिया विभाजित हो गया था। जापान ने फारमोसा, सखालिन और कुरील द्वीपों पर अपने अधिकारों का समर्पण किया। बोनीन और रयुकू (ओकिनावा) के द्वीपों को अमेरिकी ट्रस्टीशिप के तहत रखा गया था। जापानी संप्रभुता उसके चार रियासतों और कुछ छोटे द्वीपों तक सीमित थी। दूसरे, जापान, चीन को अपने सभी अधिकार देने के लिए सहमत हो गया। तीसरा, जापान ने युद्ध की जिम्मेदारी का भुगतान करने के लिए जिम्मेदारी स्वीकार की लेकिन आर्थिक स्थितियों को देखते हुए, इसे क्षतिपूर्ति के भुगतान से छूट दी गई थी। यह इसलिए किया गया क्योंकि युद्ध की गर्मी थमने के बाद संधि का समापन हो गया था और क्योंकि यह अब संयुक्त राज्य अमेरिका का करीबी सहयोगी था। अन्त में, इस सिद्धांत में सहमति हुई कि विदेशी सशस्त्र बलों को जापान से हटा लिया जाएगा।

जर्मनी : जर्मनी अपने आत्मसमर्पण के तुरंत बाद चार कब्जे वाले क्षेत्रों में विभाजित हो गया था। पश्चिमी शक्तियों ने आरोप लगाया कि, पहले की समझ का उल्लंघन करते हुए, सोवियत यूनियन पूर्वी जर्मनी के अपने क्षेत्र को एक साम्यवादी राज्य में परिवर्तित कर रहा था। इसने न केवल जर्मनी के एकीकरण में बाधा डाली, बल्कि एक शांति संधि में भी। फिर भी सोवियत संघ और पश्चिमी शक्तियों दोनों ने जर्मनी के संबंध में कई एकतरफा फैसले लिए। इस तरह का पहला निर्णय ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका ने 1 जनवरी, 1947 को अपने क्षेत्रों को एक में मिला लिया था। बाद में, फ्रांस ने यूनिफाइड पश्चिमी क्षेत्र के साथ अपने क्षेत्र के विलय की भी अनुमति दी। इसके बाद तीनों शक्तियों ने पश्चिमी जर्मनी में एक आजाद, स्वतंत्र और लोकतांत्रिक सरकार स्थापित करने का फैसला किया। तत्कालीन पश्चिमी क्षेत्रों में शामिल फेडरल रिपब्लिक ऑफ जर्मनी (एफआरजी) को औपचारिक रूप से 21 सितंबर, 1949 को स्थापित किया गया था। पश्चिमी शक्तियों ने 1951 में जर्मनी के संघीय गणराज्य के साथ औपचारिक रूप से 'युद्ध की स्थिति' को समाप्त कर दिया था।

जर्मनी के संघीय गणराज्य की स्थापना के तुरंत बाद, सोवियत संघ पूर्वी जर्मनी को एक स्वतंत्र राज्य बनने के लिए आगे बढ़ा। इसे जर्मन डेमोक्रेटिक रिपब्लिक (जीडीआर) के रूप में नामित किया गया था और यूएसएसआर के सोशलिस्ट पैटर्न पर आयोजित किया गया था। पश्चिमी जर्मनी की संप्रभुता को पश्चिमी शक्तियों द्वारा मान्यता दिए जाने के एक साल बाद सितंबर 1955 से सोवियत संघ द्वारा उनके बीच संपन्न एक संधि द्वारा जीडीआर को पूर्ण संप्रभुता प्रदान की गई। इस प्रकार, जर्मनी 1990 तक दो शत्रुतापूर्ण देशों में बँटा रहा – एक का पश्चिम के साथ गठबंधन किया गया था, पूंजीवाद पर आधारित था और बहुत तेजी से औद्योगिक प्रगति की थी, तथा दूसरा सोवियत संघ के साथ गठबंधन में था और उसकी अर्थव्यवस्था समाजवाद पर आधारित थी और उसकी राजनीतिक प्रणाली प्रतिरूपित हुई थी सोवियत संघ पर। दो

जर्मनी – पश्चिमी जर्मनी और पूर्वी जर्मनी ने 1989 में एकीकरण की प्रक्रिया शुरू की। संयुक्त जर्मनी का जन्म अक्टूबर 1990 में ही हुआ था।

6.5 द्वितीय विश्व युद्ध में भारत का योगदान

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश साम्राज्य में भारत के योगदान को लंबे समय तक अनदेखा किया गया। हाल के वर्षों में भारत द्वारा किए गए बलिदानों को स्वीकार किया जा रहा है। प्रथम विश्व युद्ध में, युद्ध के प्रयासों में मदद के लिए ब्रिटेन द्वारा भारतीय सैनिकों को बुलाया गया था। अपने चरम पर ब्रिटिश भारतीय सेना का अकार 2.5 मिलियन तक पहुँच गया; जिससे यह दुनिया की सबसे बड़ी स्वयंसेवी सेना बन गई। साम्राज्य के लिए लड़ते हुए लगभग 89,000 भारतीय सैनिक मारे गए। भारतीय सैनिकों ने भी प्रमुख लड़ाईयों में संघर्ष किया – टोब्रुक, मोंटे कैंसिनो, कोहिमा और इंफाल। उन्होंने सभी प्रमुख मोर्चों पर लड़ाई लड़ी – पूर्वी और उत्तरी अफ्रीका, इटली, बर्मा, सिंगापुर; मलय प्रायद्वीप, गुआम और इंडो चीन तथा दक्षिण पूर्व एशिया को जापानियों से सुरक्षित किया। कुछ 700,000 भारतीय सैनिकों ने बर्मा और दक्षिण-पूर्व एशियाई थिएटर में लड़ाई लड़ी। 1944 में कोहिमा और इम्फाल की लड़ाई का रिकार्ड इतिहासकारों ने अब बनाना शुरू कर दिया है। भारत पर आक्रमण के लिए जापानी 15वीं सेना, 85,000 सैनिकों के साथ मजबूत थी, अनिवार्य रूप से नष्ट हो गई थी, जिसमें 53,000 मृत और कोहिमा तथा इंफाल की लड़ाई में लापता हो गए थे।

पूरा भारतीय उपमहाद्वीप युद्ध के वर्षों के दौरान रूपांतरित हो गया। दक्षिण पूर्व एशिया में जापानियों के खिलाफ युद्ध के लिए उपमहाद्वीप एक विशाल आपूर्ति मैदान बन गया। लाखों भारतीयों ने दयनीय परिस्थितियों में साम्राज्य के लिए मेहनत की। हजारों भारतीयों ने बिहार में कोयला खनन किया, भारत से म्याँमार और चीन में आपूर्ति सड़कों का निर्माण किया, जिसमें उत्तर पूर्व भारत में चीन और भारत के बीच प्रसिद्ध लेडो रोड भी शामिल है। उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के अलावा, भारत मित्र राष्ट्रों को युद्ध सामग्री का एक प्रमुख आपूर्तिकर्त्ता बन गया। इसके सैकड़ों नए कारखानों ने सभी संबद्ध देशों को कपड़ा और अन्य युद्ध से संबंधित सामग्री की नियमित आपूर्ति बनाए रखी। आधिकारिक आंकड़े बताते हैं कि बंदरगाहों और कारखानों में काम करने वाले हजारों भारतीयों की मौत भारत के पूर्वी तट पर जापानी हवाई बमबारी से हुई थी। हजारों गैर लड़ाकों को विदेशों में, आपूर्ति लाइनों और समर्थन सेवाओं के प्रबंधन के लिए भेजा गया। ये 'कुली' थे, जिन्होंने शाही बंदरगाहों पर माल को लोड और अनलोड किया। लंदन, कार्डिफ, लिवरपूल और साउथ शील्ड्स के बंदरगाहों के आस-पास रहने वाले मर्जेंट सीमेन ने यह सुनिश्चित करने के लिए काम किया कि ब्रिटेन को आपूर्ति लाइनें खुली रहें। उन्होंने अपने सफेद समकक्षों की तुलना में कम वेतन के लिए अत्याचारी परिस्थितियों में काम किया।

युद्ध से संबंधित ब्रिटिश करों ने आगे चलकर भारत की गरीबी से पीड़ित आबादी पर एक बोझ डाला। भारतीयों ने न केवल युद्ध लड़ा, बल्कि इसका वित्त पोषण भी किया। प्रसिद्ध सैन्य इतिहासकार श्रीनाथ राघवन लिखते हैं कि 1942-43 तक, भारत – युद्ध के प्रति ब्रिटेन से अधिक भुगतान कर रहा था। ब्रिटेन के साथ एक लेनदार से देनदार के रूप में उभरा। ब्रिटेन पर भारत का 1.3 बिलियन पाउण्ड युद्ध के अंत तक बकाया था। (इंडियाज वारः द मेकिंग ऑफ मॉर्डन साउथ एशिया : 1939-1945)

द्वितीय विश्व युद्ध का भारत पर व्यापक प्रभाव पड़ा। इसने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को बहुत बढ़ा दिया। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में लाखों लोगों ने भाग लिया। नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने भारतीय राष्ट्रीय सेना (आईएनए) को खड़ा किया, जिसमें दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय सैनिकों और जापानी युद्ध के कैदी शामिल थे। भारत में ब्रिटिश शासन से लड़ने और उसे उखाड़ फेंकने के लिए, नेता जी ने अपने मिशन के लिए जापानी मदद माँगी। आई एन ए और जापानी सेनाएँ आगे बढ़ीं, लेकिन नार्थ-ईस्ट में इम्फाल और कोहिमा में ब्रिटिश सेना द्वारा रोक दी गई। युद्ध के अन्य परिणाम थे, द्वितीय विश्व युद्ध ने एक पेशेवर और सम्माननीय भारतीय सशस्त्र बलों का उत्पादन किया। युद्ध सामग्री के उत्पादन और आपूर्ति के लिए स्थापित किए गए सैकड़ों नए कारखानों ने भारत के विनिर्माण क्षेत्र की नींव रखी। व्यापार मंडल के कई लोगों ने भारी मुनाफा कमाया और आजादी के बाद औद्योगिक उद्यमी बन गए। युद्ध के बाद महाशक्तियों ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि भारत एशियाई सुरक्षा की धुरी है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में एक स्थायी सीट के लिए 1946 में तर्क देते हुए, जवाहरलाल नेहरू ने कहा, 'यह भारत है जो किसी भी अन्य देश की तुलना में इन क्षेत्रों की रक्षा और सुरक्षा में अधिक महत्व रखता है।

6.6 महाशक्तियों का उद्‌भव

महाशक्ति की अवधारणा द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ही विकसित हुई जब दो पूर्ववर्ती बड़ी शक्तियाँ, संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ अन्य राज्यों के मन और कार्यों को अपनी शक्ति द्वारा प्रभावित करने के संबंध में काफ़ी आगे निकल गई। द्वितीय विश्व युद्ध की पूर्व संध्या पर, ब्रिटिश साम्राज्य, फ्रांस, इटली एवं जापान मान्यता प्राप्त बड़ी शक्तियों में से थी। जब युद्ध खत्म हुआ तो न केवल जर्मनी बल्कि इटली और जापान भी हार गया। पराजित देश राजनीतिक रूप से महत्त्वहीन और आर्थिक रूप से कमजोर हो गए। विजेताओं के बीच, ब्रिटेन इतना कमजोर हो गया था कि 1947 तक साम्यवाद के खिलाफ अपनी रक्षा के लिए ग्रीस और तुर्की में भी अपनी सेना को बनाए रखने में असमर्थ था। ब्रिटिश साम्राज्य कायम नहीं रह सका। 1947 में भारत के स्वतंत्र होने के बाद, गैर-उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया में तेजी आई। ब्रिटेन को अभी भी एक बड़ी शक्ति के रूप में मान्यता दी गई थी और नवगठित यू.एन. सुरक्षा परिषद् में एक स्थायी सीट पर उसने कब्जा कर लिया था, लेकिन इसकी ताकत काफी कम हो गई थी। दूसरा मोर्चा खोले जाने तक फ्रांस जर्मन कब्जे का शिकार हो चुका था और अगस्त, 1944 में इसे आजाद कर दिया गया था। हालांकि फ्रांस विजयी होकर उभरा, एवं उसे सुरक्षा परिषद् में एक स्थायी सीट दी गई, फिर भी युद्ध के बाद कई वर्षों तक वह एक शक्तिशाली राष्ट्र होने से बहुत दूर था। इसने केवल दो प्रमुख शक्तियों यानी संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ को छोड़ दिया, जिन्होंने प्रभावशाली सैन्य शक्ति और राजनीतिक स्थिति हासिल की। इस प्रकार, द्वितीय विश्व युद्ध का एक महत्त्वपूर्ण परिणाम महाशक्तियों के रूप में इन दो विजेताओं का उदय हुआ। ब्रिटेन, फ्रांस और चीन के परमाणु शक्ति बनने के बाद भी वे अमेरिका और यूएसएसआर की महाशक्ति स्थिति को चुनौती नहीं दे सकते थे।

6.6.1 संयुक्त राज्य अमेरिका परमाणु शक्ति बन गया

युद्ध के अंत में सिर्फ एक देश था जिसके पास वह क्षमता थी जो किसी अन्य राज्य के पास नहीं थी। जुलाई 1945 में, अमेरिकियों ने प्रयोगात्मक परमाणु विस्फोट किया,

मानव जाति के इतिहास में पहला परमाणु उपकरण। अगस्त में, उन्होंने हिरोशिमा और नागासाकी में दो परमाणु बम गिराए, जिसने जापान के प्रतिरोध को तोड़ दिया और बिना शर्त आत्मसमर्पण कराया। विश्व हैरान था और सोवियत संघ को घृणा थी क्योंकि जब दोनों युद्ध में सहयोगी थे, तब भी अमेरिका ने इस तथ्य का कोई संकेत नहीं दिया था कि वह एक परमाणु बम विकसित कर रहा था। यहाँ तक कि जब अमेरिका ने जापान में परमाणु बम का उपयोग करने का फैसला किया, तो अन्य मित्र राष्ट्रों को इसके वास्तविक उपयोग तक अंधेरे में रखा गया।

अपने परमाणु हथियारों के अलावा, अमेरिका को महाशक्ति बनने में जो मदद मिली, वह तथ्य यह था कि युद्ध की अवधि में उसके क्षेत्र पर कभी कोई लड़ाई नहीं हुई। पर्ल हार्बर के बाद, अमेरिकी एक अभूतपूर्व युद्ध में लगे हुए थे, लेकिन नागरिक जीवन और संपत्ति को अछूता छोड़ दिया गया था। इसने अमेरिकियों को एक अतिरिक्त लाभ दिया क्योंकि युद्ध में उसके अन्य मित्र राष्ट्रों को भारी नागरिक नुकसान भी उठाना पड़ा। ब्रिटेन पर भारी बमबारी की गई, चार साल तक फ्रांस पर कब्जा रहा और सोवियत संघ को जर्मन आक्रमण का निशाना बनाया गया जब तक कि उसके खिलाफ दूसरा मोर्चा नहीं खोल दिया गया।

6.6.2 सोवियत संघ की संयुक्त राज्य अमेरिका को चुनौती

सोवियत संघ का शक्ति आधार संयुक्त राज्य अमेरिका से तुलना लायक नहीं था। यूएसएसआर ने पोलैंड और कई अन्य पूर्वी यूरोपीय देशों में साम्यवादी शासन स्थापित करने में सफलता हासिल की थी, जिसे नाज़ी नियंत्रण से उसकी सेना ने मुक्त कराया था। लेकिन 1949 में इस तरह के पहले उपकरण के परीक्षण तक इसके पास परमाणु हथियार नहीं थे। युद्ध के दौरान यूएसएसआर को भारी नुकसान हुआ था। बड़ी संख्या में न केवल इसके सैनिक मारे गए और घायल हुए, बल्कि इससे नागरिक नुकसान भी हुआ और औद्योगिक और भौतिक बुनियादी ढाँचे का विनाश भी हुआ। 1949 में सोवियत संघ एक परमाणु शक्ति बन गया; हालांकि 1953 तक अमेरिका ने इनकी डिलीवरी प्रणाली जैसे क्षेत्रों में स्पष्ट श्रेष्ठता बनाए रखी। लेकिन, एक बार यूएसएसआर एक परमाणु हथियार राज्य बन गया, इसने विमान और मिसाइल जैसे डिलीवरी प्रणाली को विकसित करना शुरू कर दिया। यह इसकी बढ़ती सैन्य क्षमता, अंतरिक्ष और अन्य विभागों में उपलब्धियों और आर्थिक विकास और सामाजिक न्याय के एक वैकल्पिक सामाजिक मॉडल के रूप में इसके आकर्षण के कारण था कि उसकी स्थिति में सुधार हुआ और उसे महाशक्ति के रूप में मान्यता मिली।

द्वितीय विश्व युद्ध के तुरंत बाद, सोवियत संघ ने संयुक्त राज्य अमेरिका से विज्ञान और प्रौद्योगिकी में आगे निकलने के लिए पूरा प्रयास किया था। इसने सैन्य तकनीक में अमेरिकियों को पकड़ने के लिए युद्ध के बाद के पुनर्निर्माण सहित सब कार्यों को गौण कर दिया। एक बार जब सोवियत संघ ने अपनी परमाणु शक्ति विकसित की, तो यह संयुक्त राज्य अमेरिका का प्रतिद्वन्द्वी बन गया और दोनों को महाशक्ति के रूप में मान्यता दी गई। दोनों ने दूसरे विश्व युद्ध के बाद दो अलग-अलग शक्ति गुटों का नेतृत्व किया। संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ ने सीधे एक-दूसरे का सामना नहीं किया, लेकिन अक्सर दुनिया के विभिन्न हिस्सों में उनके प्रतिनिधि शासन और सहयोगियों के माध्यम से संघर्षरत रहे। लुंडेस्टड के अनुसार, 'वे अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र के

दो मुख्य कर्त्ता थे, भौगोलिक दूरी उन्हें अलग नहीं कर पाई, लेकिन राजनीतिक दूरी जल्द ही बहुत अधिक बढ़ जाने वाली थी।

बोध प्रश्न 2

नोट : i) आपके उत्तर के लिए नीचे दिये गए स्थान का उपयोग करें।

ii) अपने उत्तर के लिए सुझावों के लिए इकाई का अंतिम भाग देखें।

1) द्वितीय विश्व युद्ध ने भारत को कैसे प्रभावित किया?

.....

.....

.....

.....

.....

6.7 सारांश

द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ गया जब 1 सितंबर, 1939 को नाजी जर्मनी ने पोलैंड पर हमला किया। दो दिन बाद, इंग्लैंड और फ्रांस ने जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा की। इससे पहले दो कट्टर प्रतिद्वंद्वियों, जर्मनी और सोवियत संघ ने एक गैर-आक्रामकता संधि की थी। द्वितीय विश्व युद्ध का प्रमुख कारण वर्साय की संधि थी, जिसने जर्मनी को अपमानित किया और जर्मनों द्वारा इसे एक फरमान और अन्याय के रूप में माना गया, सामूहिक सुरक्षा प्रणाली और निरस्त्रीकरण की विफलता जिसे युद्ध से बचने की सुनिश्चित गारंटी माना जाता था। विश्व आर्थिक संकट जिसने जापान जैसे देशों में सैन्य और आक्रामक कार्यों को प्रोत्साहित किया, रोम बर्लिन-टोक्यो धुरी का निर्माण, मौजूदा विश्व व्यवस्था को नष्ट करने के लिए निर्धारित तीन फासीवादी शक्तियों का गठबंधन, अल्पसंख्यकों के असंतोष की समस्या, तुष्टिकरण और नाजी तानाशाहों पर जीत के लिए ब्रिटेन द्वारा समर्थित तुष्टिकरण की नीति और फ्रांस द्वारा समर्थित, और अंत में पोलैंड पर जर्मन हमला जो युद्ध का तत्काल कारण बन गया।

युद्ध के बाद शांति के प्रयास बहुत मुश्किल काम साबित हुए। मित्र राष्ट्रों ने जर्मनी के साथ शांति संधि करने के लिए पॉट्सडैम सम्मेलन (1945) आयोजित किया था। युद्ध के तुरंत बाद किसी भी पराजित देश के साथ कोई भी शांति संधि संपन्न नहीं हो सकी। लेकिन लंबे समय तक राजनयिक गतिविधियों के बाद इटली, रूमानिया, हंगरी और फिनलैंड के साथ शांति संधियों का समापन हुआ और बाद में ऑस्ट्रिया और जापान के साथ। कई वर्षों तक जर्मनी पर कब्जा रहा और स्वाभाविक रूप से कई वर्षों तक कोई शांति संधि संपन्न नहीं हो सकी। युद्ध का सबसे महत्त्वपूर्ण परिणाम जर्मनी का चार कब्जे वाले क्षेत्रों में विभाजन था। बाद में तीन पश्चिमी क्षेत्र एक संप्रभु देश बन गए और पूर्व में एक सोवियत समर्थित सरकार की स्थापना हुई। जैसा कि पूर्वी यूरोपीय देशों को सोवियत सेना द्वारा मुक्त किया गया था, उन्हें कम्युनिस्ट सरकारें दी गई थीं। शीत युद्ध दो शक्ति गुटों के बीच शुरू हुआ जिसमें विश्व विभाजित हुआ।

6.8 संदर्भ

अलब्रक्ट केरी. (2010). *ए डिप्लोमैटिक हिस्ट्री ऑफ यूरोप सिंस दी क्रांग्रेस ऑफ विएना,* न्यूयार्क, मार्पर और रो.

एँटनी, बीवर. (2012). *दि सेकंड वर्ल्ड वारॅर.* लंदन. द बैक वे पब्लिकेशन.

हॉकिंग, ब्रायन एंड माइकल स्मिथ. (2014). *वर्ल्ड पॉलिटिक्स : एन इंट्रोडक्शन टू इंटरनेशनल रिलेशंस.* लंदन : रूटलेज.

जॉनसन, पॉल. (2016). *ए हिस्ट्र ऑफ मॉडर्न वर्ल्ड फ्रॉम 1917 टू द 1980.* लंदन : वीडेनफील्ड और निकोलसन.

लैंगसम, डब्ल्यू. सी. और मिशल. (1971). *द वर्ल्ड सिंस 1919.* न्यूयार्क : द मैकमिलन.

नेस्टर, विलियम, आर. (2010). *ग्लोबलाइनेशन, वार एंड पीस इन द ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी.* पालग्रेव : मैकमिलन.

6.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) युद्ध का तत्कालीक कारण जर्मनी का पौलेंड पर हमला था

2) सामूहिक सुरक्षा लीग ऑफ नेशंस के प्रतिज्ञा पत्र में दिया गया था। आक्रमण के शिकार देश की सहायता का प्रावधान, आक्रमणकारी पर सामूहिक कार्यवाही जो कि आर्थिक प्रतिबंध या सैन्य कार्यवाही या दोनों हो सकते थे।

बोध प्रश्न 2

1) युद्ध ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम को ऊर्जा दी, भारत छोड़ों आंदोलन में लाखों ने भाग लिया, नेता जी सुभाष चंद्र बोस आई. एन. ए. का गठन किया, भारत में विनिर्माण को बढ़ावा मिला, बड़ी शक्तियों को अहसास हुआ कि भारत एशिया की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण धुरी है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY